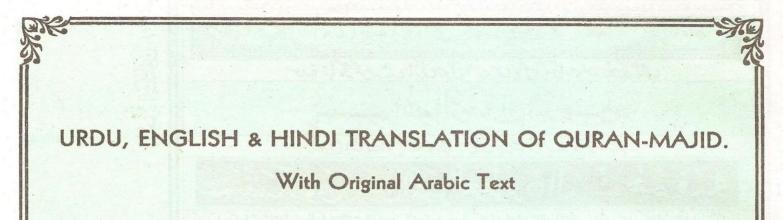
TASHREEHUL QURAN PARA 30

URDU, ENGLISH & HINDI TRANSLATION OF QURAN – MAJID (WITH ORIGINAL ARABIC TEXT)

BY: PADMA BHUSHAN MAULANA ABDUL KARIM PAREKH SAHEB, NAGPUR.



Para-30 (पारा-30)

उर्दू, अंग्रेज़ी और हिंदी भाषा में पवित्र कुरआन का अनुवाद मूल अरबी ग्रंथ के साथ

اردو، انگریزی اور ہندی ترجمہ قرآن مجید اصل عربی متن کے ساتھ

(٤٨) سُورَةُ النَّبَا سورة نياكة كرمه مين نازل بوقى اس مين جالين آيات اور دوروع بين بشرم الله الرَّحْمِن الرَّحِ بَارِ مشروع الشرك نام سے جو بڑا مہر بان نہایت رم كرنے والا ہے (F) 70 2000 100 100 (F) اختلاف کر رہے ہیں (۷) کچھ پرنہیں جم بہت جلدان کومعلوم ہواما ہے (۴) مجھ دیر تو ہر گؤزنہیں ہوگی عنقرب ان کومعلوم ہوگائے گا (۵) کیا نے نہیں بنایا ﴿ زمین میں بہاڑول کے لنگر کم نے ڈال دینے ﴿ اور تم کو جوڑے جوڑے کم نے بنا نے (1) اور تھانے لئے نیند کوآرام کاسب ہم فے بنایا ﴿ اور رات کوہم فے لباس بنا یا 🕦 اور تھا اے لئے دن کو روزی کملنے کا ذریع بنایا (۱۱) اور ہم نے تم پرسات مطبوط آسمان بنادیتے (۱۱) اور تھالے لئے ہم نے جًاوَهَاجًا ﴿ وَانزلنامِن المعصرين مَاءً نَ بعر إدروشي والاجراع بناديا اورتمهارے لئے ہم نے بدليوں كو يور كر بحردورياني برك ديا ا فتھانے کے زبی کال کو ناج اور بزی کے در لگائے ﴿ اور تھنا فات اگائے ﴿ اِسْ مِثْكَ فِصلا كے دن كاوقت طے ہوچکا ہے 🕟 یہ وہ دن ہو گا کرصوری بھونک ماری جائے گاورتم فرج کی فوج کل آدیے 🕦 اور فِنْعَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتُ أَبُوابًا ﴿ وَسُبِّرِتِ الْجِبَ آسان کہ اے دیاجاتے گاتواس کے دروانے ی وروانے ہوجائیں گے 📵 اور بہاڑ چلاتے جائیں گے تووہ رہت کا بھر کا بن عائیں کے 🛈 بے شک جہتم گھات یں ملی ہے 🗇 شریحیلاتے والول کا وہی ٹھکانا ہے 🖫 لانفق فهابردا ولاشر ولا بالمت برائد بالمائي على ال وهناري بيز كا ذائقة اوربياس بجاني في كون بيز بمي بين الله الله الله المائية بم

78. नबा

सूरह नबा मक्का में उतारी गई इस में चालीस (40) आयतें और दो (2) रूकूअ़ हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान

बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. किस बात की पूछ ताछ और सवाल कर रहे हैं ?
- 2. उस बड़ी ख़बर के बारे में उनका सवाल है।
- 3. जिसके बारे में यह लोग मतभेद कर रहे हैं।
- 4. कुछ देर नहीं है बहुत जल्द इनको मालूम हुआ जाता है।
- 5. फिर देर तो हर्गिज़ नहीं होगी बहुत क्रीब में ही इनको मालूम हो जाएगा।
- 6.क्या ज़मीन को फ़र्श हम ने नहीं बनाया ?
- 7.ज़मीन में पहाड़ों के लंगर हमने डाल दिए।
- 8. और तुमको जोड़े जोड़े हमने बनाए।
- 9.और तुम्हारे लिए नीन्द को आराम का सबब हमने बनाया।
- 10.और रात को हमने लिबास बनाया।
- 11.और तुम्हारे लिए दिन को रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया।
- 12.और हमने तुम पर सात मज़बूत आसमान बना दिए।
- 13.और तुम्हारे लिए हमने भरपूर रौशनी वाला चिराग़ (सूरज) बना दिया।
- 14.और तुम्हारे लिए हमने बदलियों को निचोड़ कर भरपूर पानी बरसा दिया।
- 15.इस से हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाल कर अनाज और सब्ज़ी के ढेर लगा दिए।
- 16.और घने बाग़ात उगा दिए।
- 17. बेशक फ़ैसले के दिन का वक़्त तय हो चुका है।
- 18.यह वह दिन होगा कि "सूर" में फूंक मार दी जाएगी और तुम फ़ौज की फ़ौज निकल आओगे।
- 19.और आसमान खोल दिया जाएगा तो उसके दरवाज़े ही दरवाजे हो जाएंगे।
- 20.और पहाड़ चलाए जाएंगे तो वह रेत का भुरका बन जाएंगे।
- 21.बेशक जहन्नम घात में लगी है।
- 22.शरारत फैलानेवालों का वही ठिकाना है।
- 23.जहन्नम में यह लोग बेमुद्दत पड़े ही रहेंगे।
- 24. उनको ठंडी चीज़ का ज़ायका और प्यास बुझाने को पीने की कोई चीज़ कभी नहीं मिलेगी।

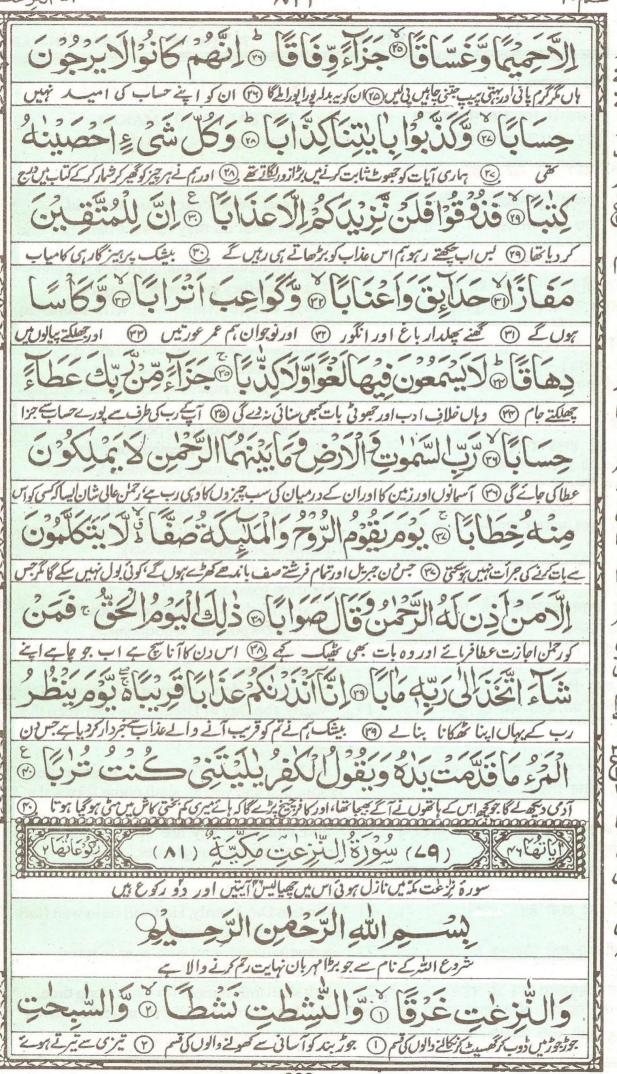
78. SURAH: AN-NABA

REVEALED AT MAKKA
(CONTAINS) 40 AYATS AND 2 RUKUS.

In the name of ALLAH,

- 1. About what do they (most often) ask one another?
- 2. About the awesome tiding (of Resurrection),
- 3. On which they (so utterly) disagree?
- 4. Nay, but in time they will come to understand (it)!
- 5. And once again: Nay, but in time they will come to understand (it)!
- 6. Have WE not made the earth a wide restingplace (for you),
- 7. and the mountains (its) pegs?
- 8. And have WE not created you in pairs?
- 9. and WE have made your sleep for rest?
- 10. and made the night a covering?
- 11. and made the day to seek livelihood!
- 12. And WE have built above you seven firmaments as (strong heavens);
- 13. and have placed (therein the sun) a lamp, full of blazing splendour.
- 14. And from the wind-driven clouds WE send down waters pouring in abundance,
- 15. So that WE might bring forth thereby grain, and vegetables,
- 16. and gardens dense of luxurious growth.
- 17. Verily, the Day of Distinction (between the true and the false) has indeed its appointed time:
- 18. the Day when the Trumpet (of Resurrection) is sounded and you all shall come forward in multitudes;
- 19. and when the sky are opened and shall become (as wide flung) gates;
- 20. and when the mountains are made to vanish as if they had been a mirage.
- 21. (on that Day,) verily, Hell will lie in wait (for those who deny the truth).
- 22. a destination for all who used to transgress the bounds of what is right.
- 23. In it shall they remain for (ages) long time.
- 24. Neither coolness shall they taste therein nor any (thirst-quenching) drink.

exix 1 months نيس هي، خودكو احساب مانخ تحاس ليجوس ان كرناعات كرد الح ، دوسرى ما نب ال كو ہماری آبات سے مجھانے کی جب بميكسى نے كوشش كى تو ہاتھ دھوكم اس كيد يحرا درق ع كو فيمثلاني من الرسي وفي كا زورلگا دیا آخرصاب کے دانجیتم من اامدى مايرك-فسك يدنه وكاكرعذاب محى لمكا ہواا بنی ایک ہی مالت بررسے بلاامي متناعذاب سياسك بعداس سے زیادہ بس عذاب پر عذاب اورسكسل عذاب كابرطهنا جادى رب كا-الشريات-وس يدون ب قنامت كالسر كتعظيم س تمام لما يحصف مان مع تعرف مرول کے اوران كسردارجريل علالتكاجىكا لقب روح الامن سے اورتمام ذی ارواح مرکسی کوبات کرنے ی سکت نه بهوگی-هرایک برانش كاجلال اورمبيت طاري بهوگ كسى خلوت كى سفارىش بى كونى يحدول بى نبس يائے گا، كام كرادينااور فيطالينا تودوري الشا ہے۔ البنتر رحمٰن این مہرانی سيصيل عامانت عطا فرائة ليكن جب بهي كواجازت كام تبرط تواس كالحسك بولنا فروری ہے یہ نرقبول ہوگاکسی کے بارے میں اسی کھ عرضی بیش كردي جورحن كوناليسنديو-والالمام يتمناكر عكاكاش ين مظي مو گيا مو تاكه آج اينا يه صاب مح دیکھنا نہ برطیا۔



- 25.हाँ मगर गर्म पानी और बहती पीप जितनी चाहें पी लें।
- 26. उनको यह बदला पूरा पूरा मिलेगा।
- 27. उनको अपने हिसाब की उम्मीद नहीं थी।
- 28.हमारी आयतों को झूठ साबित करने में बड़ा ज़ोर लगाते थे।
- 29.और हमने हर चीज़ को घेर कर गिनती करके किताब में दर्ज कर दिया था।
- 30.बस अब चखते रहो हम इस अज़ाब को बढ़ाते ही रहेंगे।
- 31.बेशक परहेज़गार ही कामयाब होंगे।
- 32.घने फलदार बाग् और अंगूर।
- 33.और नौजवान हम उम्र औरतें।
- 34.और झलकते प्यालों में छलकते जाम।
- 35.वहाँ अदब के खिलाफ़ और झूठी बात कभी सुनाई न देगी।
- 36. आपके रब की तरफ से पूरे हिसाब से बदला दिया जाएगा।
- 37. आसमानों और ज़मीन का और इनके बीच की सब चीज़ों का वही 'रब' है, रहमान आलीशान ऐसा कि किसी को उससे बात करने की हिम्मत नहीं हो सकती।
- 38. जिस दिन जिब्रील (अलै.) और तमाम फरिश्ते कतार बांधे खड़े होंगे, कोई बोल नहीं सकेगा मगर जिसको रहमान इजाज़त दे और वह बात भी ठीक कहे।
- 39. उस. दिन का आना सच है अब जो चाहे अपने 'रब' के यहाँ अपना ठिकाना बना ले।
- 40. बेशक हमने तुमको क्रीब आने वाले अज़ाब से ख़बरदार कर दिया है। जिस दिन आदमी देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था और इन्कारी चीख़ पड़ेगा कि हाय मेरी कमबख़्ती काश मैं मिट्टी हो गया होता।

79. नाजिआत

सूरह नाज़िआ़त मक्का में उतारी गई इस में छियालीस (46) आयतें और दो (2) रूकूअ़ हैं। "शुक्त अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

1. जोड़-जोड़ में डूब कर घसीट कर निकालने वालों की क्सम।

2. जोड़ बन्द को आसानी से खोलने वालों की क्सम।

- 25. Only a boiling fluid and a fluid-dark, intensely cold-
- 26. a meet requital- proportioned- (as per their sins)!
- 27. Behold, they were not expecting to be called to account,
- 28. having given the lie to OUR messages one and all:
- 29. but WE have placed on record every single thing (of what they did).
- 30. (And so WE shall say:) "Taste, then, (the fruit of your evil doings), for now WE shall bestow on you nothing but more and more suffering!"

 1 30 1
- 31. (But,) Verily, for those who were conscious of ALLAH, there is supreme achievement in store.
- 32. luxuriant gardens and vineyards,
- 33. and splendid companions well matched,
- 34. and a cup (of happiness) over flowing.
- 35. No empty talk will they hear in that (Paradise), nor any lie.
- 36. (All this will be) a reward from your Sustainer, a gift in accordance with (HIS Own) reckoning,-
- 37. (a reward from) the Sustainer of the heavens and the earth and all that is between them, the Most Gracious! (And) none shall have it in their power to raise their voices unto HIM-
- 38. on the Day when all (human) souls and all the angels will stand up in ranks: none will speak except he to whom the Most Gracious will have given permission; and (he) will say (Only) what is right.
- 39. That will be the Day of Ultimate Truth: whoever wills, then, let him take the path that leads towards his Sustainer!
- 40. Verily, WE have warned you of suffering near at hand- (suffering) on the Day when man shall (clearly) see (the deeds) what his hands have sent ahead, and when he who has denied the truth shall say, "Oh, woe unto me! Would that I

were mere dust!"

2 10 2

79. SURAH: AN-NAZI'AAT

REVEALED AT MAKKA
(CONTAINS) 46 AYATS AND 2 RUKUS.

In the name of ALLAH,

- 1. By the (angels) who dive in and pull out (the souls of the wicked) with violence.
- 2. By those who gently draw out (the souls of the blessed);

منزل٤ هان آیاتین فرشتول كياع اوصان بتائے كتے بن ، كافرى جان على التي وقت ن کی روح بدن میں تھیں پھرتی بے ذشتے اندر گئس کر سرجگہ سے لعسدف كر ابرتكالية بس اس س منے والول کوبہت ہی سخت کلیف ہوتی ہے اور ایسان والے کی روح بہت ى سىل اورآسان طريقے سے بكالة بي جيسے بندكھول يا يوان روحول كول ارتبية اويرى طف أرق بوخالي ماتني صب ہوا میں پرندے برسکون می ارقتے ہیں، الشركا فكم بحالاتے : عا كوايك سے دوسرا فرسطنداكے र द्वीधी १०० १ اورالله كيركم كواليماطرح على سمجه کواس کی منشار کے مطابق آ عكم كونا فذكرتي -مل یہ بات مشرک اوگوں نے مذاق أرانے کو کہی کدایس واری رونے سے بولے تھاوے کھانے ہوں گے نے وارث ترے اکھ کرا ناحصہ مانگنے لگیں گے لیکن قرآن نے توزندہ ہونے کی بات آخرت کے لئے کہی تھی دنیا یں بھر دوسری بارآنے کی بات قرآن نے نہیں تائی لیکن مخالفت يس اندهم بوكرجو جا بااعتراض كرديا، النے بے وقوف ہونے كاخودى نبوت يش كردياكا كلا جس بات کادعوی بی نمیں کو با ہے اس برالیسی دلیل کیوں سطا دى جس كاكونى جود نيس -

سَبْعًا ﴿فَالسِّبِقْتِ سَبْقًا ﴿فَالْمُكَ بِرَتِ أَمْرًا ﴿ يَوْمَ الرفنے والوں کی شم 🕀 سخم پر دوڑ کر آگے بڑھنے والوں کی شم 🕝 ہر سخم پر عمل کرتے ہیں تدبیر سے 🔞 جس کن الیا جفة ﴿ تَبْعُهَا الرَّادِفَةُ ۞ قُلُونَ کانب رہے ہوں کے 🕜 آنکھیں ہیب سے فوفناک ہوجائیں گ و نیایں کمے جارہے ہیں ءَانَّالَمْ وُدُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿ وَاذَالُتَّاعِظَامًا نَخِرَةً ﴿ له کیا اُلط یا وّں ہماری والیس ہوگ 🕦 کیاجب، محصوصی بڑی کاچورابن میکیہوں گے تبجی ۽ 🕦 ہتے ہیں کرتب توالیں والیسی میں بہت ہی نفضان ہے اور وہ توبس ایک بہت ہی ہیبت تاک آواز ہو گی ا فَاذَاهُمْ بِالسَّاهِمَ وَ ﴿ هَلُ آتُنكَ حَدِيثِنُ مُوسِ ١ بس کی کے میدان تشرس سے سبتے ہوائیں کے آس کیا تم کو موسی کا مال معدوم ہواہے ؟ إذ نادية رَبَّهُ بِالْوَادِ المُقْدَسِ طُوِّكِ ﴿ إِذْ هُبُ إِلَّى جب کہ ان کے رب نے طویٰ نام کی مقدّس وا دی میں ان کو آواز دی 🕦 محم فرایا کہ موسیٰ تم فرعون کی طرف جاؤوہ بہت ہی سٹرارت پر اتر آیا ہے 🕟 اس سے کھو کہ یا توبین کرے کا کہتھے یاک صاف ہونے کی طرف رہمائی کھے 🕟 اور تھے ترے رب کاطف داہ بتاؤں کاس کے خوصے تیراجی پھی جامے ﴿ بس موسلی نے فرعون کوبڑی سے بڑی نشانی رکھانی پھر بھی اس نے جھلایا اور گناہ پر ڈٹار او کسیر پیٹے بھیر کر بھا گااور دلیری بتلنے لگا 🕆 بڑا جمع لگایا اور من ادی کرادی 👚 جیخ کر اولاً متھارا برارب تویں ہول 🐨 پھرالشرنے اسے دنیا اور آخرت کے عرب ناک عذا ب وَالْأُولِ قَ إِنَّ فِي ذِلِكَ لَعِبْرُةً لِمَنْ میں دھر لیا اللہ کا تون کو اللہ کا توف ہواس کے لئے اس واقع میں بڑی عرت ہے ءَانْتُمُ الشُّدُخُلُقًا آمِ السَّمَاءُ وابنها ﴿ رَفَّعُ سَا م کو پیدا کرنا برطی بات ہے یا آسمان کو جے اللہ نے بن یا 🕝 اس کی جھت کو اونجا کیا اور

- 3. तेज़ी से तैरते हुए उड़ने वालों की क्सम।
- 4. हुक्म पर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की कसम
- 5. हर हुक्म पर काम करते हैं तदबीर से।
- 6. जिस दिन ऐसा भूंचाल आयेगा कि हर चीज़ कांपने लगेगी।
- 7. उसके पीछे लगातार झटके आते रहेंगे।
- 8. उस दिन दिल धड़-धड़ कांप रहे होंगे।
- 9. आँखें हैबत से ख़ौफ़नाक हो जायेंगी।
- 10. दुनिया में कहे जा रहे हैं कि क्या उल्टे पाँव हमारी वापसी होगी ?
- 11. क्या जब हम खोखली हड्डी का चूरा बन चुके होंगे तब भी ?
- 12. कहते हैं कि तब तो ऐसी वापसी में बहुत ही नुक्सान है।
- 13. वह तो बस एक बहुत ही डरावनी आवाज़ होगी।
- 14. बस यकायक हश्च के मैदान में सब के सब इकट्ठा हो जायेंगे।
- 15. क्या तुमको मूसा का हाल मालूम हुआ है ?
- 16. जब उनके रब ने 'तुवा' नाम की पवित्र घाटी में उनको आवाज दी।
- 17. हुक्म दिया कि मूसा तुम फ़िरऔन की तरफ जाओ वह बहुत ही शरारत पर उतर आया है।
- 18. उससे कहो कि क्या तू पसंद करेगा कि तुझे पाक साफ होने की तरफ रहनुमाई मिले।
- 19. और तुझे तेरे रब की तरफ राह बताऊं कि उसके ख़ौफ से तेरा जी पिघल जाये।
- 20. बस मूसा ने फ़िरऔन को बड़ी से बड़ी निशानी दिखाई।
- 21. फिर भी उसने झुठलाया और गुनाह पर डटा रहा।
- 22. फिर पीठ फेर कर भागा और दिलेरी बताने लगा।
- 23. फिर (लोगों को) इकड्ठा किया और एलान कर दिया।
- 24. चीख़ कर बोला तुम्हारा बड़ा रब तो मैं हूँ।
- 25. फिर अल्लाह ने उसे दुनिया और आख़िरत के इबरतनाक अज़ाब में धर लिया।
- 26. जिसको अल्लाह का खौफ़ हो उसके लिए इस घटना में बड़ी नसीहत है।
- 27. क्या तुमको पैदा करना बड़ी बात है या आसमान को जिसे अल्लाह ने बनाया ?

- 3. and float (through space) with floating serene,
- 4. and yet overtake (one another) with swift overtaking:
- 5. and thus they fulfil the (Creator's) commands!
- 6. (Hence, think of) the Day when a violent convulsion will convulse (the world),
- 7. to be followed by further (convulsion)!
- 8. On that Day will (men's) hearts be throbbing;
- 9. (and) their eyes down cast.
- 10. (And yet,) some say, "What! Are we indeed to be restored to our former state"-
- 11. "even though we may have become (a heap of) crumbling bones?"
- 12. (And) they add, "That, then, would be a return with loss!"
- 13. (but) then, that (Last Hour) will be (upon them all of a sudden, as if it were) but single shout-
- 14. and then, lo, they will be fully awakened (to the truth)!
- 15. Has the story of Moosa ever come within your knowledge?
- 16. Lo, his Sustainer called out to him in the sacred valley of 'Tuwa'!
- 17. "Go unto Firaun- for, verily, he has transgressed all bounds of what is right"-
- 18. "and say (unto him), 'Are you desirous of attaining to purity?"
- 19. "(If so,) then I shall guide you towards (a cognition of) your Sustainer, so that (hence forth) you shall stand in awe (of HIM)."
- 20. And there upon he (went to Firaun and) made him aware of the great sign (of ALLAH).
- 21. But (Firaun) gave him the lie and rebelliously rejected (all guidance),
- 22. and brusquely, turned his back (on Moosa); and turned away striving hardly,
- 23. and then he gathered (his chiefs), and proclaimed (unto his people),-
- 24. Saying, "I am your Lord all highest!"
- 25. And there upon ALLAH took him to task, (and made him) a warning example in the life to come, as well as in this world.
- 26. In this behold, there is a lesson indeed for all who stand in awe (of ALLAH). 1 26 3
- 27. (O'men!) Are you more difficult to create than the heaven which HE has built?

وس سے بے جرای ، مرف الشرکو اس سے بے جرای ، مرف الشرکو معلوم ہے باتی جب قیامت معلوم ہے باتی جب الشرک کے دریعے بیٹر آئے گا، اس کی جرائش کے ذریعے انسانوں کو بتادی اس کے ذریعے کو بال کو بیا کام ہے بال جب ہوگ آؤ کیا جے گا اس سے کام ہے آوسوں کو کیا ہوگا ہوگا ہوگا ۔

ے بناسنوار دیا (۲۸) اورالٹانے رات کواند صاری بنادی اور دن کو دھویے رقش کردیا (۲۶) اس کے بعد زمین کو بچھا خوب جادیا 💮 سامان زندگی تھالے لئے اور تھالے چاریایوں کے لئے ج بس یا در کھنا جب وہ برطی آفت آ وے گ 🕝 اس دن آ دی اپنے کئے کو یا د کرے گا 📵 جہنم سامنے لان جاتے گی جو دیجہ چاہے دیجھ لے 😁 پس جس نے شرارت کی ہوگی 🏵 اور دنیا کی زندگی کا انز قبول رکھا ہوگا 🕾 تب تو أوى ﴿ وَأَمَّا مَنْ خَا بیشک اس کا تھکا نہ جہتم ہو گا 🔞 اورجس کواپنے رب کے سامنے کھڑا ہونے سے ڈریڑ کیا اور اس والله الرَّفْعِن الرَّحِيْدِ شروع الشرك نام سے جو برا الهر بان نهايت رحم كرنے والا ب تقريب آگئة اورتوجرز فرائي 🕦 رجب ايك اتدها ال كه پاكس آيا 🕤 اورتم كو كيا خركه ك

- 28. उसकी छत को ऊँचा किया और उसे बना संवार दिया।
- 29. और अल्लाह ने रात को अंधयारी बना दी और दिन को धूप से रौशन कर दिया।
- 30. इस के बाद ज़मीन को बिछा दिया। (यह भी बड़े कमाल की बात है)
- 31. फिर ज़मीन से उसका पानी और चारा बाहर निकाल दिया।
- 32. और पहाड़ों को ज़मीन पर खूब जमा दिया।
- 33. ज़िन्दगी का सामान तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए।
- 34. बस याद रखना जब वह बड़ी आफत आयेगी।
- 35. उस दिन आदमी अपने किये को याद करेगा।
- 36. 'जहन्नम' सामने लाई जायेगी जो देखना चाहे देख ले।
- 37. बस जिसने शरारत की होगी।
- 38. और दुनिया की ज़िन्दगी का असर क़बूल रखा होगा।
- 39. तब तो बेशक उसका ठिकाना जहन्नम होगा।
- 40. और जिसको अपने 'रब' के सामने खड़ा होने से डर पड़ गया और उसने अपने जी को मनमानी करने से रोक लिया।
- 41. बेशक उसकी जगह 'जन्नत' में खास हो गई।
- 42. आप से पूछते हैं कि कियामत कब होगी ?
- 43. तुम को क्या काम कि वह कब होगी ?
- 44. उसकी जानकारी की आखरी हद तुम्हारे 'रब' की तरफ है।
- 45. तुम तो डर सुनाने वाले हो उस आदमी को जिसे कियामत का खटका लगा हो।
- 46. जब यह लोग कियामत के दिन को देख लेंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा कि दुनिया में एक शाम या एक सुबह से ज़्यादा नहीं रहे थे।

80. अ ब स

सूरह अ ब स मक्का में उतारी गई इस में बयालीस (42) आयतें और एक (1) रूकूअ़ है।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. माथे पर बल आ गये और ध्यान न दिया।
- 2. जब एक अन्धा उनके पास आया।

- 28. High has HE raised its canopy and fashioned it in accrodance with what (perfection) it was meant to be;
- 29. and HE has made dark its night and brought forth its light of day.
- 30. And after that, the earth; wide has HE spread its expanse,
- 31. and has caused its water to come out of it, and its pasture,
- 32. and has made the mountains firm on it:
- 33. (all this) as a means of livelihood for you and your animals.
- 34. And so; when the great, overwhelming event (of Resurrection) comes to pass-
- 35. on that Day man will (clearly) remember all that he strove for- (has ever done)-
- 36. and the blazing Fire (of Hell) will be laid open before all who (are destined to) see it.
- 37. for, unto him who shall have transgressed the bounds of what is right,
- 38. and preferred the life of this world (to the good of his soul),
- 39. that blazing Fire will truly be his ultimate home!
- 40. But unto him who shall have stood in fear of his Sustainer's presence, and held back his inner-self from lower desires,
- 41. Paradise will truly be his ultimate home!
- 42. They will ask you (O Prophet) about the Last Hour: "When will it come to pass?"
- 43. (But) how could you tell anything about it,
- 44. (seeing that) with your sustainer alone rests the beginning and the end (of all knowledge) about it?
- 45. You are but (sent) to warn those who stand in awe of it.
- 46. On the Day when they behold it, (it will seem to them) as if they had tarried (in this world) no longer than one evening or (one night, ending with) its morning!

 2 20 4

80. SURAH: A'BASA

REVEALED AT MAKKA

(CONTAINS) 42 AYATS AND 1 RUKU.

In the name of ALLAH,

- He (The Prophet) frowned and turned away-
- 2. because the blind man approached him (interrupting)!

يَزِكُ ﴿ أَوْبِينَا كُرُ فَنَفَعَهُ النِّهِ كُلِّ النَّهِ كُلِّكُ إِنَّا مَنِ اسْتَغْنَى ﴿ آیا ہو (یا نصبحت پرغور کرتا تواس کونسیت سے نفع ہوتا (جو لا بروا ہی برت ہے (فَأَنْتُ لَهُ تَصِدّى فَوَمَاعَلَيْكَ الدّيزُكُ فَوَامَّامَنَ عِلَا تم اس كى طرف زياره توج كرتے ہو ۞ اگروه ياكيزوراه تبول كھے قتم يركون الزام نبيں ۞ اور جو تھا ہے ياس دور تا يَسْعِ فَ وَهُو يَغِشْهِ فَ فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَقِي أَعَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّ الللَّهُ اللَّهُ اللللّلْمُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّل آتا ہے 🕥 اوروہ اللہ سے ڈرا بھی ج 🛈 توتم اس سے بے رخی کرنے لگے 🛈 ایسا نہروبیشک یہ توا کم تَنْكُرُةُ ﴿ فَمَنْ شَاءَ ذُكُرُهُ ﴿ فَي صُحْفِ مُكُرِّمَ فِي اللَّهِ مَا وَفَوْءَ نصیحت نامہے ال جس کاجی چاہے یا د کرلے ال قابل ادب ورقول ہیں ہے ال جویڑھ اس کا مُّطَهَّرَةٍ ﴿ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ﴿ كَالِمِ بَرَرَةٍ ﴿ قُبِلَ الْا نُد تقام بلند اوره پاک روبائے استعمال اور استان پر التری اور نیک ہیں اللہ کا شکرے انسان پر التری مَا ٱلْفَرَةُ فَي مِنْ آيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ فَ مِنْ تَطْفَةٍ مار ہے (۱ کس چیزے اللہ نے اسے پیدا کیا (۱ ایک ٹیکٹی اوندسے پھراسے ایک فاص اعدازے پرسایا (کھراکس کے اہرا نے کورات اسان کویا جا کھراسے موت کی درقبر من فرادیا (ثُمَّ إِذَا شَآءَ ٱنْشَرُهُ ﴿ كُلَّا لَتَا يَقْضِ مَآ ٱمْرُهُ ﴿ فَالْمِنْدُ پھرجب چائے گا اسے نزور کے اطار کو ااکر وے گا 👚 اسے اللہ کے حکم کی تعمیل نہیں کی جبالے ایسا ہرگز نہیں کرنا چاہتے تھا 👚 انسان کو چاہتے کہ الدِنْسَانُ إلى طَعَامِهِ ﴿ أَنَّا صَبَيْنَا الْمَاءُ صَبًّا ﴿ ثُمَّ شَقَفْتَ این کھانے پر نگاہ ڈالے 🗑 کہم نے یانی برسایا موسلا دھار 🕲 پھرہم نے ذہین کو الله فَانْبُتْنَا فِيهَا حَبًّا فِي وَعِنْبًا وَفَضْبًا فَ جیر کو سے او دیا 🕝 مجرم نے ذین سے اناج اگایا 🏵 انگورادر ہرطرح کامیزی ترکاری اگادی 🗇 اور کھیور آ گھنے گئے ان باغ آ ہرقم کے میوے اور گھاس چارہ کی ا مَّنَاعًا لَكُوْ وَلِا نَعَامِكُمْ ﴿ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿ تمھانے گذربسر کاسامان اور تھانے جائے اور کا کا کھی 😙 بس جب کان بھاڑ دینے والا شور بریا کرنے ال دفیارت) آجائے گی 📆 بَفِرُّ الْمُزُءُ مِنْ آخِبُهِ ﴿ وَأُمِّهِ وَأَبِيْهِ ﴿ وَصَا والن ن بمانی لین بعان کو مجمور مر بعا گئے گئے گا س این ال باب کو مجمور کر بھا گئا (ابن بوی اور بیٹول کو بی

امنزل وس ايموقع يرصورعلي الصّلوة والسّلام كي رطي اوكول كوقرأن مجهارم نظف ايك أدى جوايان كآياتها ابناتهاده الس موقع يرآ محيا وه يوجيف لكا کہ اس آیت ہیں کیا حکم ہے اور فلال آيت بي الشرق كارشاد فرمایا ہے،اس کے معنی کیاہی وغيره اسس يرجناب رسول اكرم صلّ الشرعليه وسلم كوناگوار ﴿ گزراکه پتوایخ آدمی می جب عاسة يوجه لية اس وقت كيا صرورت عى جب كروك انكارى سردارول كوس الشركا کلام شناریا بهون اس برستید المرسلين رحمة للعالمين صلى الشر علیہ وسلم کی بیشانی پرناگواری کے أتنارظا بربوت اورحضرت سيعام صلى الشعليه وللماس نابينات توجر بجركر برك لوكول سامخاب ہوتے اللہ نے اس واقعہ کا تذکرہ یہاں فرمایان آیتوں کے نزول ي بعد محلس نبوي مين جي جي بيزابينا صحابي آتة ونبى الشعليدهم ان کا برطااحرام کرتے اور ستقیا كرتيوت يرفرات موحبًا بِمَنْ عَاشَبَىٰ فِيْ وَيَ راس شخص كا أنامبارك بوجس کسب مرے دب نے مرا ماسيكا) اس عثابت ہوا کہ کو تی شخص نابینا ہواورد^ل بینا ہوتوالٹری ہایت اسے نسيب ع اور ورط عورم سردارا تكھوں والے تو تقلین ان کے دل ابنا تھے انھیں رسو كفيحت عنفع مذبهوا يزابيا صحابي عبدالسرابن أمّ مكتوم عقد واس الترفي انسان كى غذا اس دُھب برسیدای کر اصل غذاانسان کھاتے اوراس کے يت يحلك ما ورك كام آوي

(بقيا كاصفري

- 3. और तुमको क्या ख़बर कि शायद वह सुधरने संवरने आया हो।
- 4. या नसीहत पर गौर (विचार) करता तो उसको नसीहत से फायदा होता।
- 5. जो लापरवाही करता है।

6. तुम उसकी तरफ ज़्यादा ध्यान देते हो।

- 7. अगर वह पाकीज़ा राह कबूल न रखे तो तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं।
- 8. और जो तुम्हारे पास दौड़ता आता है।
- 9. और वह अल्लाह से डरता भी है।
- 10. तो तुम उस से बेरूख़ी करने लगे।
- 11. ऐसा न करो बेशक यह तो एक नसीहत नामा है।
- 12. जिस का जी चाहे याद कर ले।
- 13. अदब के काबिल पन्नों में है।
- 14. जो पढ़ ले उसका दर्जा ऊँचा है और वह पाक हो जाये।
- 15. रूतबे वाले हाथ इसे लिखते हैं।
- 16. जो मोहतरम (सम्माननीय) और नेक हैं।
- 17. नाशुक्रे इन्सान पर अल्लाह की मार है।
- 18. किस चीज़ से अल्लाह ने उसे पैदा किया ?
- 19. एक टपकती बूंद से फिर उसे एक ख़ास अंदाज़े पर बनाया।
- 20. फिर उसके बाहर आने को रास्ता आसान कर दिया।
- 21. फिर उसे मौत दी और कृब्र में दफ़न करा दिया।
- 22. फिर जब चाहेगा उसे ज़िन्दा करके उठाकर खड़ा कर देगा।
- 23. उसने अल्लाह के हुक्म को नहीं माना जबकि उसे ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिए था।
- 24. इंसान को चाहिए कि अपने खाने पर निगाह डाले।
- 25. कि हमने पानी बरसाया मूसलाधार।
- 26. फिर हमने ज़मीन को चीर कर फाड़ दिया।
- 27. फिर हमने ज़मीन से अनाज उगाया।
- 28. अंगूर और हर तरह की सब्ज़ी तरकारी उगा दी।
- 29. जैतून और खजूर।
- 30. घने गुनजान बाग।
- 31. हर किस्म के मेवे और घास चारा भी।
- 32. तुम्हारे गुज़र बसर का सामान और तुम्हारे चौपाये जानवरों का भी।
- 33. बस जब कान फाड़ देने वाला शोर बरपा करने वाली (कियामत) आ जायेगी।
- 34. तो उस दिन भाई अपने भाई को छोड़ कर भागेगा।
- 35. अपने माँ बाप को छोड़ कर भागेगा।

- 3. And how could you know (O Prophet) he might perhaps have grown in purity?
- 4. or that he might receive admonition, and that the reminder might profit him?
- 5. And for him who considers himself free from need (of you),
- 6. to him do you give your whole attention,
- 7. although you are not accountable for his failure to attain to purity;
- 8. but as for him who came unto you full of eagerness-
- 9. and in awe (of ALLAH)-
- 10. him do you disregard?
- 11. By no means (should it be)! For, these messages are but a reminder;
- 12. and so, whoever is willing, pay heed to it.
- 13. (It is) in Books, held greatly in honour and dignity,
- 14. lofty and pure,
- 15. (written) by the hands of scribes-
- 16. noble, most virtuous, (and pious).
- 17. (But only too often) man destroys himself: how stubbornly does he deny the truth!
- 18. (Does man ever consider) out of what substance (ALLAH) creates him?
- 19. Out of a drop of sperm HE creates him, and moulded him in due proportions,
- 20. and then makes it easy for him to go through life:
- 21. and in the end HE causes him to die, and brings him to the grave;
- 22. and then, when it be HIS will, HE shall raise him up (for the Day of Judgement).
- 23. Nay but (man) has never yet fulfilled what ALLAH has enjoined upon him.
- 24. Let-man, then consider (the sources of) his food:
- 25. (How it is) that WE pour down water, pouring in showers abundant;
- 26. and then WE split the earth (with new growth), splitting in fragments,
- 27. and thereupon WE cause grain to grow out of it,
- 28. and vines and edible plants.
- 29. and olive trees and date-palms,
- 30. and gardens dense with foliage,
- 31. and fruits and fodder,
- 32. for you and for your animals to enjoy.
- 33. At length, when the piercing call (of Resurrection) is heard;
- 34. on a Day when everyone will (want to) flee from his brother,
- 35. and from his mother and father,

منزل (بقيمغيرنشة) دريزانسان اتنا دلدارسي اين جافرول كو ميل فروط اورميوكملانا بعرجالورول كے لئے اور بھی فاص انتظام فرما ماكه كمعاس تيبال خاصى مقدار میں بغیر کا شتکاری کے بیا فرا دیا۔ کرمانوروں کے جارے ک کاکشترکاری انسانوں کہیں كرنى يرطن ، كنى كاليك بعيث آم، جام ياناجى بالى بري آدى عور كرك تودان و كوداءمهاس سبانسان كاروزى دزق في اوراقي يت اور صلك ما اورول كم لخ، موتميى سنتره كيلااور ديجريل فرو پرموے ک خاطت کے لئے قدرت نے غلاف بہنائے ک الك طرف جيز كي حفاظت بهي بو اوردوسرى طرف انسان كما يك توصيك غلاف مأاورول كام

وف تیامت کے دن الی مجال دو الی مجال دور الی مجال دور الی مجال کے وحتی مافور میں مجال کے اور کی مجال کے اور کی اور کی اور کی اور کی کا دور کا دور کا دور کی کا دور کا دور کا دور کی کا دور کی کا دور کا دور

- 36. अपनी पत्नी और बेटों को भी छोड़ कर फरार होना चाहेगा।
- 37. हर आदमी को उस दिन अपनी ही पड़ी होगी कि दूसरे के काम की उसको कुछ भी परवाह न होगी।
- 38. बहुत से चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे।
- 39. खुशख़बरी पाकर मुस्कुराते होंगे।
- 40. और कितने चेहरों पर उस दिन धूल पड़ी होगी।
- 41. और मुँह पर कालक पोत दी जायेगी।
- 42. यह लोग कुफ़्फ़ार होंगे बदकार (बदचलन) होंगे।

81. तकवीर

सूरह तकवीर मक्का में उतारी गई इस में उन्तीस (29) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के वाम से जो बड़ा मेहरबाव बहुत बहुत रहम करवेवाला है।"

- 1. जब सूरज को लपेट लिया जायेगा।
- 2. और जब तारे बेरौनक् (अशोभित) होकर झड़ जायेंगे।
- 3. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे।
- 4. और दस माह की गाभन ऊँटनियाँ खुली छोड़ दी जायेंगी।
- 5. और जब हिंसक जंगली जानवर इकहे हो जायेंगे।
- 6. और जब समुन्दरों में आग लगा दी जायेगी।
- 7. और जब बदन और रूह (आत्मा) के जोड़ फिर से मिला दिये जायेंगे।
- 8. और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा।
- 9. कि वह किस गुनाह में मारी गई थी ?
- 10. और जब नाम-ए-अमल (कर्म पत्रों) के दफ़्तर खोल
- 11. और जब आसमान की खाल खींच कर छिलके निकाल दिये जायेंगे।
- 12. और जब 'जहन्नम' की आग भड़का दी जायेगी।
- 13. और 'जन्नत' नजुदीक लाई जायेगी।
- 14. तब हर नफ्स (जीव) को मालूम हो जायेगा कि वह क्या लेकर आया है।
- 15. मैं क्सम पेश करता हूँ पीछे हट जाने वाले तारों की।
- 16. और जो तारे चलते चलते दुबक कर छुप जाते हैं।
- 17. और रात की क्सम जब वह जाने लगे।

- 36. and from his spouse and his children:
- 37. On that Day, every one of them will have concern enough to make him heedless of others.
- 38. Some faces will on that Day be bright with happiness,
- 39. smiling, rejoicing at glad tidings.
- 40. and some faces will on that Day with dust be covered,
- 41. with darkness overspread:
- 42. these, these will be the ones who denied the truth and were immersed in iniquity!

1 42 5

81. SURAH: AT-TAKWIR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 29 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. When the sun is shrouded in darkness,
- 2. and when the stars lose their light;
- 3. and when the mountains are made to vanish;
- 4. and when the she-camels big with young, about to give birth, are left untended;
- 5. and when all wild beasts are gathered together;
- 6. and when the oceans are on fire,
- 7. and when all the souls are coupled (with their bodies),
- 8. and when the girl-child that was buried alive is made to ask-
- 9. for what crime she had been killed?
- And when the scrolls (of men's deeds) are unfolded;
- 11. and when heaven is laid bare,
- 12. and when the blazing fire (of Hell) is kindled to fierce heat,
- 13. and when Paradise is brought into view:
- 14. (On that Day) every human being will come to know what he has prepared (for himself).
- 15. But nay! I call to witness the revolving stars,
- 16. the planets that run their course and set,
- 17. and the night when it departs,

راس نے مجھ کو بیدا کیا بھر تھے برابر کیا اور تیرے بدل کو ٹھیک ٹھاک کیا (بھر جس صورت میں سیا ہا تھے کو سوار

منزل (بقيصفي گذرشت) رب العالمين كانوف سب ير طارى بوكاآدى كوبعى اب الشركسوا فسي كا دريس ريا-وك حشروصاب كے دن درياؤ ی صرورت نہیں ہوگی اس تتے الخصيس جلاد باجائے گا، در باكاتاً يانى بيرول ى طرح جل أعظم كا اوراول بھی یا فی دوگیسوں سے كرينا ہے ايك بعظيم سلكنے والى دوسرى بحرط كانے والى - دونوں كيس الك الك بوكراينا كام كرنے لكين توياني كاجل الط عين مكن ہے - اور موجودہ دور میں محدود بیانے پراس کے تجربات بوجكيس بيمالا كواين بناني بونى چرسجب وكام لینا ہواس کے حکم کی درہے۔ یانی میں آگ لگ جانے سے انسان زبین بیں ایک منظ کے لئے بھی نہیں رہ سکے گا وی اور پوری زمین کی ساخت اور بہان کامزاج ہی بدل جائے گا۔ آسمان ،سورج جائد ارے پانی يهار سب فنا بهون توآدمي كا بومال سے گا اس كے مرف تقور سے رونگے کومے ہو جاتے ہیں۔ وها، كل أسمان كة ارول ک حال الشرف مقرد فرا دی ہے مغرب سيمشرق كواوركبي كلفك كوا لط ميرتي بن مجمى عرات ہیں ، مجھی دیک کر تھیں گئے اور بعض تواك سائه مل كرطية بي جيس سات سارول كالكي جمكاساته بىساتة ملتاسياسة فيان كوسم مي بطور شهادرت پیش فرمایا کرمیری قدرت، کے نشان بمي ديجية ماؤ-

- 18. और सुबह की क्सम जब उसका दम फूलने लगता है।
- 19. इस फ़र्मान को एक इज़्ज़त वाला फ़रिश्ता लेकर आया है।
- 20. जो बलवान है और अर्श के मालिक के नज़दीक उस का बड़ा दर्जा है।
- 21. वहाँ फरिश्तों का वह सरदार है अमानतदार है।
- 22. और यह जो तुम्हारे साहेब हैं वह हरगिज़ दीवाने नहीं।
- 23. बेशक इन्हों ने तो इस फ्रिश्ते को आसमान के किनारे पर साफ देखा है।
- 24. और वह अनदेखी (ग़ैब की) बातें बताने में कंजूस नहीं जो उन को बताया गया है वह कह देते हैं।
- 25. और शैतान मरदूद की बात इस शान की नहीं हो सकती।
- 26. फिर तुम को क्या हो गया तुम किधर जा रहे हो ?
- 27. यह तमाम संसारों के लिए एक याद देहानी (चेतावनी) है।
- 28. तुम में से जो सीधा चलना चाहेगा उस के लिए पूरी नसीहत है।
- 29. सिर्फ तुम चाहो तो कुछ नहीं होगा अल्लाह रब्बुल आलमीन के चाहने से सब कुछ होता है।

82. इनफ़ितार

सूरह इनिफतार मक्का में उतारी गई इस में उन्नीस (19) आयतें हैं।

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरवान बहत बहत रहम करनेवाला है।''

- 1. जब आसमान को चीर डाला जायेगा।
- 2. जब सितारे झड़ कर बिखर जायेंगे।
- 3. जब समुन्दर उबल कर बह जायेंगे।
- 4. जब कब्नें उखाड़ दी जायेंगी।
- 5. तब हर नफ़्स जीव (जान) को मालूम हो जायेगा की क्या उसने आगे भेजा था और क्या पीछे छोड़ आया।
- 6. ऐ इन्सान तुझे अपने करम वाले रब के बारे में किसने धोखा दे दिया ?
- 7. जब कि उसी ने तुझ को पैदा किया फिर तुझे बराबर किया और तेरे बदन को ठीक ठाक किया।

- 18. and the morning as it softly breathes;
- 19. the inspiration of this (Divine Book) is indeed brought by a noble messenger (Jibreel),
- with strength endowed, having an honourable place with The LORD of the Throne of Almightiness;
- 21. One to be obeyed (there, being chief,) and is worthy of trust.
- 22. for, this fellow-man of yours is not a mad-man,
- 23. he truly saw (the angel) on the clear horizon;
- 24. and he is not one, unwilling to give others the knowledge (of whatever has been revealed to him) out of that which is beyond the reach of human perception.
- 25. Nor is this (message) the word of any satanic force accursed.
- 26. Whither, then will you go?
- 27. This (message) is no less than a reminder to all mankind-
- 28. to everyone of you who wills to walk a straight way.
- 29. But you cannot will it unless ALLAH, the Sustainer of all the worlds, wills (to show you that way).

 1 29 6

82. SURAH: AL-INFITAAR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 19 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. When the sky is cleft asunder,
- 2. and when the stars are scattered,
- 3. and when the seas burst beyond their bounds;
- 4. and when the graves are turned- upside down,
- 5. every human being will (at last) comprehend what he has sent ahead, and what he has left back (in this world).
- 6. O man! What is it that lures you away from your Bountiful Sustainer?
- 7. Who has created you, and formed you in accordance with what you are meant to be, and shaped your nature in just proportion.

عُكُنِّ بُوْنَ بِاللِّينِينَ ﴿ وَإِنَّ عَلَيْهِ م انعاف كدن كو جملارم اور بیشک تم پر بخرانی کرنے دالے (P) 10,2016 P 09 (0) (- YU رافل ہوں کے (اور وہ اس سے کہیں غاتر ہے کہ انصاف کا دن کیا ہو گا 🕒 پھر بتا دو کہ تم کو بدلے کے دن کے بالے ی کیا کھ سورة مطفقین كميس نازل فرمان گئ اسس ميں چھتنيل روع اللے کے نام سے جو برا مہر بان نہایت رحم کرتے والا ہے اورحب لوكول كوناب كريا وزن كر ایک زیردست دل ی) ہوگا ﴿ اور م کھ مانتے بھی ہو کہ سخین کیا

التاري

- 8. फिर जिस सूरत में चाहा तुझ को सवार कर दिया।
- 9. इस के बाद भी तुम इन्साफ के दिन को झुठला रहे
- 10. और बेशक तुम पर निगरानी करने वाले अफसर (फरिश्ते) तैनात हैं।
- 11. जो इज़्ज़त वाले हैं तुम्हारे कामों को लिखते ही रहते हैं।
- 12. जो कुछ तुम करते हो उन को उसकी ख़बर है।
- 13. बेशक नेक लोग भरपूर नेमत में होंगे।
- 14. और बदचलन लोग आग के देर में होंगे।
- 15. इन्साफ के दिन उस में दाखिल होंगे।
- 16. और वह उससे कहीं गायब नहीं हो सकते।
- 17. और तुम को कुछ मालूम भी है कि इन्साफ का दिन क्या होगा ?
- 18. फिर बता दो कि तुम को बदले के दिन के बारे में क्या कुछ मालूम है ?
- 19. जिस रोज़ कोई आदमी किसी का कुछ भी भला न कर सकेगा और उस दिन सिर्फ एक अकेले अल्लाह का हुक्म जारी हो चुका होगा।

83. मुतफ्फ़ेफ़ीन

सूरह मुतफ़्फ़ेफ़ीन मक्का में उतारी गई इस में छत्तीस (36) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के वाम से जो बड़ा मेहरबाव बहत बहत रहम करवेवाला है।"

- 1. नाप तौल में कमी करने वालों के लिए बड़ी खराबी है।
- 2. जो लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा भरकर लेते हैं।
- 3. और जब लोगों को नाप कर या वज़न कर के देते हैं तो घटा कर उनका नुक्सान करते हैं।
- 4. क्या उनको इसका ख़याल न रहा कि उन्हें कृब्रों से जिन्दा हो कर उठना है ?
- 5. (यानी) एक भव्य (बड़े) दिन में।
- 6. उस दिन सारे इन्सान रब्बुल आलमीन (यानी सारे संसारों के मालिक अल्लाह) के सामने खड़े हो जायेंगे।
- 7. ख़बरदार हो जाओ, बेशक बुरे काम करने वालों के कर्मों के बही—खाते सिज्जीन में होंगे।
- 8. और तुम कुछ जानते भी हो कि सिज्जीन क्या है ?

- 8. having put you together in whatever form (and face) HE willed (you to have)!
- 9. Nay, (O men,) but you (are lured away from ALLAH, whenever you are tempted to) give the lie to (ALLAH's) Judgement!
- 10. And yet, verily, there are ever-watchful forces over you,
- 11. noble, recording (your deeds).
- 12. aware of whatever you do.
- 13. Behold, (in the life to come) the truly virtuous will indeed be in bliss.
- 14. Whereas, behold, the wicked will indeed be in a blazing Fire,
- 15. (a fire) which they shall enter on the Day of Judgement,
- 16. and which they shall not (be able to) evade.
- 17. And what could make you conceive what that Day of Judgement will be?
- 18. And once again: What could make you conceive what that Judgement Day will be?
- 19. (It will be) a Day when no human being shall be of the least avail to another human being, in anything: for on that Day (it will become manifest that) all sovereignty is ALLAH's alone.

 1 19 7

83. SURAH: AL-MUTAFFIFEEN

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 36 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Woe unto those who give short measure (and deal in fraud):
- 2. those who, when they are to receive their due from (other) people, demand that it be given in full-
- 3. but when they have to measure or weigh, whatever they owe to others, give less than what is due.
- 4. Do they not know that they are bound to be raised from the dead?
- 5. (and called to account) on an awesome Day?-
- 6. the Day when whole mankind shall stand before the Sustainer of all the worlds?
- 7. Nay, verily, the record of the wicked is (preserved) in a mode inescapable-'Sijjeen'!
- 8. And what could make you conceive what that 'Sijjeen'- mode inescapable- will be?

٣٨ المُطَفِّقَانَ

عَرْفُوْمٌ وَيْلُ يَوْمَهِنِ لِلْمُكُنِّ بِنِي اللَّهُ الَّذِينَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللّل العدر در ارسے روک دینے جاتیں گے 📵 پھر لیقینا وہ ہم میں جونک دینے جاتیں گے 🖫 دیجے اے ہوں گے ال کم اُل کے جرول سے نعمت کی تاز کی کو پہم m Zy اونجانی سبنے والا یہ جھزنا ہوگاجس پی سائٹ کے مقرب بند سیتے ہوں گی جو جوم تقے وہ دنیا ہی ایک ان دالوں کی ہنسی اُڑاتے سے اورجبان کے اِس سے کرنے وا کھوں اُشاہے کم

والآ ونیایس بوتل کوسی مرتگانے
میں لاکھ کا استعال ہوتا ہے کسی
میں لاکھ کا استعال ہوتا ہے کسی
میں بیٹ بیٹ کو بینے کے لئے جو
میروبات دیتے جائیں گے وہ
سیل بند ہوں گے اوران کی سیل
کستوری لیجنی مشک کی ہوگ –
کستوری تیجی مشک کی ہوگ –
کی سیل یعنی ہم ستوری جسی شراب
کی ہوگی تو بینے کی چیز کتنی بیش
کی ہوگی تو بینے کی چیز کتنی بیش
قیمت اورائم ہوگ -

- 9. एक लिखा लिखाया दफ्तर है।
- 10. उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी तबाही होगी।
- 11. जो लोग बदले और इन्साफ के दिन को झुठलाते हैं।
- 12. जब कि इन्साफ के दिन को वही झुठलाता है जो हद से बाहर निकल भागा हुआ गुनाहगार हो।
- 13. उस पर जब भी हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि सब पहले लोगों के किस्से कहानियाँ हैं।
- 14. हर्गिज़ नहीं बल्कि उन के बुरे कामों की वजह से उनके दिलों को ज़ंग लग गया है।
- 15. खबरदार हो जाओ कि बेशक उस दिन वह अपने रब के दीदार (दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
- 16. फिर बेशक वह जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे।
- 17. फिर उन से कहा जायेगा कि यही वह नतीजा है जिस को तुम झुठलाया करते थे।
- 18. आगाह हो जाओं कि नेकी करने वाले लोग इल्लीयीन में होंगे।
- 19. और तुम्हें क्या खबर कि इल्लीयीन क्या है ?
- 20. लिखा लिखाया एक दफ़्तर है।
- 21. जिस का अवलोकन मुक्रंब (उच्च विभाग वाले) फरिश्ते करते रहते हैं।
- 22. बेशक नेकी करने वाले बड़ी नेमत में होंगे।
- 23. तख्तों पर बैठे हुए खुशनुमा मंज़र (दृश्य) को देख रहे होंगे।
- 24. तुम उनके चेहरों से नेमत की ताज़गी को पहचान लोगे।
- 25. पिलायी जाएगी उन को खालिस शराब जो सील बंद होगी।
- 26. जिस की मुहर मुश्क की यानी कस्तूरी की होगी जिस को रग़बत (इच्छा) करनी हो तो जन्नत की ऐसी नेमत की उसे इच्छा करनी चाहिए।
- 27. और उसमें तसनीम की मिलावट होगी।
- 28. ऊँचाई से बहने वाला वह झरना होगा जिस में अल्लाह के मुकर्रब (समींप वर्ती) बन्दे पीते होंगे।
- 29. जो मुजरिम थे वह दुनिया में ईमान वालों की हंसी उड़ाते थे।
- 30. और जब उनके पास से गुज़रते तो आँखों से इशारे करते।

- 9. A record (indelibly) inscribed!
- 10. Woe on that Day unto those who give the lie to the truth,
- 11. those who give the lie to the (coming of) Judgement Day;
- 12. for, none gives the lie to it but such who used to transgress against all that is right (and are) immersed in sin,
- 13. (and so,) whenever OUR messages are conveyed to them, they but say, "Fables of ancient times!"
- 14. Nay, but their hearts are rusted by all (the evil) that they used to do.
- 15. Surely on that Day they will be debarred from (the mercy of) their LORD,
- 16. and then, behold, they shall enter the blazing Fire-
- 17. and be told: "This is the (reality) to which you used to give the lie".
- 18. Nay, verily, the record of the truly virteous is (preserved) in a mode most high-('Illiyeen')!
- 19. And what could make you conceive what that 'Illiyeen', mode most high will be?
- 20. A record (indelibly) inscribed,
- 21. witnessed by most upgraded,
- 22. Behold, (in the life to come), the truly virtuouse will indeed be in bliss.
- 23. (resting) on couches, they will look up (to ALLAH);
- 24. Upon their faces you will see the brightness of bliss.
- 25. They will be served with a drink of pure nectar (of flowers) whereon the seal (of sanction from ALLAH) will have been set.
- 26. That seal will have a fragrance of musk. To such (drinks of Paradise), let all may aspire who (are willing to) have things of high account;
- 27. for it is composed of all that is most exalting-'Tasneem'-
- 28. a spring, (the source of bliss) whereof those who are drawn close unto ALLAH shall drink.
- 29. Surely, they who are guilty, used to laugh at those who have attained to faith;
- 30. and whenever they pass by them, they wink at one another (derisively);

بدله ال کی حرکوں کا بل سروع الله کے نام سے جو برا مہر بان نہایت رحم کرنے والا ہے وايس يوكا (یکارنے لکے کا 🕦 اور بھڑ کتی آگئی دافل ہوگا 🖫 دنیا ہیں یہ آدی اینے کھر باریں بے ف

م حسابیس آسانی یہ کم منابطی فاندیری حبد کردی مانے گی اور بہت سی باتوں سے درگزر کیا جائے گا مدیث شراف یس یہ دعابتائی گئے اکٹھ کے حاسب نی حسابالا یک بیٹرا۔ اے اللہ میراحساب آسان فرا۔

- 31. जब अपने घर बार में वापस होते तो चबा चबा कर उनकी बुराई के किस्से छेड़ते।
- 32. और जब ईमान वालों पर नज़र पड़ती तो कहते देखना यही लोग गुमराह हैं।
- 33. जबिक ईमान वालों की निगरानी के लिए उनको दुनिया में नहीं भेजा गया था।
- 34. बस आज तो ईमान वालों को काफिरों पर हंसने का अवसर आ गया।
- 35. तख्तों पर बिराजमान हो कर काफिरों की बुरी गत देखते होंगे।
- 36. काफिरों को क्या खूब बदला उनकी हरकतों का मिल गया।

84. इनशिकाक

सूरह इनशिकाक मक्का में उतारी गई इस में पच्चीस (25) आयतें हैं।

"शुरू. अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. जब आसमान फट जायेगा।
- 2. अपने रब का हुक्म सुन लेगा और उस पर हक है कि जैसा हुक्म दिया जाये वैसा ही करे!
- 3. जब ज़मीन फैला दी जायेगी।
- 4. जो कुछ उस के अन्दर है उसे बाहर फेंक देगी और खाली हो जाएगी।
- 5. ज़मीन भी अपने रब का हुक्म सुन लेगी और उस पर यह हक लाजिम है।
- 6. ऐ इन्सान बेशक तू तो मेहनत करता ही है, अपने रब की तरफ पहुँचने में मेहनत किये जा तेरी उससे मुलाकात होने वाली है।
- 7. जिस का नाम-ए-आमाल (कर्म पत्र) उसके सीधे हाथ में दिया गया।
- 8. तो उस का हिसाब बहुत जल्द आसानी से ले लिया जायेगा।
- 9. और ऐसा आदमी अपने घर वालों की तरफ खुश—खुश वापस होगा।
- 10. लेकिन जिस का नाम-ए-आमाल उसकी पीठ के पीछे से दिया गया।
- 11. तो वह मौत मौत पुकारने लगेगा।
- 12. और भड़कती आग में दाखिल होगा।

- 31. And whenever they return to people of their own kind, they return full of jests;
- 32. and whenever they see those (who believe,) they say: "Behold, these (people) have indeed gone astray!"
- 33. But they have not been sent as watchers over (the beliefs of) others!
- 34. On the Day (of Judgement), they who had attained to faith will (be able to) laugh at the (erstwhile) deniers of the truth:
- 35. (for, resting in Paradise) on couches, they will look on (a sight and say to themselves):
- 36. Are not these deniers of the truth being (thus) paid-back (fully) for what they used to do?

1 36 8

84. SURAH: AL-INSHIQAQ

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 25 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. When the sky is split asunder,
- 2. obeying (the command of) its Sustainer, as in truth it must (do so):
- 3. and when the earth is stretched and levelled,
- 4. and casts forth whatever is in it, and becomes empty, (utterly void).
- 5. obeying (the command of) its Sustainer, as in truth it must (do so)-
- O man! You indeed have been toiling-painful toiling-towards your Sustainer, so now you shall meet HIM.
- 7. So as for him whose record shall be placed in his right hand,
- 8. he will in time be called to account, with an easy accounting;
- 9. and will (be able to) turn joyfully to his people.
- 10. But as for him, whose record shall be given to him behind his back,
- 11. he will in time pray for utter destruction (for himself);
- 12. and he will enter the blazing flame (of Hell).

وي آدمي دن كمقابلي مي يس كناه كيم زياده كرتام. یے دامن میں انسان کے ال كوسميط ليتي ہے، جاہے بابرے۔ موس کوماسخ این رات بسرکرنے میں بوراخیال - ذكر، دعا، تلادت سبيح مي یک وقت صرور گرارے -

2997 AD رہتا تھا اور یہ بھے کرزندگی کاٹ دی راہے واپس نہیں جانا ہے اس کیون نہیں اس (يُؤْمِنُون ﴿ وَ ا بكه يه كافرادك جمثلاني برا زور لكارب بي ال ال كودردناك عذاب ك خو بشروالله الرَّحْمُن الرَّحِبُور سروع الشرك نام سے وبرا مهربان نمایت رحم كرنے والا ہے بوط تلع بند آسمان کی قسم ہے 🕕 اوراس دن کی قسم جس کا وعد دیگاہے 🕥 اور گواہ کی اورجس پر خندق والول پرخ بحواكانى ﴿ اوركنا بع بينيك لكاكرزنده جل ف المنظفي يسب تق ﴿ اور ونون كيما تم يو كي ظلم كريس تقدوه ان ك

- 13. दुनिया में यह आदमी अपने घर बार में बेफिक्र मस्त रहता था।
- 14. और यह समझ कर ज़िन्दगी काट दी कि उसे अल्लाह के पास लौट कर वापस नहीं जाना है।
- 15. क्यों नहीं उसका रब तो बराबर उसे देख रहा था।
- 16. मैं शाम की सुर्खी (संध्या—लालिमा) की कसम पेश करता हूँ।
- 17. और रात की और उसने जो कुछ समेट लिया।
- 18. और चाँद की कसम जब वह पूरा हो जाए।
- 19. तुम को ज़रूर एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल पर चढ़ते जाना है।
- 20. उन को क्या हो गया कि ईमान में नहीं आ रहे हैं।
- 21. जब उन पर कुरआन पढ़ा जाता है तब भी सजदा नहीं करते।
- 22. बल्कि वह काफिर लोग झुठलाने में बड़ा जोर लगा रहे हैं।
- 23. उनके सीनों में भरा तमाम कीना कपट अल्लाह को खूब मालूम है।
- 24. उन को दर्दनाक (कष्ट-दायक) अज़ाब की खुशखबरी दे दो।
- 25. हाँ मगर ईमान वालों को जो नेक अमल (अच्छे काम) करते हैं कभी खत्म ना होने वाले बदले की बशारत (शुभ-सूचना) सुना दो।

85. बुरूज

सूरह बुरूज मक्का में उतारी गई इस में बाईस (22) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. मज़बूत बुर्जों (क़िले बन्द) वाले आसमान की क़सम है।
- 2. और उस दिन की क्सम है जिस दिन का वादा पक्का है।
- 3. और गवाह की और जिस पर गवाही दी जाये उसकी।
- 4. ख़न्दक (खाई) वालों पर ख़ुदा की मार पड़ी।
- 5. उन्होंने खाई खोद कर उसमें आग भड़काई।
- 6. और किनारे बैठक लगाकर ज़िन्दा जलाने का मन्ज़र देख रहे थे।
- 7. और मोमिनों के साथ जो कुछ जुल्म कर रहे थे वह उनकी आँखों के सामने हो रहा था।

- 13. Behold! (in his earthly life) he lived joyfully among his people-
- 14. for, behold, he never thought that he would have to return (to ALLAH).
- 15. Yes, indeed! His Sustainer did see all that was in him.
- 16. But, Nay! I call to witness the sunset's (fleeting) afterglow,
- 17. and the night, and what it (step by step) unfolds,
- 18. and the moon, as it grows to its fullness;
- 19. (even thus, O men!) you are bound to move onwards from stage to stage!
- 20. What, then, is wrong with them that they do not believe (in a life to come)?-
- 21. and (that), when the Quran is read unto them, they do not fall down in prostration?

(13th Sajda-e-Tilawat).

- 22. But (on the contrary,) they who are bent on denying the truth give the lie (to this Divine Book)!
- 23. Yet, ALLAH has full knowledge of what they conceal (in their hearts),
- 24. Hence, give them the tiding of grievous suffering (in the life to come)-
- 25. except those who (repent, and) attain to faith, do good works: for, theirs shall be a reward unending.

 1 25 9

85. SURAH: AL-BUROOJ

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 22 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Consider the sky, full of great constellations;
- 2. and (then bethink of) the promised Day (of Resurrection).
- and (of) HIM who witnesses (all), and (of) that (subject) unto which witness is borne (by HIM)!
- 4. They destroy (but) themselves, they who would ready a pit-
- 5. of fire fiercely burning (for all who have attained to faith)!
- 6. Lo! (With glee do) they contemplate that (fire),
- 7. fully conscious of what they are doing to the believers;

وف يهوا تعرب ايك ظالم بت برست بادشاه كاجونهايت بى فترى اورام وتشم كامشرك تفاحضرت عيسلي علالت لا كاعت كے بعد بہت سى مخلوق كوسيا ايان نفييب بوا اس بادشاه ک رعایامی می بہت لوك التربيايان لے آئے اس ير يه بادشاه بوكفلا كيا،ايندراج محل كےسائے ایک خندق كعدوا لئ اوراس مين نوب تيزآ أكبر كاني اورآ گ کے جاروں طف مرتبے کے الحاظ مع بروز براور تقع دار . کے لئے کرسیاں گوائیں اور محل ک كسيده برايك بت ركموايا این رعایا می سے ہراک کوجبور کیا که ده اس بنت کوسیده کرے توسیده ار الواس زنده آگ می جلاد اجا ما برارد ا يان والعان يرتفيل كم حيية جي آگ مي جانيامتطوركماليكن ركي كوسيده كرفس انكادكماآخرالتر كاعضب بادشاه يرثوب يرطانس خندق كي آك بيل يرس بادشاه ادروز برجق داراورس تات ديجية والعامر-

بَاللهِ الْعَنِ نُبْرِ الْحَمِبُدِ فَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمُونِ وَالْأَرْضِ اللّٰہ پرایمان لے آئے جو ہرطرت غالب حمر کاستی ہے ﴿ آسانوں اور زمین کی سلطنت اور یا دشا ہی اکیلے اللّٰہ کے لئے ہے اور واقتح لُ أَلِينَ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِ السرمرچيز برآپ بي گواه موجود ہے . ايمان والوں اورا بمان واليوں كوستانے كے بعد جھوں نے وَالْمُؤْمِنْتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوا فَلَهُمْ عَنَ ابْ جَهَنَّمُ وَلَهُمْ عَنَ ابْ توبہ نہیں کی ان کے لئے جہم کا عذاب ہے اور بہت ہی تیز جلن کا عذاب اُل کو تعکتنا ہوگا ① بیشک جولوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کے لئے السی جنتیں ہیں الْأَنْهُرُهُ ذَٰلِكَ الْفُوزُ الْكِبِبُرُشِ إِنَّ جن کے بیٹے ہریں بہتی ہوں گی یہ بہت ہی بڑی کامیابی ہے ال بیشک شَ رَبِّكَ لَشَانِ يُنْ اللَّهِ إِنَّهُ هُو يُبْدِئُ وَ يُعِينُ ﴿ وَهُو تر بے مرورد کاری بیرط بھی بہت سخت ہے ال بیشک پہلی بار بھی اس نے بداکیااور دم بار بھی ہی بدافرائے کا اس وہی برط ا لَغَفُورُ الْوَدُودُونُ ذُوالْعُرُشِ الْمَجِنبِينُ ﴿ فَعَنَّا مخشن ہاراہےاور بہت چاہنے والا 👚 عرش والا برطی بزرگی اور شنان والا 🔞 جس کا کارادہ فرط لے کمر کے ك حديث الجنود في فرعون وتمود ا بتا دینے والا (۱) کیا تھارے پاس ان بڑے لئے وال کا مال پہنچا (۱) فرعون اور شود کے لشکر (۱) یں بڑا زور دکھا رہے ہیں 📵 انھیں علی کادوکانٹر فے برطرف سےان پرعذاب کا براڈال یا ہے 🛈 بلکہ یہ تو دہ قرآن ہے جو برطی شان والاہے 🕦 جیسا لوح محفوظ میں تھا ولیسا ہی بہاں آیا ہے 🖫 بشرمالله الرَّخْصِ الرَّحِبْمِ سروع الله کے نام سے ہو برط امہر بان نہایت رحم کرنے والا ہے مان کی درات کونمو دار مون والے کی (تم کوکیا معلوم کر رات کو آنے والا کیا

842

8. वह ईमान वालों में कोई बुराई नहीं पा सके मगर यह बात उन्हें बहुत बुरी लगी कि वह अल्लाह पर 'ईमान' ले आये जो हर तरह ज़बरदस्त तारीफ के कृबिल है।

9. आसमानों और ज़मीन की सलतनत और बादशाही अकेले अल्लाह के लिए है और दर हकीकृत अल्लाह

हर चीज़ पर आप ही गवाह मौजूद है।

- 10. ईमान वाले और ईमान वालियों को सताने के बाद जिन्होंने 'तौबा' नहीं की उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और बहुत ही तेज जलन का अज़ाब उनको भुगतना होगा।
- 11. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अमल (अच्छे काम) करते रहे उनके लिए ऐसी 'जन्नतें' हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी यह बहुत ही बड़ी कामयाबी है।
- 12. बेशक तेरे रब की पकड़ भी बहुत ही सख़्त है।
- 13. बेशक पहली बार भी उसने पैदा किया और दोबारा भी वही पैदा करेगा।
- 14. वही बड़ा बख़्शनहारा (अत्यंत क्षमाशील) है और बहुत चाहने वाला है।

15. अर्शवाला बड़ा ही बुजुर्गी और शान वाला।

- 16. जिस काम का इरादा कर ले कर के बता देने वाला।
- 17. क्या तुम्हारे पास उन बड़े लशकरों का हाल पहुँचा ?

18. फ़िरऔन और समूद के लशकर।

- बिल्क यह इन्कारी लोग झुठलाने में बड़ा ज़ोर दिखा रहे हैं।
- 20. उन्हें मालूम करा दो कि अल्लाह ने हर तरफ से उन पर अज़ाब का घेरा डाल दिया है।
- 21. बल्कि यह तो वह कुरआन है जो बड़ी शान वाला।
- 22. जैसा लौहे महफूज़ (सुरक्षित पट्टीका) में था वैसा ही यहाँ आया है।

86. तारिक

सूरह तारिक मक्का में उतारी गई इस में सतरह

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान

बहुत बहुत रहम करवेवाला है।"

- 1. क्सम आसमान की और रात को नमूदार (प्रकट) होने वाले की।
- 2. तुमको क्या मालूम कि रात को आने वाला क्या है ?

- 8. whom they hate for no other reason than that, they believe in ALLAH, the Almighty, the One to Whom all praise is due.
- 9. (and) to Whom the dominion of the heavens and the earth belongs. But ALLAH is

witness unto everything.

10. Verily, as for those who persecute believing men and believing women, and thereafter do not repent, Hell's suffering awaits them: Yes, chastisement of the burning fire awaits them!

11. Verily, they, who have attained to faith and do righteous deeds shall, (in the life to come), have gardens through which running waters flow-that is the great success!

12. Verily, your Sustainer's grip is exceedingly strong!

- 13. Behold, it is HE who creates (man) in the first instance, and HE (it is who) will bring him forth anew.
- 14. And HE Alone is truly forgiving, all embracing in HIS love.
- 15. Lord of The Throne, full of All Glory,

16. Soverign doer of whatever HE wills.

- 17. Has it ever come within your knowledge, the story of the (sinful) forces-
- 18. of Firaun, and of (the tribe of) Samud?
- 19. And yet, they who are bent on denying the truth persist in giving it the lie:
- 20. but all the while ALLAH encompasses them (with HIS Knowledge and Might) without their being aware of it.
- 21. Nay, but this (Divine Book which they reject) is a discourse sublime,
- 22. upon an imperishable tablet (inscribed).

1 22 10

86. SURAH: AT-TARIQ

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 17 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Consider the heaven and that which comes in the night!
- 2. And what could make you conceive what it is that comes in the night?

وال اس آیت سے معلوم ہواکہ آسان بھی گردش میں ہے اور گھومتاہے ہرچیزالشکے کم بر طواف میں شغول ہے اسی مفتون کی بات (۳۹) سورڈ کیسین آیت منابس دیکھی جاسکتی ہے۔

2

لتَّاقِبُ ۚ إِنْ كُلُّ نَفْسِ لَيًّا عَلَيْهَا حَافِظً لن أَخْلِق مِ ، والترابِ في إنَّه على رَحْ لَهُ مِنْ قُولَةٍ وَلا نَاصِرِ أَ وَالسَّاءِ تِ الرَّجْعِ أَ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ أَ إِنَّهُ -100 (B) 4-63/C شروع الشرك نام سے جو برا مهران نهايت رحم كرنے والا ب اورتم آپ کوآسانی را میناآسان کردیں گے

3. वह एक तारा है चमकता हुआ।

4. ऐसी कोई भी जान नहीं है कि उस पर मुहाफिज़ (रक्षक) मुक्रेर (नियुक्त) न हो।

 बस द्वन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।

- 6. वह उछलते कूदते पानी से पैदा किया गया है।
- 7. जो पीठ और सीने के बीच से निकलता है।
- 8. बेशक अल्लाह अपनी तरफ उसको लौटाने की ताकत रखता है।
- 9. जिस दिन सीनों के छुपे भेद जांचे परखे जायेंगे।
- 10. तब उसके बचाव की कोई कुव्वत (शक्ति) नहीं होगी और कोई मदद करने वाला भी उसे नहीं मिलेगा।
- 11. क्सम है आसमान की जो चक्कर मारने वाला है।
- 12. और ज़मीन की जो फट जाती है।
- 13. बेशक हमारा यह क़ौल (कथन) फैसला कर देने वाला है।
- 14. यह फ्रमान हंसी में टालने के लायक नहीं।
- 15. यह लोग छुपे तरीक़े से दाव घात में लगे हैं।
- 16. मैंने भी अपनी तदबीर जारी कर दी है।
- 17. बस अब थोड़ी सी छूट काफ़िरों को दे ही दो।

87. अअला

सूरह अअला मक्का में उतारी गई इस में उन्नीस (19) आयतें हैं।

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. पाकी बयान करो रब्बे आलीशान का नाम लेकर।
- 2. जिसने पैदा किया और बदन को दुरूस्त किया।
- 3. जिसने तकदीर का अंदाज़ा बांध दिया और रहनुमाई की।
- 4. जिसने चारा निकाला।
- 5. फिर उसको सूखा काला चूरा कर डाला।
- 6. हम आप को पढ़ा देंगे तो फिर आप भूल नहीं सकते।
- 7. मगर अल्लाह जो चाहता है वह होकर रहता है, बेशक वह ज़ाहिर (खुली) और छुपी हुई चीज़ को जानता है।
- 8. और हम आप को आसानी की राह चलना आसान कर देंगे।

3. It is the star of piercing brightness.

4. No human being has ever been left unguarded.

5. Let man, then, observe out of what he has been created;

6. he has been created out of gushing fluid-

7. issuing from between the back-bone (of man) and the pelvic arch (of woman).

8. Now, verily, HE (Who thus creates the man in the first instance) is well able to bring him back (to life),

9. on the Day when all secrets will be laid bare,

10. and (man) will have neither strength nor helper!

11. Consider the heavens, ever revolving,

12. and the earth, bursting forth with plants!

13. Behold, this (Divine Book) is indeed a word that cuts between truth and falsehood,

14. and is not a thing of amusement.

15. Behold, they (who refuse to accept it) devise many a false argument (to disprove the truth);

16. but I shall bring all their scheming to cipher.

17. Let, then the deniers of the truth have their will: let them have their will for a <u>little while</u>.

1 | 17 | 11 |

87. SURAH: AL-A'ALA

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 19 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Praise enthusiastically the Limitless Glory of your Sustainer's Name: (the glory of) the All-Highest.
- 2. Who creates (every thing), and thereupon forms it in accordance with what it is meant to be:
- 3. and Who determines (destiny and) the nature (of all that exists), and thereupon guides it (towards its fulfilment),

4. and Who brings forth (green) pasture,

- 5. and thereupon causes it to decay into rust-brown stubble.
- 6. WE shall teach you, and you will not forget (anything of what you are taught),
- 7. except what ALLAH may will (you to forget)- for, verily, HE (Alone) knows all that is open to (man's) perception, as well as all that is hidden (from it).

8. And (thus) shall WE make easy for you the path towards (ultimate) ease.

إِنْ نَفْعَتِ النِّكَ إِلَى أَسْبَنَّا كُرُمَنُ تَخْشَى اللَّهِ كَالِمُ اللَّهِ كَالِمُ اللَّهِ كَالْمُ اللَّهُ كُلُّ مِنْ تَخْشَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلْمُ عَلَيْ عَلْكُوا عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلِي عَلَيْكُ عَلَيْ عَلَيْ عَلِي عَلَيْكُمْ عَلَيْ عَلَيْكُ عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُ عَلَيْكُوا عَلَي كة مِا وُكِيونكِ نفيه حت تو ہر حال ميں فائده دے گی ﴿ جوالتَّر كَا خِنْ كُمَّا ہُوگادہ بہت جلدی بجے جائے گا 🕦 اس صحبت نامے سے الگ یی دیے گا جوڑا پر بخت ہوگا 🕕 ایسا شخص بولی ہماری آگ میں واخر وَلا يَعْلَى أَفْلَحُ مَنْ تَزِكَّ اللَّهِ مِنْ تَزِكَّ اللَّهِ مِنْ تَزِكَّ اللَّهِ ی بن مرے گا بنہ جے گا ﴿ بیش وہ کامیاب ہوگیا جس نے اپنے آپ کوسنوارلیا ﴿ اور ایندب کانام لیتار إاور تازادا کرتا را 🕲 بلکتم لوگ دنیای زندگی کو زیاده اہمیت دیتے ہو (14) جب کہ بہتراور باتی رہنے والی آخرت ہے 🕟 یہ بات بیشک ہے جس کا بیان پہلے کے صحیفوں میں ہے ابراہیمٔ اور موسلی کے صحیفوں میں بھی یہی بیان تھا (۹) سورہ غاشیہ کی ہے اس میں چھتیں آیا ۔ ہیں الشروالله الرَّفْعِن ال سروع الشركے نام سے جو بڑا مہر بان نہايت رحم كرنے والا ہے دینے وال قیامت کامال پہنی (جس دن بہت سےمنہ نوف زرہ ہول کے (فُ أَيْضُلِ نَارًا حَامِيهُ ﴿ لَكُ تے کرتے تھ کے آئے کرالے فعیب ٹی بڑے و مولمق آگ میں داخل ہوں کے 🕜 ایلے گرم یانی کے پہنے سے ان کو بلایا جائے گا @ زہر بل کا نے وار جھاڑیوں کا کھانا اُن کو دیا جائے گا 🕤 اس سےبدان کو چھی ہے۔ نُ جُوْعٍ فَ وَجُولًا يَوْمَينِ شطے اور مجوک مجھی دور نہ ہو گی 🕙 نغمت یاکراس دن بہت سے پیرے رونی والے ہوں کے 🕥 اضِية أَفِي جَنَّةٍ عَالِيةٍ أَلَّا

مسل بین دنیا بین بہت سخت
ریاصنت کی اور خوب تھکے گریدراہ
السّری نہیں تقی ۔ اس سے ال کی
محنت کا کوئی نتیج نہیں نکلا ۔ بلکہ
آگ میں جانے کا سبب یہ اعمال
بی بن گئے بوکر کے آئے تھے ۔
اور سولِ اعظم صلی السُّر علیہ وہلم
اور سولِ اعظم صلی السُّر علیہ وہلم
میں نجات ہے اور جو بہت محنت
کرے گرالسُّر تعالی اور سولِکرم
نی عالم صلی السُّر علیہ وسلم کے قول
نی عالم صلی السُّر علیہ وسلم کے قول
کے مطابق نہ ہوتی یہ محنت ہے کار

ت دنیایں کھانا کھانے کے بعد سیٹ بحرجا آہے، گھانس

عاره بوعش بحلك بوبعي اول

لمرادى كايسف وجرجا تاساور

بدك مي قوت آجاتى بيركسي

جمع میں زہر ملی کانے دار جاراو

ية بدك كوكي سهادا الله كا- اللهم

مومن کو بچاتے رائین)

ماتے کھاکر ہزبھوک مٹے گ

- 9. आप तो नसीहत किये जाओ क्यों कि नसीहत तो हर हाल में फायदा देगी।
- 10. जो अल्लाह का खौफ रखता होगा वह बहुत जल्दी समझ जायेगा।
- 11. इस नसीहत नामे से अलग वही रहेगा जो बड़ा बदनसीब होगा।
- 12. ऐसा आदमी बड़ी भारी आग में दाख़िल होगा।
- 13, फिर इसमें न मरेगा न जियेगा।
- 14. बेशक वह कामयाब हो गया जिसने अपने आप को संवार लिया।
- 15. और अपने रब का नाम लेता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा।
- 16. बल्कि तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को ज़्यादा अहमियत(महत्व) देते हो।
- 17. जबिक बेहतर और बाक़ी रहने वाली 'आखिरत' है।
- 18. यह कलाम बेशक है जिसका बयान पहले के 'सहीफों' (आकाशी ग्रंथ) में है।
- 19. इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में भी इसका बयान था।

88. गाशियह

सूरह गाशियह मक्का में उतारी गई इस में छब्बीस (26) आयतें हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. क्या आप के पास ढांक देने वाली (कियामत) का हाल पहुँचा ?
- 2. जिस दिन बहुत से चेहरे खौफ में घिरे होंगे।
- 3. अमल (काम) करते करते थक कर आये मगर उलटे मुसीबत में पड़े।
- 4. भड़कती आग में दाख़िल होंगे।
- 5. उबलते गर्म पानी के झरने से उनको पिलाया जायेगा।
- 6. ज़हरीली कांटेदार झाड़ियों का खाना उनको दिया जायेगा।
- 7. इस से बदन को कुछ भी कुव्वत (शक्ति) न मिलेगी और भूख कभी दूर न होगी।
- 8. नेअमत पाकर उस दिन बहुत से चेहरे रौनक वाले होंगे।
- 9. अपनी मेहनत से राज़ी हो चुके होंगे।
- 10. आला (उच्च) दर्जे के बाग में होंगे।
- 11. फुज़ूल बकवास उनको कभी सुनाई न पड़ेगी।

- 9. Remind then, (others, of the truth, regardless of) whether this reminding (would seem to) be of use (or not):
- 10. But in mind will keep it he who stands in awe (of ALLAH);
- 11. And aloof from it will remain that most unfortunate one-
- 12. he who, (in the life to come), shall have to endure the great Fire,
- 13. wherein he will neither die nor remain alive.
- 14. To happiness (in the life to come) will indeed attain he, who attains to purity (in this world),
- 15. and remembers his Sustainer's name, and prays (unto HIM).
- 16. But nay, (O men), you prefer the life of this world,
- 17. although the life to come is better and more enduring.
- 18. Verily, (all) this has indeed been (said) in the earlier revelations-
- 19. the revelations came upon Ibrahim and Moosa.

 1 19 12

88. SURAH: AL-GHASHIYAH

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 26 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Has there come unto you the tiding of the Overshadowing Event?
- 2. Some faces will on that Day be downcast,
- 3. toiling (under burden of sin), worn out (by fear).
- 4. about to enter a glowing Fire,
- 5. given to drink from a boiling spring.
- 6. No food for them except the bitterness of dry thorns,
- 7. which will give no strength and neither satisfy hunger.
- 8. (And) some faces will on that Day shine with bliss,
- 9. well-pleased with (the fruit of) their striving (past efforts),
- 10. in a garden sublime,
- 11. wherein you will hear no empty talk.

عُ ﴿ فَيْهَا عَانُى جَارِيةُ ﴿ فِيْهَا سُرٌّ مَّ فُوْعَةً ﴿ شیڑے گی 🕕 وہاں جرنے جاری ہوں گے 🕦 اویخی بچھایت والے تخت ہوں گے 🖫 ینے سے سامنے رکھے ہوں گے 🕥 اور قالیس قطارسے بچھاتے ہوتے 🔞 اور مخل کے غالیموں کی صند ثُوْثَةً ﴿ أَفَلا بَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتُ ﴿ وَالَّهِ الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتُ ﴿ بچیں ہون ال کیااونٹ کی طرف ان کی نگاہ مجمی نہیں گئی کہ اسے کس طرح پیدا کیا گیا 🔃 اور الك السَّمَاء كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ أسمان كى طرف دىجھا ہوناكہ اسے كيسے اونجا اتھا يا كميا 🕦 مجربها رول كى طرف انھوں نے نگا ہ ڈالى ہوق كركيسے تعرب کتے ہیں (اورزمین کی طرف غور کیا ہوتا کس طرح بچھائی محتی ہے (آئے نصیحت کی بات سنادوآئ تونفيدے کرنے والے ہیں 🗇 آمپ کو ان پرنگراں بنا کرنہ میں جھیجا کیا 😙 ہاں مگرجس نے منہ وڑا اور انگار الما پھراس کی خیرنہیں 🕀 کہ پھر تو اللہ اس کو بہت بڑے عذاب میں ڈالے گا ان وقربار کاف لوط کرآنای م (۵) پھران کا صاب لینا ہمارے دیے ہے سورة الفجر محی ہے اس میں تین ہیں إنسر والله الرَّخْمِن الرَّحِيْرِ سروع الشرك نام سے و برام بربان نهایت رم كرنے والا ب رِنْ وَلَيَالِ عَشُرِ ثُو وَالشَّفْعِ وَالْوَثِرِ قُ وَالَّيْنِلِ إِذَا بحری قسم اوردس راتوں کی 🕝 جفت اور طاق کی قسم 🕀 اوررات کی تسم برات کا نے اور ان کی تسم برات کی تسم بر عَ فَي ذَٰ إِلَّ قَدُمُ لِينَى حِبْرِهُ أَ ون ہے اس قسمیں بھے دار اوگوں کے لئے ﴿ کیاتم نے نہیں دیکھا کہ تھا اے رب ن رَبُّك بِعَادِقُ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿ الَّذِي لَمْ نُخُ اد والوں کے ساتھ کیا معامل کیاتھا 🗨 ارم الیوشہ و انتے بڑے بڑے ستون بنانے میں 🕒 بڑے بڑے بڑے بٹروں میں ان کی عمار توں اور

والم جفت يعن بورايا ع مِن عَسِم الاسكريب دو، عار، چه، آنظ، دس، باره وغيره - طاق بعي منفرد اكيلاتنها جع برابرتقتيم بزكيا ماسك جي ايك، مين، إلى مات، نو، كياره وس بهتاسی دانین آدمی بر اليي بميانك آن بن كركائے بنيس كشيس كسي رات كاأساني سے کمشہا نا پہمی التنزی بڑی نعبت ہے۔قرآن ومدیث میں لنمت وبركت سي عراي راأول كاذكرآيا عجيد شي تدرا دمعنان تنزيف كى آخى دمسس راتیں اوذی الجین کے کے داول ك واتيس عيدالفطير

عيدالاضحى كى دائيس، شب مولج

اورشب برأت وغيره-

- 12. वहाँ झरने बहते होंगे।
- 13. ऊँची बिछायत वाले तख्त होंगे।
- 14. मीना और पैमाने (श्रन्ळए जल पात्र, सुरादानी) तरतीब से सामने रखे होंगे।
- 15. और कालीन कतार से बिछाये हुये।
- 16. और मखमल के गालीचों पर गाव तकिये बिछे हुए।
- 17. क्या ऊंट की तरफ उनकी नज़र कभी नहीं गई कि उसे किस तरह पैदा किया गया ?
- 18. और आसमान की तरफ देखा होता कि उसे कैसे ऊंचा उठाया गया ?
- 19. फिर पहाड़ों की तरफ उन्होंने निगाह डाली होती कि कैसे खड़े किये गये हैं ?
- 20. और ज़मीन की तरफ ग़ौर किया होता किस तरह बिछाई गई है ?
- 21. आप नसीहत की बात सुना दो आप तो नसीहत करने वाले हैं।
- 22. आपको इन पर निगरां (निरीक्षक) बनाकर नहीं भेजा गया।
- 23. हाँ मगर जिसने मुँह मोड़ा और इन्कार किया फिर उसकी ख़ैर नहीं।
- 24. कि फिर तो अल्लाह उसको बहुत बड़े अज़ाब (यातना) में डालेगा।
- 25. बेशक उनको तो हमारी तरफ लौट कर आना ही है।
- 26. फिर उनका हिसाब लेना हमारे ज़िम्मे है।

89. फ़ज

सूरह फ़ज मक्का में उतारी गई इस में तीस (30) आयतें हैं।

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. फज (भोर) की क्सम है।
- 2. और दस रातों की।
- 3. जुपत (समसंख्या) और ताक (विषम) की कसम।
- 4. और रात की क़सम जब आसानी से चलती बने।
- 5. क्या ख़ूब अच्छा मज़मून (विषय) है इस क़सम में समझदार लोगों के लिए।
- 6. क्या तुमने नहीं देखां कि तुम्हारे रब ने आद वालों के साथ क्या मामला किया था ?
- 7. इरम वाले जो मशहूर थे बड़े सुतून (स्तम्भ) बनाने में।

- 12. Countless springs shall flow therein.
- 13. (and) there will be thrones (of happiness) raised high,
- 14. and goblets (drinking cups) placed ready.
- 15. and silken cushions ranged,
- 16. and rich carpets spread out,
- 17. Do then, they (who deny resurrection) never look at the camels how they are created?
- 18. And at the sky, how it is raised high?
- 19. And at the mountains, how firmly they are fixed?
- 20. And at the earth, how it is spread out?
- 21. And so (O Prophet,) exhort them; your task is only to exhort;
- 22. you can not compel them (to believe).
- 23. However, as for him who turns away, being bent on denying the truth,
- 24. him will ALLAH cause to suffer the greatest suffering (in the life to come).
- 25. For, behold unto US will be their return,
- 26. and then, verily; it is for US to call them to account.

89. SURAH: AL-FAJR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 30 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Consider the daybreak,
- 2. and the ten nights!
- 3. And consider the multiple and the One!
- 4. And consider the night as it runs its course!
- 5. Considering all this-could there be, to anyone, endowed with reason, a (more) solemn evidence of the truth?
- 6. Are you not aware of how your Sustainer has dealt with (the tribe of) Aad?
- 7. (the people of) Iram (city) famous for making pillars.

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِثُ وَثُمُودُ الَّذِينَ وین دول کی برابری کے لوگ بیا نہیں کے گئے 🕥 اور تود بو بہاڑی اولوں کی چٹائیر ت كاياريب مفنيوط أن يه بس آج کے رب نے ان سب پر عذاب کا کوڑا م بہت فساد کرتے برسایا ال بیشک آئے کا برور دگار گھات ہیں ہے ان ان کا یرمال ہے کرجب عرق اور نغمت ءآزماتا ہے تو اٹ ان کہنا ہے کہ میرے رہ 一ついい اورمسکین کو کھا ناکھلانے سے بلکہ تم لوگ بیم کی عربت نہیں کرتے 🗈 (14) ميت كا مال سميط (IA) جب زمین توریجو بِ مِلْ وَأَيُوكًا فَرَشَّتَ بِشَمَارِصِفَ بِرَصِفَ بِانْدِ صِحْطِ بِيول كُلِّ آلَ اوراس دن جَبْعٌ سامنے لائی مائے الماقة الماقة ج ریا ہوتا اس دن الشرکے عذاب ی نے نہیں دیا ہوگا @ اور جیسا الشرائ مجر) وعرف کاولیائی ماندهانهوگا (T)

- 8. बड़े बड़े शहरों में इनके मकानों और डील डोल (कद काठी) की बराबरी के लोग पैदा नहीं किये गये।
- 9. और समूद जो पहाड़ी वादियों की चट्टानें काट छांट कर मकान बनाने में माहिर थे।
- 10. और फ़िरऔन को यह घमंड था कि उसकी हुकूमत का पाया बहुत मज़बूत है।
- 11. यह सब के सब शरारती लोग थे जिन्होंने मुल्कों में उधम मचा रखा था।
- 12. यह लोग बहुत फ़साद (उपद्रव) करते थे।
- 13. बस आपके 'रब' ने इन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।
- 14. बेशक आपका 'रब' घात में है।
- 15. इन्सान का यह हाल है कि जब इज़्ज़त और नेमत देकर उसका 'रब' उसे आज़माता है तो वह खुश होकर कहता है कि मेरे 'रब' ने मुझे इज़्ज़त दी।
- 16. और जब उसकी रोज़ी तंग करके आज़माता (जांचता) है तो इन्सान कहता है कि मेरे 'रब' ने मुझे अपमानित किया।
- 17. ऐसा नहीं है बल्कि तुम लोग यतीम की इज़्ज़त नहीं करते।
- 18. और मिस्कीन (ग़रीब) को खाना खिलाने की ताकीद नहीं करते।
- 19. मय्यत (मुर्दे) का माल समेट कर खा जाना चाहते हो।
- 20. और माल से बड़ी मोहब्बत करते हो।
- 21. जब ज़मीन तोड़-फोड़ कर चूरा कर दी जायेगी।
- 22. और आपका 'रब' अपना जलवा दिखाएगा फरिश्ते अनगिनत कृतार पर कृतार बांधे खड़े होंगे।
- 23. और उस दिन जहन्नम सामने लाई जायेगी तब इन्सान को समझ आ जायेगी और अब किसी को समझ आ जाने से क्या फायदा ?
- 24. आदमी तमन्ना करेगा कि काश ! आख़िरत की ज़िन्दगानी के लिए नेक अमल (अच्छे काम) मैंने आगे भेज दिया होता।
- 25. उस दिन अल्लाह के अज़ाब जैसा अज़ाब किसी ने नहीं दिया होगा।
- 26. और जैसा अल्लाह अपने मुजरिम को जकड़ेगा वैसा किसी ने बांधा न होगा।

- 8. the like of whom has never been created in all the lands?
- 9. and with (the tribe of) Samud, who hollowed out (huge) rocks in the valley?
- 10. and Firaun was proud of his firm kingdom.
- 11. (It was they) who transgressed all bounds of equity all over the lands,
- 12. and brought about great corruption therein:
- 13. and therefore your Sustainer let loose upon them a scourge of suffering:
- 14. for, verily, your Sustainer is ever on the watch!
- 15. But as for man,- whenever his Sustainer tries him by HIS generosity and by letting him enjoy a life of ease;- he says: "My sustainer has been (justly) generous towards me;"
- 16. whereas, whenever HE tries him by straitening his means of livelihood, he says: "My sustainer has disgraced me!"
- 17. But nay, nay, (O men, consider all that you do and fail to do!) you are not generous towards the orphan;
- 18. and you do not urge one another to feed the needy;
- 19. and you eat out the inheritance (of others, indiscriminately) with devouring greed;
- 20. and you love wealth with boundless love!
- 21. Nay, but (how will you fare on the Day of Judgement,) when the earth is crushed (to atoms) with crushing upon crushing;
- 22. and (the Majesty of) your Sustainer stands revealed, as well as (the true nature of) the angels, rank upon rank?
- 23. And on that Day Hell will be brought (within sight); on that Day man will remember (all that he did and failed to do): but how will that remembrance (then) profit him?
- 24. He will say: "Oh! Would that I had provided beforehand for my life (to come)!
- 25. for, none can make suffer as HE will make suffer (the sinners) on that Day,
- 26. And none can bind with chains like HE.

وك بني رحمت صنوراكرم ملى عليه وللم كوس سال مكريس برطى می اور بہت ہی امتحال کی زندك كزارنى يرسى ميشرك برطرف سے آگ کوستاتے آخر، بحرت کاموقع آیاس کے پہلے میش شری سنادی آج اکفول نے اس شہریں آپ يريابندي لكارهى بي احرم كعبه یں منازکونہیں آنے دیے شري مين سے رہے نہاں دي براى ركاوك دلية بس مرتح اب مقورے ہی وقت میں نے آي اس شري اس شاك سے داخل ہوں گے کہ آئے یر كونى يابندى نهوكى-آج تك الشرفي بشارت قائم ركمى م وحنوراكرم دحمت عالمصل الشر علروسكم كمن والحيى حرم كر من دا فل بوسكة بي مشرك كوم يشرك لئے كديں دا فكم منع بوا-ول بعض اتراني والحاين فضول خرجي برديك مارت بیں کمیںنے یرخ ج کے اور

وه فرج كا-

ف لیعی فیروشردونوں کے

داستے نایاں طور پراس کو

د کلادتے اباس کوافتاری

كرجس داسة كويا عرب ندك

النَّفْسُ الْمُطْمِينَّةُ ﴿ ارْجِعِي إِلَى رَبِّكِ رَاضِيةً چل اینے رب ک طرف تواس سے رامنی ہے وہ بھی تجے سے رامنی ہے 🕥 لُ فِي عِلْدِي ﴿ وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴾ وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴾ یک بندول میں شامل ہوجا 🗇 اورمیری جنت میں داخل ہوجا درة البلد كُنَّ بين أناري كُنَّ اس مِن بينَ آيات بين إسمرالله الترخين الترحي شروع الطرك نام سے جو برام مربان نهایت رح كرنے والا ہے لاَ أُقْدِمُ بِهِذَا الْبَكِينِ ﴿ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهِذَا الْبَكِينِ ﴿ وَ اس سلمرى قسم بيش كرتا بو ل آئي براس شهريس للى يابنديال تحول دى جائيس كى 🕐 والد وَالِدٍ وَمَا وَلَدُ فَ لَقُدُ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبِي فَ اوراولادی گواہی لے لو ﴿ بیشک انسان کو پیدا کر کے ہم نے اسے شقت اور الجس میں ڈالا ہے (أَ يَجْسُبُ أَنْ لَنْ بَقُورُ عَلَيْهِ أَحُدُ ۞ يَقُولُ أَهْلَكُ مُا لا یاانسان نے بیگان کرلیا ہے کمسی کا اس پر قالو نہیں ہے @ فخرے کہنا ہے کمیں نے ڈھیروں مال اُڑا بُنَّا ﴿ أَيْحُسُبُ أَنْ لَمْ يَرَةً أَحَدُ ۞ ٱلَّهُ نَجْعَلُ لَّهُ رکٹا دیا 🛈 اس نے کیا ہجور کھا ہے کہ وق اُسے دیجہ نہیں رہا ہے 💿 کیائم نے اس کے لئے دو آ تھیں نہیں بْنَابُنِ ﴿ وَلِسَاكًا وَشَفَنَايُنِ ﴿ وَهَا يَنِكُ النَّجُلِ يُنِ إِنَّ ت دیس 🕜 اورایات اور دوروس اس و عطاکت (اور م فاس کو دونوں راستوں کی سوچھ او تھ عطاکردی ول اقْتَحُمُ الْعَقْبَةُ أَوْمًا أَدْرِيكُ مَا الْعَقْبَةُ ١ يعرجي ده گفاڻي سي سي سالمت يارنهين او ال تم كومعلوم سے كه وه گف ن كيا ہے الله يَهِ أَوْ الْطَعُمْ فِي يَوْمِرُ زِي مُسْعَبِيُّهُ ﴿ يَتُنِّ مصیبت بن مجنے کا دن مجرانا س یا دن مجری مجوک سے ندھال کسی شخص کو کھانا کھلا دین اس یارشت اتوالے دَامَقُرَبَةٍ إِنَّ أَوُمِسُكِينًا ذَامَثُرَبَةٍ ﴿ ثَمَّ كَا مسی سیم کو @ یا کسی محتاج کو جو فاک میں مل گیا ہو ال مجمریہ کھانا کھلانے والا ایمان بين امنوا وتواصوا بالصّبروتواصوا بالمر والول میں سے ہو اور صبر کی وصیت کرتا ہو اور رحم کی وصیت کرے تو یہ کامیاب ہے ®

- 27. ऐ इत्मीनान पाने वाली जान।
- 28. वापस चल अपने 'रब' कि तरफ तू उससे राज़ी है वह भी तुझ से राज़ी है।
- 29. बस मेरे नेक बन्दों में शामिल हो जा।
- 30. और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।

90. बलद

सूरह बलद मक्का में उतारी गई इस में बीस (20) आयतें हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जी बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. इस शहर की क्सम पेश करता हूँ।
- 2. आप पर इस शहर में लगी पाबन्दियाँ खोल दी जायेंगी।
- 3. बाप और औलाद की गवाही ले लो।
- 4. बेशक इन्सान को पैदा करके हमने उसे मेहनत और उलझन में डाला है।
- 5. क्या इन्सान ने यह ख़याल कर लिया है कि किसी का उस पर क़ाबू नहीं है ?
- 6. गर्व से कहता है कि मैंने ढेरों माल उड़ा कर लुटा दिया।
- 7. उसने क्या समझ रखा है कि कोई उसे देख नहीं रहा है?
- 8. क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बना दीं ?
- 9. और एक ज़बान और दो होंठ उसको दिए।
- 10. और हमने उसको दोनों रास्ते की सूझ-बूझ दी।
- 11. फिर भी वह घाटी से सही सलामत (सुरक्षित) पार नहीं हुआ।
- 12. तुमको मालूम है कि वह घाटी क्या है ?
- 13. मुसीबत में फंसे हुये कि गर्दन छुड़ाना।
- 14. या दिन भर की भूख से निढाल किसी आदमी को खाना खिला देना।
- 15. या रिश्ते नाते वाले किसी अनाथ को।
- 16. या किसी गरीब (बेताकृत मुफलिस) को जो मिट्टी में मिल गया हो।
- 17. फिर यह खाना खिलाने वाला ईमान वालों में से हो और सब्र की वसीयत करता हो और रहम की वसीयत करे तो यह कामयाब है।

- 27. (But unto the righteous ALLAH will say:) "O you human being, that has attained to inner peace!"
- 28. "Return unto your Sustainer, well- pleased (and) pleasing (HIM):"
- 29. "Enter then, together with MY (other true) bondmen"-
- 30. "Yes! Enter you MY Paradise!" 1 30 14 90. SURAH: AL-BALAD

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 20 AYATS.

In the name of ALLAH,

- 1. Nay, I call to witness this city;-
- 2. this land in which you are free to dwell,-
- 3. and (I call to witness) parent and offspring:
- 4. Verily, We have created man into (a life of) pain, toil and trial.
- 5. Does he then, think that no one has power over him?
- 6. He boasts, "I have spent wealth abundant!"
- 7. Does he then, think that no one sees him?
- 8. Have WE not given him two eyes?
- 9. and a tongue, and a pair of lips?
- 10. and shown him the two highways (of good and evil)?
- 11. But he has not tried to ascend the steep uphill road;
- 12. And what could make you conceive what it is, that steep uphill road?
- 13. (It is) the freeing of one's neck from bondage, (or debt);
- 14. or the feeding, upon a day of hunger,
- 15. of an orphan near of kin,
- 16. or of a needy (stranger) lying in the dust-
- 17. and to be among those who are faithful, and enjoin upon one another-patience in adversity, and enjoin upon one another-compassion.

لعن رات كى اندصيارى ب دن کی روشنی براینا نسان كورخطره بناربت ر في قوت جم كرك مقالج يرزآماوے الطروسي سے يہ خطره محلى نيس-

المَهْنَةُ وَ وَالَّذِينَ (اوری بماری آیات کے انکاری بیں دہ آلئ بشر الله الرَّحْمٰنِ الرَّحِبْو شروع الشرك ام سے بوبرا مهر بان نهایت رح كرنے والا ب الله والقيراذات ہے واراس کی دعوب چڑ سے کی (اور جاندی جب اس کے پیچے آوے (اور دن کی جب عاوے ، اور اور اور اس کادر اس کے ے اوررات کی جب اس الما ﴿ وَنَفْسِ وَمَ ا یا 🕤 اورتب مان قیم اواس کیس زاس و معرفهای بنایا 🕤 ب ان میں کا ایک بڑا بد بخت آتھ اس اس تب الشرك رسول نے ان سے کہا خردار ہوماؤی الشرك اونا الله فعفرة ه پانی پینے کی باری ہے اس اسموں زاسول کی بات کو جموط بتایا اوراؤنٹن کے باؤل کا طاقہ الم میر آوان اورسی کے اور کی کیا کی ایک کیا کی ایک کیا کی ایک کا نے ان کے گناہوں محسب ان پرعذاب کاربلاچلایا اور مارکوٹ کر برابر محردیا

00

- 18. यह लोग हुए सीधी राह वाले नेक सदा चारी (सौभाग्यशाली)।
- 19. और जो हमारी आयतों के इन्कारी हैं वह उल्टी राह वाले बदबख़्त (दुर्भागी) हुए।
- 20. उनको आग में मूंद दिया जायेगा।

91. शम्स

सूरह शम्स मक्का में उतारी गई इस में पंद्रह (15) आयतें हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. क्सम है सूरज और उसकी धूप चढ़ने की।
- 2. और चांद की जब उसके पीछे आये।
- 3. और दिन की जब उसको रौशन करे।
- 4. और रात की जब उस पर छा जाये।
- 5. और क्सम है आसमान की और उसकी जिसने उसको बराबर बना दिया।
- 6. और क्सम है ज़मीन की और जिसने उसको बिछाया।
- 7. और जी जान की क्सम और उसकी जिसने उसे ठीक ठाक बनाया।
- 8. फिर उसने बुराई और परहेज़गारी में तमीज़ का सलीक़ा इन्सान के जी में डाल दिया।
- 9. बेशक जिस किसी ने अपने नफ्स (आत्मा) की पाकीज़गी (पवित्रता) को उभरने दिया वह कामयाब रहा।
- 10. और अपने ज़मीर (अंतकरण) के पाकीज़ा इशारे को जिसने दबा दिया वह नाकाम रहा।
- 11. हक् को झुठलाने में समूद ने बहुत शरारत की।
- 12. जब उनमें का एक बड़ा बदनसीब उठा।
- 13. तब अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा ख़बरदार हो जाओ यह अल्लाह की ऊंटनी है और यह इसके पानी पीने की बारी है।
- 14. उन्होंने रसूल की बात को झूठ बताया और ऊंटनी के पाँव काट डाले, फिर तो उनके रब ने उन के गुनाहों के सबब उन पर अज़ाब (यातना) का रेला चलाया और मार कूट कर बराबर कर दिया।
- 15. और किसी के भी पलट कर पीछा करने का उसे अंदेशा नहीं।

- 18. Such are the people of the right side, who have attained to righteousness;
- whereas those who are bent on denying the truth of OUR messages- they are the people of the left side who have lost themselves in evil;
- 20. (with) fire closing in upon them:

1 20 15

91. SURAH: ASH:SHAMS

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 15 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Consider the sun and its radiant brightness.
- 2. and the moon as it reflects the sun.
- Consider the day as it reveals (glory to) the world,
- 4. and the night as it conceals it-(the day-in dark).
- 5. Consider the sky and its wonderous make;
- 6. and the earth and all its expanse!
- 7. Consider the human self, (its soul and conscience), and how it is formed in accordance with what it is meant to be,
- 8. and how it is inspired with moral failings as well as with consciousness of ALLAH!
- To a happy state indeed attain he who causes this (self) to grow in purity;
- 10. and truly lost is he who buries it (in darkness).
- 11. To (this) truth gave the lie, in their overweening arrogance, (the tribe of) Samud,
- 12. When that most wicked man from among them rushed (to commit his evil deed),
- 13. although ALLAH's messenger had told them,: "It is a she-camel belonging to ALLAH, so let her drink (and do her no harm)!"
- 14. But they gave him the lie, and cruelly slaughtered her- whereupon their Sustainer visited them with utter destruction for this their sin, destroying them all alike.
- 15. And to HIM is no fear of its consequences.

1 15 16

| 7 | الب ۱۹۲ | h. 6 |
|--|--|-------|
| | يَاتِهَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ وَلَا الْكِلِ مَتِينًا (٩) اللهُ وَلَا الْكِلِ مَتِينًا (٩) اللهُ وَلَا اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الل | |
| | سورة الليل كمر مرش اترى اس بين اكيسل اليس بين | 3 |
| Management of the last of the | إِسْمِ اللهِ الرَّحْفِنِ الرَّحِبْمِ | |
| The residence of the second | سروع اللے کام سے جوبرا مہر اِن نہایت رحم کرنے والا ہے | |
| SECTION FRANCISCO SECTION AND ADDRESS OF THE PERSON ADDRESS OF THE PERSON AND ADDRESS OF THE PERSON AD | النَّيْلِ إِذَا يَغْشُلُ ۚ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿ وَمَاخَلَقَ | |
| | ن کی قسم جب چھاجاوے (اور دن کی قسم جب جمک اسطے (اور جس نے نر اور ا | |
| 5000 | نَكُرُ وَالْدُ نُنْكُ أَلِنَ سَعْيَكُمْ لَشَتَّى أَنْ فَأَمَّا مَنْ أَغْطِ | |
| - | الله المراع ﴿ بَيْكَ مِنْ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللللَّاللَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا | |
| | ر چلا @ بیسل بات کو سے مانا (بیرتو ہم اس کو سہولت اور آسانی کردیں گے © جس | |
| NAME AND POST OFFICE ADDRESS OF THE PARTY OF | كَامَنُ بَخِلَ وَاسْتَغْنَ وَكُنَّ بَ بِالْحُسْنَ فَفَنْيَسِرُهُ | |
| The state of the s | نیل کی اور لا پرواہی کی 🕥 اور نیک بات کو جھٹلاتا رہا 🏵 پیرتو ہماس کو | 12 |
| / | عُسْرِكِ أَ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ لِذَا تَرَدِّكِ أَن | الل |
| 124 | عَنْ مِنْ طَيْلِ مِنْ مَا مِنْ مَا إِي كَرُفِعِ مِن مُرِع كَاتُواس كامال اس كَيْ كُوكا مِنْ أُوكِ كَا الله من الله من الله و النفط من المراع الله الله الله الله الله الله الله ال | دهر |
| MANAGEST NATION PARK | يَّ عَلَيْنَا لَلْهُمُائِ ﴿ وَإِنَّ لِنَا لَلْإِخْرَةُ وَ الْأُولِ ﴾ عَلَيْنَا لَلْهُمُائِ وَالْأُولِ ﴾ | |
| | اَنْ اَنْ اَنْ اللَّا اللَّ | |
| Benevalores | نے کو انگا کے پیشکتی آگے ہوکنا کر دیا ہے (اس بین ما پراے کا (ا) | - |
| | نَىٰ كُذَّبُ وَتُولِيْ وَسُبُعِينَهُا الْا تُفْعَ ﴿ الَّذِي مُ | 75720 |
| | ي ني يى بات كوجمللا يا ورحق سومنه جيرا الله جوالله سيبت دُنن والا بوگاه اس كي بيانيا جائكا 🕦 وه اينا مال الله كي داه | جس |
| STREET SHE SHARESTONE | أَيْ مَالَهُ يَتَزَكُّ ﴿ وَمَا لِلاَحَدِ عِنْكُ لَا مِنْ | ابؤ |
| White State of the Party of the | رتاب تاکرگنا ہوں سے پاک ہو جائے اس پر سی کا کھا صان باقی ندر باجس کا بدلہ چکانے کے اس کے درائے | W W |
| | مَهُ تَجُزَّتُ ﴿ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجُهِ رَبِّهِ الْاعْلَىٰ ﴿ | |
| | ال دیت ہو ا گراپنے بلنداوراعل رب کی رضامندی چاہنے کے لئے ہی دیتا ہے ا | 2 |
| 1 | ولسوف برض الله المائدة | |
| 1 | | |

849

ملاراہ بنادی گرچلنے والے کی مرض ہے جا ہے سیدسی راہ چلے یا چرگراہی کے گڑھے میں جاگرے۔

92. लेल

सूरह लैल मक्का में उतारी गई इस में इक्कीस (21) आयतें हैं।

"शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. रात की क़सम जब छा जावे।
- 2. और दिन की क्सम जब चमक उठे।
- 3. और जिसने नर (पुरूष प्राणी) और मादा (स्त्री प्राणी) को पैदा कर दिया।
- 4. बेशक तुम सब की कोशिश अलग अलग प्रकार की है।
- 5. फिर जिसने अल्लाह के लिए दिया और (बुराई से) बच कर चला।
- 6. भली बात को सच माना।
- 7. फिर तो हम उसको सहूलत और आसानी कर देंगे।
- 8. जिसने कंजूसी की और लापरवाही की।
- 9. और नेक बात को झुठलाता रहा।
- 10. फिर तो हम उसको धीरे से तंगी में ढकेल देंगे।
- 11. जब वह तबाही के गढ़े में गिरंगा तो उसका माल उसके कुछ काम न आयेगा।
- 12. हिदायत की राह बता देना हमारे ज़िम्मे रहा।
- 13. और आख़िरत भी हमारी और दुनिया भी हमारी है।
- 14. मैंने तुमको अंगारे फेंकती आग से चौकन्ना कर दिया है।
- 15. बड़ा बदनसीब होगा जो उसमें जा पड़ेगा।
- 16. जिसने सच्ची बात को झुठलाया और सत्य से मुँह फेरा।
- 17. जो अल्लाह से बहुत डरने वाला होगा वह उस आग से बचा लिया जायेगा।
- 18. वह अपना माल अल्लाह की राह में देता है ताकि गुनाहों से पाक हो जाये।
- 19. उस पर किसी का कुछ एहसान बाक़ी न रहा था जिसका बदला चुकाने के लिए माल देता हो।
- 20. मगर अपने बुलन्द और आला (सर्वश्रेष्ठ) रब की रज़ामन्दी (प्रसन्नता) चाहने के लिए ही देता रहा।
- 21. ऐसा आदमी बदला पाकर बहुत जल्द राज़ी और ख़ुश खुश हो जायेगा।

92. SURAH: AL-LAIL

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 21 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Consider the night as it covers (the earth) in darkness.
- 2. and the day as it rises bright!
- 3. Consider the creation of the male and the female!
- 4. Verily, (Omen) you aim at most divergent ends!
- 5. Thus, as for him who gives (to others in charity), and is conscious of ALLAH;
- 6. and believes in the truth of ultimate good,-
- 7. for him shall WE make smooth the path towards (ultimate) ease.
- 8. But as for him who is a greedy miser, and thinks that he is self-sufficient, (and behaves carelessly),
- 9. and calls the ultimate good a lie-
- 10. for him shall WE make easy the path towards (ultimate) hardship:
- 11. and what will his wealth profit him when he goes down (to his grave)?
- 12. Behold, it is indeed for US to grace (you) with guidance,
- 13. and, behold, OURS is (the Dominion over) the life to come, as well as (over) this earlier part (of your life);
- 14. and so I warn you of the raging Fire.
- 15. (the Fire) which none shall have to endure but that most wretched- unfortunate one-
- 16. who gives the lie to the truth and turns away (from it).
- 17. Far distant from it shall remain he, who is truly conscious of ALLAH;
- 18. he that spends his possession (on others) so that he might grow in self-purification;
- 19. not as payment for favours received,
- 20. but only out of a longing for the countenance of his Sustainer, the All-Highest;
- 21. and such, indeed, shall in time be well-pleased. 1 21 17

سورهٔ صنحی کی ہے اس میں گئی الله آیتیں ہیں يا يتفا بيم جلَّه دى 🕤 اورآكِ وَمُ خيا يارآكِ دالو (اورسوال کرنے والے کو جھڑکی مذ دو (اور جو بی آئے کے رب کی نفت ہے اسریال کو شروع الليكنام سيوبرا مهريان نهايت رحم كرف والا ادر کا آگے سے وہ او تھ ت ال يسجبآت فالغ ,906 ہوں توعبادت ین شغول ہوجاد ﴿ اور ایندب ی طرف دل

100 9

93. जुहा

सूरह जुहा मक्का में उतारी गई इस में ग्यारह (11) आयतें हैं।

''शुरु अल्लाह के बाम से जो बड़ा मेहरबाव बहुत बहुत रहम करवेवाला है।''

- 1. दिन की रौशनी की क्सम है।
- 2. और रात की जब वह छा जाये।
- 3. आपके 'रब' ने आपको नहीं छोड़ा और आप से नाराज़ भी नहीं हुआ।
- 4. और अलबत्ता आखिरत तो आपके लिए दुनिया से बहुत बेहतर है।
- 5. आपका रब आपको इतना देगा कि आप राज़ी राज़ी हो जायेंगे।
- 6. क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया था फिर जगह दी।
- 7. और आपको हमने पाया कि आप हमारी राह की तलाश में खो गये थे तब हमने आपको अपनी राह बता दी।
- 8. और हम ने आपको तंगदस्त (निर्धन) पाया फिर गृनी (मालदार) कर दिया।
- 9. बस जो यतीम है उस पर दबाव न डालो।
- 10. और सवाल करने वाले (माँगने वाले) को झिड़की न
- 11. और जो भी आपके 'रब' की नेअमत है उसे बयान करो।

94. इनशिराह

सूरह इनशिराह मक्का में उतारी गई इस में आठ (8) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. क्या हमने आपके लिए आपका सीना खोल नहीं दिया?
- 2. और क्या आप से वह बोझ नहीं उतार दिया ?
- 3. जिसने आपकी पीठ झुका दी थी।
- 4. हमने आपका ज़िक्र बुलंद कर दिया।
- 5. बस बेशक हर मुशकिल के साथ आसानी है।
- 6. यकीनन हर कठिनाई के साथ आसानी है।
- 7. बस जब जब आप फारिंग हों तो इबादत में लीन हो जाओ।
- 8. और अपने रब की तरफ दिल लगा लो।

93. SURAH: ADH-DHUHA

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 11 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Consider, the bright morning hours.
- 2. and the night when it grows still and dark.
- 3. Your Sustainer has not forsaken you, nor is HE displeased with you.
- 4. And indeed, the life to come will be better for you than this earlier part (of your life)!
- 5. And indeed, in time will your Sustainer grant you (what your heart desires), and (so much) that you shall be well-pleased.
- 6. Has HE not found you an orphan, and given you shelter?
- 7. And found you wandering in search of path, (so HE) guided you?
- 8. And found you in want, and given you sufficiency?
- 9. Therefore, to the orphan shall you never wrong,
- 10. And as for him who asks, (seeks help), do not repulse him.
- 11. But of the bounty of your LORD-speak (and mention) it. 1 11 18

94. SURAH: AL - INSHIRAH

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 8 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Have WE not opened up your heart-
- 2. and eased from you the burden-
- 3. that had weighed so heavily on your back?
- 4. And (have WE not) raised you high in dignity?
- 5. And, behold with every hardship (there) is ease;
- 6. Verily, with every hardship (there) is ease!
- 7. Hence, when you are freed (from distress) remain steadfast.
- 8. And unto your Sustainer turn all your attention. 1 8 19



تفسيرسورة العلق ؟ والماع قلم سانسان كوعلم ديا اور اس كوده علم ديا جواب تك انسا مانا منها نزول قرآن كے زمانے سے اب تک انسان نے چروں ى فاصيت كاعلم ماصل كرے بو تحنیک ترتی کی ہے وہ سابقذ آ سےزیادہ ہے-ہوایں اُڑنے كرمانديركمندوالآيا أوشين دورس نهایت بی مفیدیزن دریافت کرلس اس برانسان کے لے بخطرہ بنا ہواہے کہ وہ اپنے آپ کوعنی ہے برواہ غیرجوا مدہ اورب لكام مج كرشرارت ظلمادر فسادميائے كا-اوريمي كي يم اين دورس دی در ای اس سے أخرى بى اورآخى كتاب الارنى كالك مقعدري بكراباس دنیا کا انفری دورہاوراہے ايك ايسا برايت نامرديا مائة واس كاعلى ترقى س العبرابر ياد دلا ارب كراس الني رب كي السريد في كرمانا ير-

95. तीन

सूरह तीन मक्का में उतारी गई इस में आठ (8) आयतें हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. अन्जीर और ज़ैतून की क्सम है।
- 2. और तूरे सीनीन (सीनीन तूर के पहाड़) की।
- 3. और इस अमन वाले शहर की क्सम।
- 4. बेशक हमने इन्सान को बहुत ही ख़ूबसूरत सांचे में ढाल कर बनाया।
- 5. फिर हमने उसे नीचे गिरा कर बहुत ही ख़स्ता (जरजर) हालत में डाल दिया।
- 6. मगर जो ईमान लाये और नेक काम किये तो उनके लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।
- 7. फिर इस बयान के बाद तुमको इन्साफ के दिन के मामले में कौन झुठला सकता है ?
- 8. क्या अल्लाह सब फैसला करने वालों से अच्छा फैसला करने वाला नहीं ?

96. अलक

सूरह अलक मक्का में उतारी गई इस में उन्नीस (19) आयतें हैं।

"शुरः अल्लाह के बाम से जो बड़ा मेहरबाब बहुत बहुत रहम करवेवाला है।"

- अपने 'रब' का नाम लेकर पढ़ो जिसने सबको पैदा किया।
- 2. इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।
- 3. पढ़ते रहो और आपका 'रब' ही सब से बढ़कर करम (कृपा) वाला है।
- 4. जिसने कलम से इल्म (ज्ञान) सिखाया।
- 5. इन्सान को ऐसा इत्म सिखाया जो इन्सान जानता न था।
- 6. हाँ देखो अब इन्सान शरारत पर उतर आयेगा।
- 7. इसलिए कि अपने आपको गनी (मालदार) समझ लिया है।
- 8. बेशक आपके 'रब' की तरफ सबको लौटना है।

95. SURAH: AT-TEEN

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 8 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Consider the fig and olive,
- 2. and Mount Sinai,
- 3. and this Land secure!
- 4. Verily, WE created man, (human), in the best conformation,
- 5. and thereafter WE reduce him to the lowest of low;-
- 6. excepting only such who attain to faith and do good deeds, and theirs shall be a reward unending!
- 7. What then, (O man!) could henceforth cause you to give the lie to this moral law?
- 8. Is not ALLAH the most just of judges?

1 8 20

96. SURAH: AL-ALAQ

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 19 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Read in the name of your Sustainer, Who has created-
- 2. created man out of a germ-cell!
- 3. Read for your Sustainer is the Most Bountiful One,
- 4. Who has taught (man) the use of the pen
- 5. Taught man what he did not know!
- 6. Nay, verily, man transgresses all bounds,
- 7. whenever he believes himself to be self-sufficient.
- 8. For, behold, unto your Sustainer is the return (of all).

العده بندے کے لخالت ك قرب كاسب سے برا ذراح والسكلام كاارشا دكرامي مح المتى بل جن كى صفت قرآن، توريت اورانجيل مي بان بوني ديجية (٢٨) الفتح آيت عوا یکی ادرے کوالٹرکے آت سواكسي كوسجده كرناحرام وي

نَهِي فَ عَبْلًا إِذَا صَلَّ اللَّهِ أَرْءَيْتُ إِنْ كَانَ عَ میرےبندے کوجب کروہ نازیر طفتاہ ن ذرا دیکھوکہ ہدایت یا کر کو نی اورخوف فدائی تاکیدرے تواسیوں کئ شے کے (۱۲) مطاری و اگر جموط بر برا برد مکھ رہا ہے اس پہرگز ہاری کوٹسے نے نہیں سکتا اگروہ اپن حرکت سے باز ندا یا تو ہم اس کی میثیان كَاذِبَةٍ خَاطِئةٍ ﴿ فَلَيْنَاهُ نَا کے (D) ایس جبوٹی اور خطاکار پیٹانی کی یہی سزاہے (ا) پوٹ بھی تقاطے کے این بلال ان کالال ئے لیتے ہیں 🕟 آھے ہرگزاس کے کہنے ہیں نہ آنا سجیہ کئے میاؤاور ہمارا تقرب ماصل ورة الت رميرين بازل بون اس من بانخ آيتين بين

سروع اللرك نام سے جو بڑا مہر بان نہایت رحم مرنے والا ہے

شروع الشركة نام سے جو بڑا مهر بان نهايت رحم كمنے والا ہے 852

- 9. क्या तुमने उसको देखा जो मना करता है।
- 10. मेरे बन्दे को जबिक वह नमाज़ पढ़ता है।
- 11. ज़रा देखो कि हिदायत (सन्मार्ग) पाकर कोई नमाज़ पढ़े।
- 12. और अल्लाह के ख़ौफ की ताकीद करे तो उसे कोई क्यों मना करे।
- 13. भला देखो तो किसी ने अगर झूठ पर कमर बांधी और मुँह फेर लिया।
- 14. तो क्या उसे इल्म (ज्ञान) नहीं कि अल्लाह उसे बराबर देख रहा है।
- 15. यह हर्गिज़ हमारी पकड़ से बच नहीं सकता अगर वह अपनी हरकतों को छोड़ेगा नहीं तो हम उसकी पेशानी पकड़ कर घसीटेंगे।
- 16. ऐसी झूठी और ख़ताकार पेशानी की यही सज़ा है।
- 17. बस वह भी मुकाबले के लिए अपनी मिजलस वालों को बुला लावे।
- 18. हम भी जहन्नम के अफसरों को बुलाये लेते हैं।
- 19. आप हर्गिज़ इसके कहने में न आना सजदा किये जाओ और हमारा तक़र्रुब (निकटता) हासिल करते रहो।

97. कद

सूरह क़द्र मक्का में उतारी गई इस में पाँच (5) आयतें हैं।

"शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरवान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. बेशक हमने इस कुरआन को शबे क़द्र में उतारा है।
- 2. और आपको मालूम है कि क़द्र वाली रात क्या है ?
- 3. शबे कृद्र हजार महीनों से भी बेहतर रात है।
- 4. इस रात में फरिश्ते और रुहुल अमीन (जिब्रील) उतरते हैं अपने रब से हर कास का हुक्म लेकर।
- 5. इस रात में फज़ (भोर) के तुलूअ (उदय) होने तक सलामती है।

98. बय्यिनह

सूरह बय्यिनह मदीने में उतारी गई इस में आठ (8) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहत बहत रहम करनेवाला है।"

1. किताब वालों में से काफिर और मुश्तरिक लोग अपनी हरकत से रूकने वाले नहीं थे यहाँ तक कि उनके पास खुली दलील आ जाये।

- 9. Have you ever considered him, who tries to prevent-
- 10. a slave (of ALLAH) from praying?
- 11. Have you considered whether he is on the right way,
- 12. or is concerned with consicousness of ALLAH?
- 13. Have you considered whether he may (not) be giving the lie to the truth and turning his back (upon it)?
- 14. Does he then, not know that ALLAH sees (all)?
- 15. Nay, if he desist not, WE shall most surely drag him down upon his forehead-
- 16. the lying, rebellious forehead!
- 17. And then, let him summon (to his help) the counsels of his own (spurious) wisdom,
- 18. (the while) WE shall summon the forces of heavenly chastisement (to deal with him).
- 19. Nay, pay no heed to him but prostrate (in adoration) yourself (before ALLAH) and draw close (unto HIM).

(14th Sajda-e-Tilawat).

1 19 21

97. SURAH: AL-QADR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 5 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Behold, from on high have WE bestowed this (Quran) on the Night of Honour.
- 2. And what could make you conceive what it is, that Night of Honour?
- 3. The Night of Honour is better than a thousand months;
- 4. In hosts descend in it angels and the Spirit by the permission of their LORD, with all decrees,

5. (of) peace until the rise of dawn-

1 5 22

98. SURAH: AL-BAYYINAH

REVEALED AT MADINA (CONTAINS) 8 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

deviated people among the followers of the earlier revelations, and polytheists would give up until there comes unto them the clear evidence of the truth.

- 2. यानी इस शान का एक रसूल अल्लाह की तरफ से आये जो पाक सहीफ़ा (आसमानी किताब) पढ़कर सुनाये।
- 3. जिसमें पहली किताबों का बंदोबस्त और तालीम का निचोड़ मौजूद हो।
- 4. और किताब पाकर भी जिन्होंने मतभेद किया वह साफ दलील आने के बाद भी आपस की फूट से नहीं रूके।
- 5. जबिक उन्हें सिर्फ यही हुक्म दिया गया था कि एक अल्लाह की तरफ के होकर इबादत करें और अपना दीन उसी के लिए ख़ालिस कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात देते रहें, इन्तेज़ामी बंदोबस्त वाला यही असल दीन है।
- 6. बेशक जो लोग किताब वाले होकर भी काफिर मरे और मुश्रिकीन वह सब के सब दोज़ख (नर्क) की आग में होंगे इसमें हमेशा रहेंगे यही लोग बहुत बुरी मख़लूक़ हैं।
- 7. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अमल (कर्म) किये यह लोग मखलूकात (जीवधारी प्राणी) में सब से अच्छे हैं।
- 8. इनका बदला इनके 'रब' के यहाँ हमेशा रहने की जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वह इन में हमेशा हमेशा रहेंगे अल्लाह इनसे राज़ी हुआ और यह अल्लाह से राज़ी हुए यह हर उस आदमी के लिए है जो अपने 'रब' से डरता है।

99. जिलजाल

सूरह ज़िलज़ाल मदीने में उतारी गई इस में आठ (8) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

1. जब धरती बड़े ज़ोर के जलज़ले (भूकंप) से हिला दी जायेगी।

- 2. A Messenger from ALLAH, conveying (unto them) revelations blest with purity,
- 3. wherein there are ordinances of evertrue soundness and clarity (common in all divine revelations).
- 4. Now those who have been given revelation aforetime did break up their unity (of faith) after such an evidence of the truth had come to them.
- 5. And, they were not enjoined anything (new) but that they should worship ALLAH, sincere in their faith in HIM alone, turning away from all that is false; and that they should establish prayers; and that they should spend in charity: for, this is a moral law endowed with ever-true soundness and clarity.
- 6. Verily, those who (despite all evidence) are bent on denying the truth- (be they) from among the followers of earlier revelations, or from among those (polytheists) who ascribe divinity to aught beside ALLAH- will find themselves in the fire of Hell, therein to abide (for ever): they are the worst of all created beings.
- 7. (And), verily, those who have attained to faith and do righteous deeds- it is they, they who are the best of all created beings.
- 8. Their reward (awaits them) with ALLAH: gardens of perpetual bliss, through which running waters flow, therein to abide beyond the count of time; well pleased is ALLAH with them, and well pleased are they with HIM: all this awaits for him, who, of his Sustainer stands in awe!

99. SURAH: AZ-ZILZAAL

REVEALED AT MADINA (CONTAINS) 8 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

When the earth is shaken with her (last) mighty earth quake;

1.

وقال الدنسان ماله سورة العادلت مكترين نازل فراني محتي اس بين گياره آيت بين بين بشرالله التحفن الرحام سروع الشرك نام سے وبرا مهر بان نها بت رحم كرنے والاہ عُنُودُ ﴿ وَإِنَّهُ عَ اوربینک انسان اس حقیقت اور بیشک وه مال کی مجتت میں برط اسخت ہے ئىدىد 🐧 ہے وہ سب ظاہر کیا جائے گا 🛈 بیشا ،ان کارب ان سےاس دل ایس طرح خرب ركعة والاسكان

ف يصفات بين ان گھوڙول کى جولوائ کے کام آتے ہيں ، انسان کے حکم پراس کی وفادار^ی پراپنی جان خطرے میں ڈال کر اس کے حکم تیمیل کرتے ہیں اور انسان اپنے پالتو نوجی گھوڑوں سے جس گیا گرزا ہے کہ اسے اپنے الک کے حکم پردوڑ ناشکل پڑتا سے ت

CII PO

854-A

- 2. और धरती अपने अंदर के सारे बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।
- 3. और इन्सान कहेगा कि इसको क्या हो गया।
- 4. उस दिन वह अपनी खबरें बयान करेगी।
- 5. इसलिए कि तुम्हारा 'रब' धरती को बयान करने का हुक्म देगा!
- 6. उस दिन लोग अलग—अलग टोलियों में फैले होंगे ताकि अपने अपने आमाल (कर्मो) का नतीजा खुद देख लें।
- 7. फिर जिसने जर्रा (कृण) बराबर भी नेक अमल किया है वह उसको देख लेगा।
- 8. और जिसने ज़र्रा भर बुरा काम किया होगा वह उसको देख लेगा।

100. आदियात

सूरह आदियात मक्के में उतारी गई इस में ग्यारह (11) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान

बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. उन घोड़ों की क्सम जो हांफते हुए दौड़ते हैं।
- 2. फिर पत्थर पर नाल भरी टाप मार कर चिंगारी झाड़ते हैं।
- 3. फिर सुबह के वक़्त छापा मारते हैं।
- 4. फिर उस मौके पर धूल उड़ाते हैं।
- 5. फिर उसी वक़्त दुश्मनों की फ़ौज में जा घुसते हैं।
- 6. बेशक इन्सान अपने 'रब' का बड़ा नाशुक्रा है।
- 7. और बेशक इन्सान इस हक़ीक़त पर खुद शाहिद (गवाह) है।
- 8. और बेशक वह माल की मुहब्बत में बड़ा सख़्त है।
- 9. क्या वह नहीं जानता कि एक दिन क्ब्रों के मुर्दे बाहर निकाल लिये जायेंगे।
- 10. और जो दिलों में है वह सब ज़ाहिर कर दिया जायेगा।
- 11. बेशक उनका 'रब' उनसे उस दिन अच्छी तरह ख़बर रखने वाला है।

- 2. and (when) the earth throws up her burdens, (from within),
- 3. and man cries out, "What has happened to her?"
- 4. on that Day will she recount all her tidings,
- 5. as your Sustainer will have inspired her to do,
- 6. On that Day will all men come forward in groups, sorted out, to be shown their (past) deeds.
- 7. And so, he who shall have done an atom's weight of good, shall see it;
- 8. and he who shall have done an atom's weight of evil, shall see it. 1 8 24

100. SURAH: AL-ADIYYAT

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 11 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. By (the horses) that run, with panting (breath),
- 2. which strike fire sparks with theirs hoofs.
- 3. rushing to assault at morning.
- 4. thereby raising clouds of dust,
- 5. thereby storming (blindly) into any assembly (of enemies)!
- 6. Verily, towards his Sustainer man is most ungrateful-
- 7. and to this (fact), behold, he (himself) bears witness indeed: (by his deeds)-
- 8. for, verily, to the love of wealth is he most ardently devoted.
- 9. Does he not know that (on the Last Day,) when all that is in the graves is raised and brought out,
- 10. and all that is (hidden) in men's hearts is laid open-
- 11. that on that Day their Sustainer (will show that HE) has always been fully aware of them?



200

Q= +4

101. कारिअह

सूरह कारिअ़ह मक्का में उतारी गई इस में ग्यारह (11) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. सबको खड़खड़ा डालने वाली घटना।
- 2. वह खड़खड़ा डालने वाली घटना क्या होगी ?
- 3. और तुमको क्या ख़बर कि वह खड़खड़ा देने वाली घटना क्या होगी ?
- 4. जिस दिन इन्सान बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगे।
- 5. और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।
- 6. तो जिसके नेक आमाल (अच्छे काम) तौल में भारी होंगे।
- 7. वह दिल पसंद ऐश में राज़ी और खुश होगा।
- 8. और जिसके नेक अमल का तौल वज़न में कम होगा।
- 9. तो उसका ठिकाना "हावियह" (यानी आग) का गढ़ा होगा।
- 10. और आपको क्या मालूम कि वह क्या चीज़ है।
- 11. वह भड़कती तेज़ आँच का लावा है।
 102. तकासुर

सूरह तकासुर मक्का में उतारी गई इस में आठ (8) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. तुमको माल की लालच ने ग़फलत में डाल दिया।
- 2. यहाँ तक कि तुम अपनी कब्रों में दफन हुए और देख लिया।
- 3. ऐसे बेफ़्क्र मत रहो बहुत जल्द तुमको मालूम होना है।
- 4. हर्गिज़ तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए आगे तुम जान लोगे।
- 5. अगर तुमको इस तकासुर (लालच) के अंजाम का इल्म होता और इल्म पर यकीन होता। (तो तुम्हारा यह तरीका न होता।)
- 6. सच है कि तुम ज़रूर जहन्नम को देखोगे।
- 7. फिर तुम अपनी आँखों से ऐसा साफ साफ देखोगे कि तुमको यकीन आ जायेगा।
- 8. फिर उस दिन तुम से नेमतों के बारे में पूछा जायेगा।

101. SURAH: AL-QAARI'AH

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 11 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Oh! The sudden calamity!
- 2. How awesome will be that sudden calamity!
- 3. And what could make you conceive what that sudden calamity will be?
- 4. (it will occur) on the Day when men will be like moths swarming in confusion,
- 5. and the mountains will be like carded wool.
- 6. And then, he whose weight (of good deeds) will be heavy in the balance,
- 7. Shall find himself in a happy state of life;
- 8. whereas he whose weight (of good deeds) would be light in the balance,
- 9. Shall be engulfed by an abyss!
- 10. And what could make you conceive what that abyss will be?
- 11. A Fire fiercely burning!

1 11 26

102. SURAH: AT-TAKASUR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 8 AYATS.

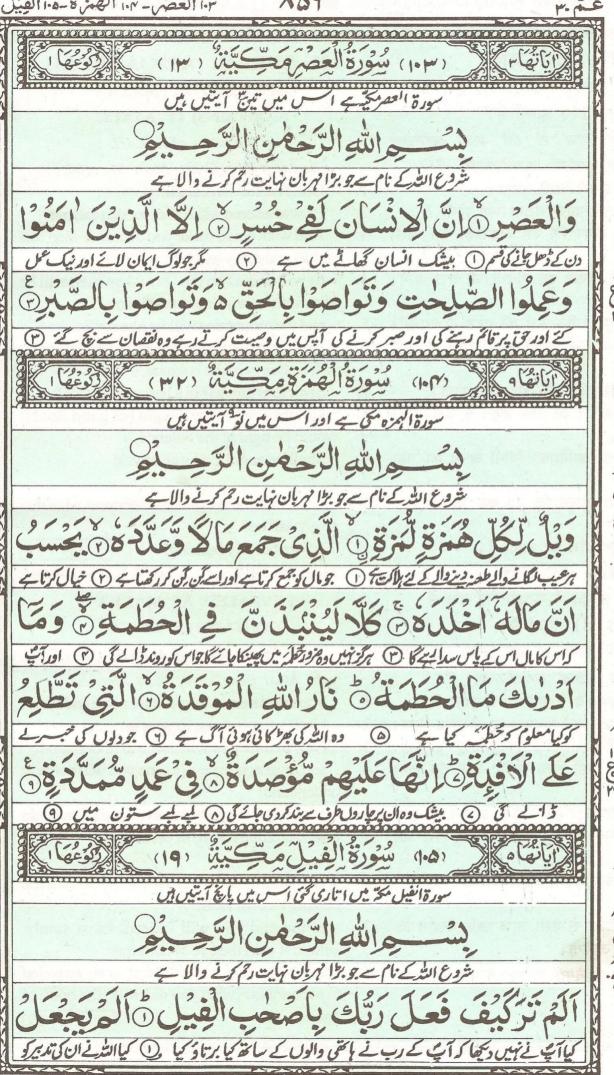
In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. You are obsessed by greed for more and more-
- 2. Until you go down to your graves!
- 3. Nay, in time you will come to understand!
- 4. and once again: nay, in time you will come to understand!
- Nay, if you could but understand (it) with an understanding (born) of certainty,
- 6. you would indeed, most surely, behold the blazing Fire (of Hell)!
- 7. In the end you will indeed, most surely, behold it with the eye of certainty:
- 8. and on that Day you will most surely be called to account for (what you did with) the boon of

منزل

ولي ين كے بادشا ہ نے ديجھا كركعبرنثرلف كى زبارت كولوگ خوب جاتے ہیں اپنے بہال ایک عبادت گاه کعیجیسی بنائی خوب سحاني اور برطرح كااس مي بنادّ نگار رکھا تاک تخلوق کے لئے كشش بو كريبان زيادت كو كونى نهين آياس برايك واقع السابواكسىعرب نيسي یے اس نقل کعبری ہے اولی کے کردی-اس پروہاں کاحاکم ۲۸ غصه بوااور إلقيول كالشكركر كعية لف برج طائى كرنے كوكرم كطرف روانه بواالترفي مترلف كقريب آن كي بيلي ي آسال ا برندول كے غول تے غول تجھيح، طر بول كاطرح لا كھول كى تعداد ين آئے ہراك كى يونج يں اك كت كراور دو بيخول بين اس طرح يرندول كے اس جھنٹ نے بھراؤ كا-أتشين كنكر تقرض يركوا وه بحوسا بوگيا تام كتباه دبرباد بوا-بط مرط الحقى كريث رأيا تقا-اس كان کواصحاب فیل کہا۔ اس سال کے آخري بارسردارسدالانبار امام المرسلين رحمة للعالمين ملكالم عليوسكم بب ابوتعرب مين يرسال عام الفيل ك نام في تاریخی بادگارین گیا-اتنے بڑے الشكرك مقابليك طاقت قراش كواوركم والول كونهس تقى - شهر کے لوگ اینے گورل کوبند کرکے تهام الترنان لور ي حفاظت فرماني اورتمام إلهي سميت بالقى والول كالشكربراد الوكيا-يروا تعطيسوى عدكام



103. अस

सूरह अस्र मक्का में उतारी गई इस में तीन (3) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के नाम से जो बझ मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. समय के ढल जाने की क्सम।
- 2. बेशक इन्सान घाटे में है।
- 3. मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और हक (सत्य) पर कायम रहने की और सब्र करने की आपस में वसीयत करते रहे वह नुक्सान से बच गये।

104. हो म ज़ह

सूरह हो म ज़ह मक्का में उतारी गई इस में नौ (9) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. हर ऐब लगाने वाले व्यंग करने वाले के लिये बड़ी ख़राबी है।
- 2. जो माल को जमा करता है और उसे गिन गिन कर रखता है।
- 3. ख़्याल करता है कि उसका माल उसके पास सदा रहेगा।
- 4. हर्गिज़ नहीं वह ज़रूर ''हु त मा'' में फेंका जायेगा जो उसको रौंद डालेगी।
- 5. आप को क्या मालूम कि हो त मा क्या है ?
- 6. वह अल्लाह की भड़काई हुई आग है।
- 7. जो दिलों की ख़बर ले डालेगी।
- 8. बेशक वह उन पर चारों तरफ से बंद कर दी जायेगी।
- 9. लम्बे लम्बे सुतून (स्तम्भ) में।

105. फील

सूरह फ़ील मक्का में उतारी गई इस में पाँच (5) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

1. क्या आपने नहीं देखा कि आपके 'रब' ने हाथी वालों के साथ क्या बरताव किया ?

103. SURAH: AL-ASR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 3 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Consider the flight of time!
- 2. Verily, man is bound to lose himself.-
- 3. unless he be of those who attain to faith, and do good works, and enjoin upon one another the keeping to truth, and enjoin upon one another patience in adversity.

 1 3 28

104. SURAH: AL-HUMAZAH

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 9 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Woe unto every slanderer, fault-finder!
- (Woe unto him) who amasses wealth and counts it (as a safe guard);
- 3. thinking that his wealth will make him live forever!
- 4. Nay, but (in the life to come such as) he shall indeed be abandoned to crushing torment!
- 5. And what could make you conceive what that crushing torment will be?
- 6. A fire kindled by ALLAH,
- 7. Which will rise over the (guilty) hearts;
- 8. Verily, it will close in upon them;
- 9. in endless columns!

1 9 29

105. SURAH: AL-FEEL

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 5 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

1. Are you not aware of how your Sustainer dealt with the Army of the Elephant?

والم يعى الشيف اصحاب فیل کے تھاری شکریر آسان سے سخفری بڑی بڑی جٹانیں ہیں برساتيں بلكه ان كوذليل كركے مارا-يجو لے جھوٹے برندے کی مٹی ى بلى تنكرى و في اور ينولس دباخ يوخ يور عائد ير يتماؤكرن لكي-التركيم اس باریک تکریس به طاقت متی كهائقي بريط اتو كنكرآريا ديكل كما بعراس كفكرى س السي بعيانك سوزش رهی مقی جس پر برط اس كے بدل كو كھوڑے فينسى سے سراديا-يىكالادابنادا محران سے کے سڑے ہونے س بدن سوکه کرکھائے ہوتے کھوے ى طرح بو يحت بودالشكرب نام ونشال بروا-

تفسيرسورة القريش

الم عرب مين قريش المقبيله بهي مشهورتها- تجارت معالم فهمى اسوجه لوجه اورشرافت س ان كابرًا نام تفا- اور يبي قبسله كعبه كامتو لل تفا- التركي كلم كابمسايرا ورفادم كعبريف سبب اس قبلے کے ایک ایک آدمي يع بت ي ما تي عقى _ جهال جائے إحقول إحوال ان اوالفالية عاديد ال ك تارق قا فلي ك طف طلع اور گری سالا ك طرف مات - لوك ال res in locure تخانف سے ان کا استقال



- 2. क्या अल्लाह ने उनकी तदबीर को मिट्टी में मिलाकर उनके दाव को नाकाम नहीं बना दिया ?
- 3. और अल्लाह ने उन पर परिन्दों के झुंड के झुंड भेजे।
- 4. परिन्दों ने उन पर ऐसे पत्थरों का पथराव किया जो पकी हुई मिट्टी से बने थे।
- 5. फिर उन्हें खाये हुए भूसे की तरह बर्बाद कर डाला।

106. कुरैश

सूरह कुरैश मक्का में उतारी गई इस में चार (4) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।"

- 1. कुरैश को सफर में उल्फत का सहारा दिया।
- 2. उनको जाड़े और गर्मी के सफर में बड़ी सहूलत हासिल रही।
- 3. उन पर लाज़िम है कि उनको इस काबा के मालिक की इबादत करनी चाहिए।
- 4. जिसने उनको भूख में खिलाया और उनको ख़ौफ से बचाकर अमन दिया।

107. माऊन

सूरह माऊन मक्का में उतारी गई इस में सात (7) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के वाम से जो बड़ा मेहरबाव बहुत बहुत रहम करवेवाला है।''

- 1. क्या तुमने उसको देखा नहीं जो इन्साफ के दिन को झुठलाता है ?
- 2. बस यह वही है जो यतीम को धक्का देता है।
- 3. और मिस्कीन को खाना नहीं खिलाता और किसी दूसरे को उसकी तरग़ीब (प्रोत्साहन) भी नहीं देता।
- 4. फिर उन नमाज़ियों के लिए भी ख़राबी है।
- 5. जो अपनी नमाज़ों से बेख़बर हैं।
- 6. जो दूसरों को दिखाने के लिए करते हैं।
- 7. और इस्तेमाल करने की चीज़ कोई उनसे थोड़ी देर के लिए मांगे तो भी नहीं देते।

- 2. Did HE not utterly confound their artful planning?
- Thus, HE let loose upon them great swarms of flying creatures-
- 4. which smote them with stone-hard blows of chastisement pre-ordained,
- 5. and caused them to become like a field of grain that has been eaten down to stubble.

1 5 30

106. SURAH: AL-QURAYSH

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 4 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. So that the Quraysh might remain secure,
 - 2. Secure in their winter and summer journeys;
 - Let them therefore worship the Sustainer of this Inviolable Place of Worship,
 - Who has given them food against hunger, and made them safe from danger.

107. SURAH: AL-MA'OON

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 7 AYATS.

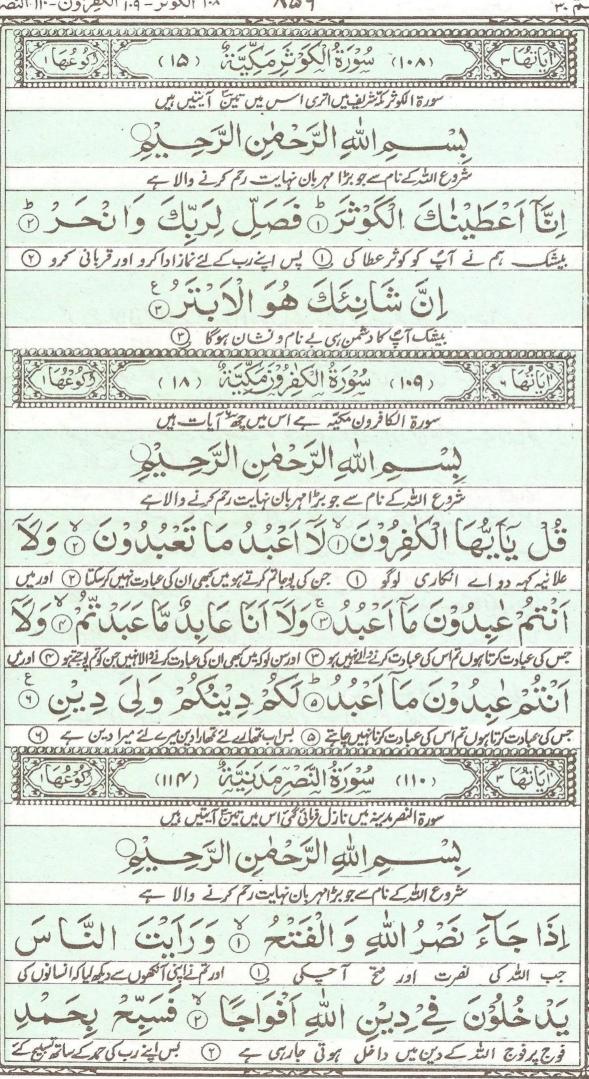
In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Have you ever considered (the kind of man) who gives the lie to all moral law?
- 2. Behold, it is this (kind of man) that thrusts the orphan away,
- 3. and feels no urge to feed the needy.
- 4. Woe, then, unto those praying ones-
- 5. Whose hearts from their prayer are remote-
- 6. those who want only to be seen and praised,
- 7. and deny all assistance (to their fellowmen)'

 1 7 32

کرتے۔ الڑائی جھگڑے میں قبائلی لوگ ارکوٹ کرتے۔ گرکھے کے متوتی ہونے
کے سبب قریش پر کوئی ہاتھ نہ ڈالتا۔ سب ان کا ادب کرتے جم کے ادب
سے چور ڈاکو، حلہ آور بھی یہاں نہ آتے ۔ اللہ نے اسی قبیلے میں سرکار دو عالم
صلی اللہ علیہ وسلم کو پیدا فرایا اللہ نے قریش کو اپنے احسانات یاد دلائے کہ
کعبہ شرایف کی عظمت کے سبب تم کو روزی عہت اور امن ماصل ہے اس گر
مے ماکس کی بندگی تم پر لازم ہے۔
کے ماکس کی بندگی تم پر لازم ہے۔
کرمیں تب یاس پڑوس سے مانگ لیتے ہیں جیسے دیگ، نیک، اچس، تیل
میاوڑا، سبل، کدال، سوئ، دھاگا، ڈول، رسی، بالٹی، شطر بخی وغیرہ ایک
باکمال مؤمن کی شان یہ ہے کہ مانکے والوں کو یہ چیزیں فوشی سے دایوے جو کا
باکمال مؤمن کی شان یہ ہے کہ مانکے والوں کو یہ چیزیں فوشی سے دایوے جو کا
کام ہوا لیکن جس کے اخلاق گرے ہوئے ہیں آخرت کا بقین نہیں، غیم ک
عرات نہیں کرتا ، نماز سے بے دھیاں ہے ، ایسے کو اتن توفیق بھی نہیں کہ کچھ
دیر کے لئے کس کا کام بکال دیوے کسی استعال کے لئے اپنی کوئی چیز دیوے
دیر کے لئے کسی کا کام بکال دیوے کسی استعال کے لئے اپنی کوئی چیز دیوے
دیر کے لئے کسی کا کام بکال دیوے کسی استعال کے لئے اپنی کوئی چیز دیوے
دیر انٹی معمولی چیز نہیں دے سکے تو ایسا آدی کس کام کام



سورة الكوثر

108. कौसर

सूरह कौसर मक्का में उतारी गई इस में तीन (3) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के बाम से जो बड़ा मेहरबाब बहुत बहुत रहम करवेवाला है।"

- 1. बेशक हमने आपको कौसर (स्वर्ग की एक नहर) प्रदान 1. की।
- 2. बेशक अपने 'रब' के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।
- 3. बेशक आपका दुश्मन ही बेनाम व निशान है।

109. काफिरून

सूरह काफिरून मक्का में उतारी गई इस में छः (6) आयतें हैं।

'शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. एलानिया (साफ़ साफ़) कह दो ऐ इन्कारी लोगो !
- 2. जिन की पूजा तुम करते हो मैं कभी उनकी इबादत नहीं कर सकता।
- 3. और मैं जिसकी इबादत करता हूँ तुम उसकी इबादत करने वाले नहीं हो।
- 4. और सुन लो कि मैं कभी उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनको तुम पूजते हो।
- 5. और मैं जिसकी इबादत करता हूँ तुम उसकी इबादत करना नहीं चाहते।
- 6. बस अब तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन है।

110. नस

सूरह नम्र मदीना में उतारी गई इस में तीन (3) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के बाम से जो बड़ा मेहरबाव बहत बहत रहम करवेवाला है।"

- 1. जब अल्लाह की मदद आई और कामयाबी मिली।
- 2. और तुमने अपनी आँखों से खुद देख लिया कि इन्सानों की फ़ौज पर फ़ौज अल्लाह के दीन में दाख़िल होती जा रही है।

108. SURAH: AL-KAUSAR

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 3 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- Behold, WE have bestowed upon you good in abundance;
- 2. Hence, pray unto your Sustainer (Alone), and sacrifice (unto HIM Alone).
- 3. Verily, he that hates you has indeed been out off (from all that is good)! 1 3 33

109. SURAH: AL-KAFEROON

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 6 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Say: "O you who deny the truth!
- 2. "I do not worship that which you worship,
- 3. "and neither do you worship that, which I worship."
- 4. "And I will not worship that, which you have (ever) worshipped,"
- 5. "and neither will you (ever) worship that which I worship."
- 6. "unto you, your moral law, and unto me, mine!"

110. SURAH: AN-NASR

REVEALED AT MADINA (CONTAINS) 3 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. When ALLAH's help comes, and victory,
- and you see people enter ALLAH's religion in hosts;

سورة الكوثر

وسل مدّمعظم بین نبی کریم خاتم المرسلین حضور صلی الله علیه وسلم لے بیٹے کا انتقا ہوا - کافریہ کہتے کہ اب ان کا کوئی بیٹ نہیں رہا ۔ ان کی تسل نہیں ہلے گی تو گم نام ہوجائیں گے ۔ الله جل جلالا نے حضور علیہ الفّلوۃ والسّلام کا آذکرہ زئی آسمان میں جاری فرایا اور اُسّت الیسی بنا دی کہ قیامت بک حورت مجبوب رب العمالمین صلی الله علیہ وسلم کے علم کی وارث ہے ۔ جو اعر اص کرنے والے کافر منے وہ لیے نام و نشان ہوگئے ۔ اور نام نامی "مصحت س صلی الله علیہ وسلم کائی طیتہ کے ساتھ سادے عالم میں گونے رہا ہے۔

تفسيرسُورة النَّصُر

مل اس سورة سرنف الله على الله المونے برحضور سرورِ عالم خاتم النبيتي صلى الله عليه وسلم اور اعلى درج ك صحابة كرام رضوان الله عليم الجمعين كواندازه بوگياكه آب سل الله عليه وسلم كاسفر آخرت اب سروع بوگا- دنيا بي جوكام آب كے ذمہ تھا وہ إورا بهوجكا-



منزل سورة الكهب ب الولب نام كا نخص حصور على الصلوة والتكام كالجحاتفار قوم كايودهرى اوربت مالدار تفامحدر سول الشر صلى الشيعلية والم كفلا اس في اوراس كى بوى أم جميل في وازور لكايا - اوربيت ستايا الشرف الولهب كوذلت كاموت مارا۔ کداکسس کی لاش کی پر اوے سبسكى نے اس كے مردے كو اتھایا نہیں۔ لکڑلوں سے ڈھکیل ار بابرلامش مينكوان كي- اور اس كى عورت ببت حسين مالدار متى كمرامس كالنجام يبهواك آخری وقت میں جلانے کا چ ایندس جنگل سے کاط ۲۹ لاتی جلانے کی تکڑی کا گھایانھ ی رس گلے میں افکاتے پھرتی یہ بھی بری موت مری اورالتےنے ال ك كلي مريش ك لي لعنت كى رسى دال دى-ول فلن كماكيالعي جو يحد كماني دیتاہے وہ تھانہیں بلکہ الطرنے اسے بنایا، دجور کا جامہ بینایا ہب ده چردکان دی ہے۔ كومهار المية ون مودار بوالم دانے اور محفلی کو بھاڑتا ہے ، تواس سے ناج اور درخت سکانے ہے ، ى، يىرانون كويماردتيام توا^ل سے جمرتے بہنے لگتے ہیں فلق کا لفظ قراك مي حسب ذيل مكرير أَجِكَا مِ إِنَّ اللَّهُ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوْلِي (٢) الانعام آيت عدد فَالِقُ الْاِصْبَاجِ (١) الانعام - 95 00

3. बस अपने 'रब' की हम्द (प्रशंसा) के साथ तसबीह किये जाओ और उससे मगफेरत (मुक्ति) की प्रार्थना करते रहो, बेशक वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है।

111. लहब

सूरह लहब मक्का में उतारी गई इस में पाँच (5) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबाब बहत बहत रहम करनेवाला है।"

- 1. अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह हलाक (बर्बाद) हो गया।
- 2. उसका माल और जो कुछ उसने कमाया उसके काम न आया।
- 3. वह भड़कती आग में जा पड़ेगा।
- 4. और उसकी औरत भी जो इंधन उठाये फिरती है।
- 5. उसकी गर्दन में खूब बटी हुई रस्सी पड़ी होगी।

112. इखलास

सूरह इख़लास मक्का में उतारी गई इस में चार (4) आयतें हैं।

''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. कह दो कि वह अल्लाह एक है अकेला है।
- 2. अल्लाह निराधार है उसको किसी की हाजत (ज़रूरत) नहीं।
- 3. न उसकी कोई औलाद है न वह किसी की औलाद है।
- 4. और उसके बराबर का कोई नहीं।

113. फलक

सूरह फ़लक़ मदीना में उतारी गई इस में पाँच (5) आयतें हैं।

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहत बहत रहम करनेवाला है।"

- 1. कह दो कि मैं सुबह के पैदा करने वाले रब की पनाह मांगता हूँ।
- 2. उसकी पैदा की हुई तमाम मखलूक़ (जानदार और बेजान) के शर (शरारत) से बचने के लिए।

3. extol your Sustainer's Limitless Glory, and praise HIM, and seek HIS forgiveness: for, behold, HE is ever an acceptor of Repentance. 1 3 35

111. SURAH: AL-LAHAB

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 5 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- May the hands (power) of Abu-Lahab perish, and doomed is he!
- 2. What will his wealth profit him, and all that he has gained?
- 3. (In the life to come) he shall have to endure a Fire fiercely glowing,
- 4. together with his wife, that carrier of evil tales,
- 5. (who bears) around her neck a rope of twisted strands!

 1 5 36

112. SURAH: AL-IKHLAAS

REVEALED AT MAKKA (CONTAINS) 4 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Say: "HE is the ONE, ALLAH:"
- 2. "ALLAH the Eternal, the Uncaused Cause of all Beings!"
- 3. "HE begets not, and neither is HE begotten;"
- 4. "and there is nothing that could be compared with HIM."

 1 4 37

113. SURAH: AL-FALAQ

REVEALED AT MADINA (CONTAINS) 5 AYATS.

(CONTAINS) 5 ATAIS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Say: "I seek refuge with the Sustainer of the rising dawn."
- 2. "From the evil of anything that HE has created."

منزك

و عصر جادو کرنے والیاں جو ڈونے دھا گے پرگانٹھ باندھ کر کھونگتی ہیں۔ ا

ملسورة الفلق اورسورة الناكسيد دونون سورتين قرائ مجيد كي آخرى
سورتين بين عادو، لون ون وطئ المرحة والمحتادة والمحتادة

مِنْ شَرِّعَاسِقِ إِذَا وَقَبَ ﴿ وَمِنْ شَرِّالَنَّقَتْتِ فِ انجری رات کے شرعہ جب وہ ممٹ رہا جائے ﴿ اور گنڈوں پر پیونجے وایوں کے شر الْعُقَالِ ﴿ وَمِنْ شَرِّحَاسِلِ إِذَا حَسَلَ ﴾ وَمِنْ شَرِّحَاسِلٍ إِذَا حَسَلَ ﴾

ے © اور حد کرنے والے کی شرے جب وہ صد کرے © الناتھا کی اور کا الناکس میک زیبانا کی کرنیانا کی کریکھا کے الناکس میک زیبانا

سورة التاس مدسندين ازاري كئ اس ميس جدا يتي بي

إسرم الله الرّخين الرّحيل

مشروع الشرك نام سے وبوا مران نہایت رحم كرنے والا ہے

التَّأْسِ ﴿ مِنْ شَرِّ الْوَسُواسِ مُ الْخَتَاسِ ﴿ الْخَتَاسِ ﴿ الَّذِبُ الْخَتَاسِ ﴿ الَّذِبُ الْمُ

معود كى يناه بن آيا ﴿ وسومه دال كرتيب جانوان تأس كِتْرَب بِحَدَى لايم الله المال كويا ﴿ بَولوكُون كِسينوكُ وَ و

يُوسُوسُ فِي صُنْ فِرِ التَّاسِ فَ مِنَ الْجِتَّةِ وَ التَّاسِ وَ

میں وسوسہ ڈالت ہے ﴿ بِعردہ جناتوں میں ہویا انسانوں میں سائے مرسے بچنے کے لئے میل اللری پناہ میں آیا ﴿

كَعَاءُ خَيْ الْقُرْالِي

اللَّهُ النِّلْ الْمُورِيَّ الْمُورِيُّ فَيْ الْمُورِيُّ الْمُورِيُّ فَيْ الْمُورِيِّ الْمُورِيِّ الْمُورِيِّ الْمُؤْرِيِّ الْمُورِيِّ الْمُؤْرِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِّ الْمُؤْرِيِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْرِيِيِّ الْمُؤْمِيِّ الْمُؤْمِيِيِّ الْمُؤْمِيِّ الْمُؤْمِيِيِيِّ الْمُؤْمِيِّ الْمُؤْمِيِّ الْمُؤْمِيِيِّ الْمُؤْمِي

862

عالم کے برورش کرنے والے میری بدرعا قبول فرما

3.

- 3. और अंधेरी रात के शर से जब वह सिमट कर छा जाये।
- 4. और गन्डों पर फूंकने वालियों के शर (उपद्रव) से।
- 5. और हसद (ईर्ष्या) करने वाले के शर से जब वह हसद करे।

114. नास

सूरह नास मदीना में उतारी गई इस में छः (6) आयतें हैं।

''शुरः अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत बहुत रहम करनेवाला है।''

- 1. कह दो मैं इन्सानों के रब की पनाह में आया।
- 2. में इन्सानों के बादशाह की पनाह में आया।
- 3. मैं तमाम इन्सानों के मअबूद (अल्लाह) की पनाह में आया।
- 4. वसवसा (बुरा ख़याल) डालकर छुप जाने वाले ख़न्नास (शैतानें) के शर (शरारत) से बचने के लिए मैंने अल्लाह का सहारा हासिल कर लिया।
- 5. जो लोगों के सीनों में वसवसा (बुरा खयाल, वहम) डालता है।
- 6. फिर वह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से उनके शर (उपद्रव) से बचने के लिए मैं अल्लाह की पनाह में आया।

- "and from the evil of black darkness whenever it descends."
- 4. "and from the evil of all human beings bent on occult endeavours,"
- 5. "and from the evil of the envious when he envies."

 1 5 38

114. SURAH: AN-NAAS

REVEALED AT MADINA (CONTAINS) 6 AYATS.

In the name of ALLAH,

the Most Beneficent, Most Merciful.

- 1. Say: "I seek refuge with the Sustainer of all mankind,"
- 2. "the Sovereign of men,"
- 3. "the ('Ilah') God of mankind"-
- 4. "from the evil of the whispering, elusive tempter,"
- 5. "who whispers in the hearts of men"-
- 6. "from all (temptations to evil by) invisible forces, as well as men."

 1 6 39

ख़त्मे कुरआन की दुआ

- ऐ अल्लाह ! मेरी कब्र में वहशत (घबराहट) और परेशानी को दूर फरमा। या अल्लाह कुरआने अज़ीम (महान) की बरकत और रहमत से मुझे नवाज़ दे। कुरआन को मेरे लिए रहनुमा और पेशवा (पथ प्रदर्शक) बना और साथ ही नूर और हिदायत का सबब और रहमत बना।
- इलाही! इस में से जो मैं भूल गया हूँ मुझे याद दिला दे और इस में से जो मैं नहीं जानता वह मुझको सिखा दे और रात दिन मुझे इस की तिलावत (पढ़ाई) नसीब फ़रमा और कियामत के दिन इसको मेरे लिए दलील बना। ऐ सारे संसार के पालने वाले मेरी यह दुआ क़बूल फ़रमा। (आमीन)

Ending Prayer of Holy Quran

- O ALLAH! keep me away from wildness, horror, and problem of grave, O ALLAH! Give me grace and blessing of the Holy Quran. Make the Quran a guide, a command, a mercy and a divine-light for me. O ALLAH! Remind me whatever I missed from this Holy Book and put in my knowledge which I could not be able to know.
- Give me opportunities of reading it day and night, and make it for me a final Verdict for the day of Judgement. O Sustainer of this whole world! accept this prayer, of mine. (Aameen)

حَهَاءُ حَيِّ الْقُرْانِ

اذستيخ الاسلام ابن تيميه رجمة الشعليه

صَلَقَ اللهُ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ وصَلَقَ رَسُولُمُ النَّيْ الْكَرِيمُ وَخَنُ عَلَى ذٰلِكَ مِنَ الشَّهِ لِيثَنَ رَبَّنَا تَقَبَّلُ مِنْكَ إِنَّكَ آنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَاللَّهُمَّ النُّكُمَّ النُّكُمِّ النُّكُمِّ النَّاكُمْ النَّي عَلَا وَلاَّ قَلَّا بِكُلِّ جُزُءِ مِنَ الْعُرُانِ جَرَاءً اللَّهُمُّ ارْئُ فَنَا بِالْاَلْفِ ٱلْفَتَّرَ قَابِالْبَاءِ بَرْكَةً قَابِالثَّاءِ تَوْبَةً وَبِالثَّاءِ ثَوْابًا وَّيَاكِمُ مُ ٢٤ كَالَّ وَيَاكُمُ مَا وَيَاكُمُ الْحَيْلَ الْحَيْلَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْحَدَكَاءَ وَبَالدَّاءِ رَحْمَةً وَبَالزَّاءِ رُكُوٰةً وَإِلسِّينِ سَعَادَةً وَإِلشِّينِ شِفَاءً وَبِالصَّادِصِهُ قَا وَبِالضَّادِ ضِياءً وَبِالطَّاءِ طراوةً وَبِالظَّاءِ ظَفْرًا وَبِالْعَيْنِ عِلْمًا وَبِالْعَيْنِ غِنَّى وَبِالْفَاءِ فَلَاحًا وَبِالْقَافِ فُرُبَةً وَبِالْكَافِ كْرَامَةً قَيَاللَّامِ لُطْفًا قَيِالْمِيمُ مَوْعِظَةً قَيِالنُّونِ نُورًا قَيَالُوا ووصَلَةً قَيالُهَا عِهِدايةً وَيِالْيَاءِ يَقِينًا. اللهُ مُو انْفَعْنَا بِالْقُرُانِ الْعَظِيمُ وَارْفَعُنَا بِاللَّهِ وَالدِّ كَرِالْحَكِيم وَتَقَبَّلْ مِنْ اقِرَاءَ تَنَا وَتَجَاوُزُعَنَامَا كَانَ فِي تِلاوَةِ الْقُرُانِ مِنْ خَطَا اِوْنِسُيَانِ اوْتَعَرُيْفِ كَلِمَاةٍ عَنُ مُواضِعِهَا ٱوْنَقَالِي يُمِ اوْتَأْخِيرِ آوُنِيادَةٍ آوُنُقَصًا إِن آوْتَأْوِيلٍ عَلَا عَبُرِمَا ٱنْزَلْتَ فَ عَلَيْهِ آوُرَيْبِ آوُشَافِي آوُسَمْ وِآوُسُو وِالْحَايِن آوُتَعِينيلِ عِنْكَ تِلاَّوَةِ الْقُرُانِ آوُكَ يُلِل سُرُعَةٍ آوُزَيْخِ لِسَانٍ آوُوَقُفٍ بِغَيْرِوقُونٍ آوُادُ غَامٍ بِغَيْرِمُكُ غِيمَ آوُاظُهَا دِبِغَيْرِ بَكَانٍ آوُ مَيِّ اوْنَشُكِ يُكِا وُهُنْزَةً إِوْجَنْمِ آواعُرابِ بِغَبْرِمَاكَتَبَ اوْقِلَّةِ رَغْبَةٍ وْرَهُبَ لَةٍ عِنْكَ أيَّاتِ الرَّحْيَرِ وَايَاتِ الْعَذَابِ فَاغْفِي لَنَا رُبَّنَا وَالْتُبْنَامَعُ الشَّاهِدِينَ ٥ اللَّهُمَّ يَوْسَ فُلُوْبَنَا بِالْقَرُّاكِ وَزَيِّنَ اَخْلَاقَنَابِالْقُرُاكِ وَنَجِّنَامِنَ النَّارِبِالْقُرُاكِ وَادْخِلْنَا فِي الْجَنَّةِ بِالْقُرُاكِ ٱللَّهُ مَّ الْجُعَلِ الْقُرُانَ لَنَا فِي الثُّنْ مَا قَرِينًا وَفِي الْقَبْرِمُ وَنِسَّا وَعَلَى الظَّرَاطِ نُورًا وَفِي الْجُنَّا وَ رَفِيْقًا وَمِنَ التَّارِسِ مُرَّا وَجِهَا بَّا وَإِلَى الْخَيْرَاتِ كُلِّهَا وَلِيْلًا فَاكْتَبُنَا عَلَى الشَّهَا مِوَالْذُفْنَا اَدَاءً إِلَا لَقَلْبِ وَاللِّسَانِ وَحُبِّ الْعَكْيْرِ وَالسَّعَادَةِ وَالْبَشَّارَةِ مِنَ الْإِيْمَانِ ٥ وَصَلَّى اللهُ تعال علا خير خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ مُظْهَرِ لُطْفِهِ وَرَحْمَةً لِخَلْقِهِ سَيِّدِ نَا مُحَمَّدٍ وَالِهِ وَاصْحَابِهِ اَجْمَعِيْنَ وَسَلَّمَ تَسُلِيًّا كَثِيرًا كَثِيرًا كَثِيرًا

ترجمه دُعائے مم القائران

التربلن اور عظمت والے نے ستجا کلام نازل فرایا۔ اور اس کے رسول جو بہت ہی وہت اور اس کے رسول جو بہت ہی وہت اور اکرام والے بنی ہیں انفول نے سیج سیج ہم تک بہنچادیا۔ اور ہم سب اس کے ستجا ہونے کی والا دیتے ہیں۔ اے ہمارے رب تواس قرآن کی تلاوت ہم سے قبول فرا۔ بے شک تو برط اسننے والا جاننے والا ہے۔

اے اللہ توہمیں قرآن مجید کے ہرایک حرف کے بدلے میں ایمان کی لذت اور مٹھاس عطافرہا۔ اور قرآن مجید کے ہرمقام کے ہرصتہ میں سے تلاوت کرنے کی ہم کوجز انے خیر عطافرا- اے اللہ (الف) کے پڑھنے پر ہمیں اُلفت عطافرا- اور (ب) کےسبب برکت عطافرما۔ اور (ت کے پرط صغے پر ہماری تو بہ تبول فرما۔ اور (ف) مے حرف پر ہمیں تواب عطا فسرما اور ج کے پرطصنے پر ہمیں جمال عط فرما۔ اور ح کی ادائیگی ہمیں حکمت عطا فرما-اور حرف فی برخصے پر ہمیں خرسے نواز دے- اور (ح) کا داکی یرہمیں دلیل عطاکر۔ اور حرف (فی کے پڑھنے پرہمیں ذکری توفیق عطافرما۔ اور حرف (س) پرہمیں اپنی رحمت سے نواز دے۔ اور (من) پرہمیں صاف تھراپن عطاکر۔اور (س) سے ہم میں سعادت مندی بیدافرما ۔ اور (ش کے پرط صنے بر شفاعطا فرما ۔ اور (ص پرہمیں ستیاصادق بنادے۔ اور (ض) سے ضیا دروشنی میں چلادے۔ اور (ط) سےطاوت اتازی عطافرما-اور (ظ) سے ظفر رکامیاب کردے-اور (ع) سے ہمیں علم عطی فرما-اور غ سے غنی رمال کی کشادگی عطافرہا۔اور (ف) سے فلاح اور فتح عطے فرما۔اور ق سے ہمیں قربت عطافرہا-اور (کھی سے ہمیں اکرام کی زندگی عطافرہا-اور (ل) سے ہم پرلطف وعنایت کی بارسش کر دے۔ اور (هر) سے بمیں موعظت راجی نصیحت) پر چلادے۔ اور (ن) سے ہم ہر اپنے نور کی کرنوں کا نزول فرما۔ اور (و) سے ہمیں اتحاد واتفاق کی برکت سے نواز ہے۔ اور (ھ) کے بدلے ہیں ہدایت پر ملا دے۔ اور قرآن مجید میں ہرجگہ تلاوت میں آئے ہوئے (ی) کی برکت سے تقین محکم عطافرا۔ ا سے اللہ ہمیں توعظمت والے قرآن مجید کی برکت سے خوب تقع عطافرما اور ہرآیت کی دانش مندار نصیحت سے ہارے درجات میں بگندی عطافرا۔ اورہا دے اس پر صف برصانے كوقول فرما تلاوت قرآن كے موقع برہم سے وخطا ہوگئى ہواور بھول جوك ہوتى ہواسىما رف قرآن پڑھتے وقت کسی لفظ میں اس کے تھ کانے سے بہت کوغلطی کی ہوتو اُسے معاف کردے۔

ياكون حرف آكے بڑھ ليايا آكے كا يتھے بڑھ ليا ياكونى ہم سے زياد ق ہوئى - يابڑھے ہيں لمی ہوئی وہ سب معاف فرا- اور تو تے ہو کلام نازل فرمایا اس کے خلاصہ بی فلطی کرنے ہے، کوبچاہے ہرطرح کے شک شبہ اور محول سے بہیں بچانے چاہے نامناسب آواز سے پڑھنے میں آگیا ہویا تلاوتِ قرآن میں ہم سے عجلت ہوگئ ہویا سستی کی ہویا کہیں تیزی سے گذر کئے ہوں یا پرطست وقت ہماری زبان لر کھواگئ ہو توالیس تمام بھول ہوک سے درگذر فرا۔ پرطھے وقت جہال کھرنے ك جكر بهو وبال من مظمر بيول يا الفاظ كو ملاكر برط صف ك بجائة بغير ملائة برط يرس ياكوني ايسا لفظ جوتونے بیان مذفراً یا ہوا ورہاری زبان سے محل محیا ہو تواس کھی ہم تھے سے معافی چاہتے ہیں۔ ياالته فران مجيدي كونى مدى جكرم وياتشديديا غيرتشديدى جكرم وياجزم موياكوتى زيرزبر اوربیش اس طرح برصلیا ہو ہو وہاں کھا ہوا نہو تواس جول کی بھی ہم تجھ سے معافی کے طلب گار ہیں رحمت کی آیات پڑھنے وقت بغیر رغبت کے پڑھ لیے ہوں اور عذاب کی آیات پڑھنے برہا اے دل میں تیرا ڈریدا ہونے کی کمی رہ گئ ہو تومعاف کرنے، اے ہا دے رب ہارے گنا ہول کومعاف فراورحت کی گوا ہی دینے والوں کی فہرست میں ہمارابھی نام لکھ ہے۔ یا السر ہما دوں کو قرآن مجیرے نورسے جم گاھے، ہما سے اخلاق میں قرآن مجیدی تعلیم سے زیزت پیدا فرا۔ یا اللہ قرآن مجیدی برکہ سے ہمیںآگ سے نجات عطافر ما اور قرآن مجید کے ذریعے ہمیں جنت میں داخلہ عطافر ما - اسالت دنیا کن ندگ یں ہا سے لئے قرآن مجید کو تھے ستعلق بنائے رکھنے کا ذریع بنا دے اور قبریس قرآن مجید کی برکت سے ہارے لے وحشت کو دُور کر دے۔ آخرت کاراستہ طے کرنے برہا ہے لئے قرآن مجید کوجنت میں ہارافیق بنا دے اورآگ سے بچنے ک ڈھال بنا دے اور تمام بھلائیوں کے ماصل کرنے میں قرآن مجید کو ہما دے لئے دلیل بنا دے اور تام مجلائیاں ہا دے نامزاعال میں درج فرما اور ہمیں توفیق دے کہ سیتے دل سے صافعت عری زبان سے خیرو المجلائي كى محبت سے اورا يمان كى بشارت سے م مالا مال ہومائيں اوراے الله تونے درود وسلام كاتحفظر مخركوعطا فرمايا بهج وتيرى مخلوق ميسب سے افضل وبہتر ہيں اورتير كطف عنايت كى م كوبيجان كرانے والعبي اورجن كوتام مخلوقات عالم كے لئے رحمت بناكر بيجا بين بوئم سب كيسردار بيں۔ اے الله توئم ب ك طرف سے درودوسلام كا بريج صرت محرصتى الطعليه وسلم يران ك ازواج مطبرات بران ك اولاد براوران کے تمام اصحابِ کرام کے بہنچاد سے سلام برسلام اوربہت بہت سلام۔ ٱللَّهُ مَّ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدِ بِعَدَدِكِلِّ حَرْفٍ

اس قرآن مجید کے قارنین سے گذارش ہے کابنی دعاؤں بی مترجم ونا شرکوا وران کے خاندان الوں کومی یا دوس۔

قرآن مجيد كى سورتيس اوران كمعانى

| | | | | | * | | | |
|--------------------------|----------|---------------------|-----------|----------------------|-----------|----------------------|----------|---|
| معتانی | نامسورة | معانی | نامسورة | معتانی | نامسورة | معانی | نامسورة | |
| سے اوپر، اونچا | الاعلى | جمع كرنا | الحثر | ملك روم | الرُّوم | شروع ، اوّل | | |
| حيامان وال قيامت | الغاشية | استحان | المتحنة | حكيم، نام نبي | لقمان | كاتے، بيل | البقرة | |
| صبح صادق | الفجر | قطار | الصّف | سجده | سجارة | اولا دعران | العمان | |
| شهر | البله | रक्ट्रीटिंश विकाशका | الجبعة | گروه الوليال بحق | الاحزاب | عورتين | النساء | |
| سورج | الشمس | دغابازمرد | المنافقون | قبيككانام | سيا | دسترخوال | | |
| رات | اليل | بارجيت كادن | التغابي | پياكمنےوالا | فاطي | پوپائے | انعام | |
| ول چره | الضعى | چھوڑ دیا | الظلاق | نام رسول التيم | يس | محشرى ايك بهارى كانا | الاعراف | |
| كيابم نيتحاراسينه | المشرح | פון ציו | التحريم | صفين باندهة وال | الصُّفَّت | اموال غيمت | الانقال | - |
| ښې کمول ديا | Here. | -160 | الملك | حرف مقطعات | ص | بى توبە دل كى توب | التوبة | - |
| انجير | الشين | قىم | القام | جي گروه | الزّمر | نام بيغير | يُونس | |
| خون کی پیسطی | العلق | ثابت وألاعذاج دهج | | 1 | | الورعليال المام | هود | 1 |
| قرر (والى رات) | القاد | سيرصيال ورج | المعارج | محم سجده | حوالسّجبا | ایک بی کاتام | يُوسف | |
| روش نشانی | البيينة | بيغيظ كانام | بنوح | رائے امشورہ | الشورى | 25 | رعل | |
| كبونجال | الزّلزال | مخلوق آگ والي جن | الجن | سونا،سنگار آرائش | الزخرف | | | |
| تير دور فوالے | العلايت | كرا اور هن والا | المزمل | دهوال | التخان | ایک شبر کانام | الحِجر | |
| | | لحاف اور صفوالا | | | | شهدی کمی | | - |
| كرتيوص | التكاثر | تيامت | القبامة | ر سیسانی علاقے | احقان | يعقوع كاولاد | بخاسرائل | |
| زمان | العصى | زماد | التص | آخرى رسول كانام | محتا | غار | الكعف | |
| عيبالكانےوالا | हर्दें। | بعيجي بوتى بوائي | المرسكات | جيتنا الكمولنا | الفتح | عمران كى بيشى كانام | | |
| | | خبر | | كوكفريان | الحُجُرات | حروف مقطعات | 23 | |
| | | فرشته وكافرول ك | | | | | | |
| | | | | | | چ کرنا | الحج | |
| | | تيورى چرطانا | | سينا كايبالا | الطور | ایمانوالے | المؤمنون | |
| منكر، ليايان | الكفروك | بيينا | التكوير | ستاره | النجو | روشتی | النوس | |
| مدد ، فتح | النصر | لتعينا | الانفظار | | القمر | حق وباطل مي فرق | | |
| الواب | | | التطفيف | يرًا مِريان، تام قدا | الرّحين | شاءكاتع | الشعراء | |
| بديا بوكران يك بندك كرنا | الإخلاص | پیدے جا نا | انشقاق | آيرك والاحادث | الواقعة | چيونځي | | |
| الماران الماران | الفاق | تاروں کے گھر | البروج | اويا | الحديد | قصة - واقعات | القصص | |
| لوگ | النّاس | رات كوآنے والاسارہ | الطارق | | | کروی | العنكبوت | - |
| | | | | | | | | - |

حضرت مولانا عبد الكرنيم وبإدبيك صاحب مترظلهم العالى سي تاليف سي تاليف و مران المنظلهم العالى المنظلهم العالى المنظلهم العالى المنظلهم العالى المنظلهم المنظ

قرآن مجید کے معانی کی عام فہم ترجمانی اوراُر دُو زبان کی سب سے آسان معانی والی تفسیر کے متعلق ممناز مایۃ نازعلمارحقّانی ورتبانی کے بیش بہا تا ترات وقیمتی محسینی کلمات میں سے جے شرختصرا قتباسات

مفكراسلام، من مخرم صفرت مولاناسير الوالحسن على فكرى ومتالت عليه مان فاظم دارالعلوم في العلايك في المسلوم والعلوم في المعنوب عمرامي من تلخيص

محتِ گرامی منزلت و داعی قبول و با توفیق ترجمان القرآن مولانا عبد الکومیم پار کیم صاحب زاده الله توفیقا و قولا الله و برکاته که السّکام علیکم و رحمته الله و برکاته ک

آپ کترجمہ میں در حقیقت اسی ترجمانی، اور لفظ کی جگہ لفظ رکھوانے کے بجائے آئیہ موائز کا بہت جگہ لمحاظ رکھا گیا ہے۔ اور وہ کم سے کم دعوت قفہ بچ قرآن کے میدان ہیں صروری ہے۔ اس لئے بی فضلارا ور حقیقت لیندوں نے آپ کو ترجمہ کے بجائے ترجمانی کا لفظ اس کے تعارف ہیں استعمال کرنے کا مشورہ دیا ہے وہ عالمانہ بھی ہے اور مخلصانہ بھی۔ اس کے باوجود رجمال تک اس قاصر کی نظر پڑی کہیں ترجمہ ہیں دجتنا حسر سامنے آیا ہے تو یف وانخراف اور زینے وضلال کا کوئی شائر اس عاجمز نے نہیں پایا۔ اس لئے اس ترجمہ کوتائی والمی اور خلوص وجذر ترجموت کی بنا پر مفیدا ور تا بل اشاعت یا یا۔ استر تعالیٰ قبولیت سے نوازے۔ اور زیادہ سے نیادہ اس سے نفع بہنے گئے۔

عاصفوالمظفره الماهم طابق ٢٠ جولان ١٩٩٣ء

۲- مفتر قرآن حفرت مولانا اخلاقی حسین قاسمی صاحب اداره رحمتِ عالم کروشیخ جاندلال کنوال بها ابنے ملفوظاتِ عالمیه میں ادستاد فرماتے هیں که:

پیش نظر تشریح القرآن تر آن کریم کی عام فہم ترجمت ان ہے۔
موصوف نے شاہ ولی السرمحرت دہلوئ کی تحریک جہاد بالقرآن کے مطابق اپنی دعوت کی بنیا دقرآن کریم کی بنیا دقرآن کریم کی ترجمانی کی خریک جہاد بالقرآن کے مطابق اپنی دعوت کی بنیا دقرآن کریم کی ترجمانی کی ضرورت پیش آئی۔
پیر دکھی ہے۔ اس وجہ سے موصوف کو اپنی دعوتی زبان کے اسلوب ہیں قرآن کریم کی ترجمانی کی ضرورت پیش آئی۔ اور پیش نظر ترجمانی و جو دیس آئی۔
مولان کے حکم پر اس فاکسار نے نظر تا نی کا فرض ادا کیا۔ اب اس ترجمانی میں انشار اللہ قائین کو کوئی المجھن پیش نہیں آئے گی۔
مولان کے حکم پر اس فاکسار نے نظر تا نی کا فرض ادا کیا۔ اب اس ترجمانی میں انشار اللہ قائین

عرب أردو انگزيزى كمشهورمولف اورعر في نفسيرُ تنخيمات مَعَانِي الْقُرْآنِ وَنَطُوَّرُ فَهُم ا عِنْدَالْفَرَةِ " كَظْيَم صَنَّف اوراليشيا كمشهورعالم ربّانى حضرت مولانا عيرالسّرعياس صاحب ندوى مرطلهُ معتمد تعليمات دارالعلوم ندوة العلماء لكهنؤ ، پروفيسرجامعة الملك عبدالعزيز مكة الكرمه

کے تاتیدی و علین گرانقدرمقدم کے چندالفاظ

الترتعالی کے جن توفیق یا فقر بندول نے اپنی مرگراں مایہ کو قرآن پاک کی فدمت میں صرف کیا ہے ان میں سے ایک ہمارے معاصر بزرگ داعی الی اللہ مولانا عبدالکریم پارکھ بھی ہیں عرصد دراز سے قرآن پاک کی تلاوت، مطالعہ اور ترجموں سے استفادہ اور اس کے معافی پر عور و خوش ان کامشغلامیات ہے۔ جہاں تک مجھے معلوم ہے وہ قرآن کے حافظ نہیں ہیں مگرائن سے اجھا مافظ قرآئ شکل سے ملے گا۔

موقع ومحل اورمناسبت سے اپنی تقریروں میں قرآن پاک سے اس طرح استدلال کرتے ہیں کہ معلوم ہوتا ہے کہ ان کی بوری تقریر قرآن پاک کی تفسیر ہے یہ قرآن پاک سے شغف اورکٹر تِ تلاوت و تد تبرکی علامت مولانا پار کی ہے نے برسہا برس کی عقر ریزی سے ایک تفسیر می ترجم مرتب فر بایا ۔ بؤسلم دونوں کے لئے رمہنا کے ہوایت بن سکے ۔ ان کے سامنے جو طبقہ ہے اس کی زبان اور محاولے میں جس سے قرآن کریم کے مفہوم کافی رسائی ماصل کرسکے مولانا نے قرآن پاک کی ترجمانی کی ہے اور بزرگان سلف کے طرز قہم سے تجاوز نہیں کیا ہے اور در کمی کی ہے ۔

داعی الی الشرمولانا عبد الکریم پاریکی کے تفسیری ترجے کو دیکھتے ہیں تو مجے نظر آتا ہے کا تفوی نے علی رسلف کی مکمل اثباع کی ہے۔ وقت اور ما حول اور مخاطبین کی ذہنیت اور ان کی بولی کوسلمنے

د کھ کرتفسیری ترجمہ مرتب فرمایا ہے۔

یوں انسان معصوم نہیں ہے خطاونسیان کائیتلا ہے گردیدہ ودانستہ کوئی بات قرآن کا طرف منسوب نہیں کے دورائستہ کوئی بات قرآن کی استیں کی دہنیت کو ایھی طرح سمجھ وقرآن کریم کے مفہوم کو طول نے کا ایا ب کوششش کی ہے۔

ترجمہ رواں سے اور زبان و بیان کے نیا ظے اس درج سلیس ہے کہ اگر کوئی مرف ترجمہ پڑھتا جائے تواس کو قرار پاک کی آیات کامفہوم علوم ہوجائے گا۔ ہیں نے اس کو جا بجاسے اور سنقلاً بان کا ترجمہ دوسرے ترجمول سے مقابلہ کرکے دیجھا تو مجھے کوئی قابلِ اعتراض بات نظر نہیں آئی بلکہ انھوں نے اس کی سلاست اور محاوروں کی ایسی رعایت رکھی کہ قرآنی مفہوم ہیں کوئی خلل مذیر ہے۔

ان کے ترجے سے انشاراللہ اُمّت کے بڑے گردہ کو فائدہ پہنچے گا اور خود مولا ناعبدالکریم پاریچے کو بھی آخرت کے لئے مفدس زا دِراہ فراہم ہوگئ ہے۔ اورامیدہے کہ وہ بزرگوں کے ہم زبان ہوکر کہسکیں گے

روز قیامت برکے باخویش دار زنام من نیز ماصری شوم تفییر قرآن در بغل سیدان محشرین برکوئی این ساتھ نامراع ال سے بوئے ہے میں بھی اپنے ساتھ قرآن کی تفییر لے کرما صربوں اسلان عالی ان کی آرزؤں کے مطابق اسمیں انعابات سے نوازے اور تفییری ترجمہ کو تبول عام بخشے ۔

عبدالله عباس ندوی

شب ۲۲ ردمضان المبارك ۱۳۱۵

۳- حضرت مولانا صوفی ظم بیرا حمد فاسمی منطله انعالی
مکتبه جهانگیریه چیتاکیمپ بمبئی مهم
اپنے پرفلوص آغاز کلام میں اس طرح رقم طراز ہیں کہ
بارگاہ لم بزل ہیں ہم سجدۃ شکراداکرتے ہیں کہ بتوفیق ابزدی حضرت علّا مکہ مولانا
عبد آلکومیم پیار ہیکھ صاحب داس ترجم قرآن کے مرصلہ سے نہایت کامیابی کے ساتھ گذر
گئے۔ ملتب اسلامیخ صوصًا اُدووالوں کی طرف سے صرت علّام خراج تحیین کے ستی ہیں۔ اللہ تعالیٰ
موصوف کو صناتِ دارین سے نواز ہے۔
علامہ موصوف نے الفاظ کی معنوبیت اور مطالب کی مفہ ومیت کو نہایت آسان اور عام فہم

زبان بین اسطرح بیان کیا ہے کسی بھی مقام پر ذہنی الجھاؤ نہیں ہوتا-بلکہ بعض آیات کی ترجمانی میں نطافت، بیان کی گہرائی اور گیرائی اس انداز کی ہے کہ اس مقام پر علامہ موصوف منفر داور در تربکیا نظر آتے ہیں۔

ملاحظ فرائیے اور فیصلہ بیجئے کہ کلماتِ قرآن کے مفہوم ومعانی کو باریک بین اور سادگ کے ساتھ بیان کرنے بین اور سادگ کے ساتھ بیان کرنے بی خوبصورت الفاظ کو برمحل استعمال کرنے کی وج سے قرآن کی پرترجمانی حقوق ترجمہ کا دائی کے ساتھ لذّت تفسیر سے بھی آشنا کرتی ہوئی نظراً تی ہے مثلاً:

وَمَاكَانَ عَطَاءُمُ تِلَا مَحْظُورًا ﴿ (٤٠-سورة بن اسرائیل آیت منا پاره ها)

سیرهاسا ده فظی ترجمریه ہے کہ تتھارے رب کی عطاکسی کے لئے بند بہیں " رجیسا کہ دیگر مترجم

صزات نے کیا ہے الیکن پارکیہ صاحب ترجم اور ترجمانی کی دوح کو الفاظ کے پیکر ہیں اس طرح سمونے کی

کوشش کرتے ہوئے کہ " آپ کے رب کی عطا اور خشش پر کوئی دوک نہیں لگاسکتا " قرآن پاک کا ندازِ

بیان اوراحکم الحاکمین کی قوت فیصلہ اُر دو پڑھے والے حضرات کے ذہن کے قریب س قدر خوبصورتی سے

کردیا ہے۔

سَ بَکُمُ اَعْلَمُ بِهَافِی نَفُوْسِکُو (۱۰-سورة بنی اسرائیل، آیت عظ پاره عط) اس آیت کی ترجمانی برغور فرمائیں در تم کیسے ہو، کیا ہو، تھا اے جی میں کیا ہے، تھا دارب خوب خوب جانتا ہے "

موصوف نے قرآن مفہوم اور عصمتِ انبیار دونوں باتوں کوس قدر عدہ اندازیں بیان کیا ہے۔ علامہ موصوف کے تام ترجمۂ قرآن ہیں بیہا وصاف دائر وسائر ہیں۔ اس کے باوجو داسلاف کی روشس سے کہیں بی انخراف نہیں کیا۔ افراط و تفریط سے دامن بچاتے ہوئے ہرقدم پر مقصدِ قرآن فہمی کی سہولت بیشِ نظر ہے۔

صرت مولانا عبدا لكويم پاديكه صاحب نے ترجم قرآن كومفير سے فير تراسان اورعام فيم بنانے كے لئے اپنی اس كاوٹس میں ممل طور برفلوس نیت كامظا ہرہ كرتے ہوئے ملك كے مقتدرا ورمع تبرعلما ركرام كونظر تانى كى دعوت دى جس میں صنوت مولانا مفتی ظفیر آلدین صاحب مفتی دارالعلوم دیوبن دمفتر قرآن صخرت مولانا آخلاق حسین قاسی " ادارہ رجمت عالم شخ جاندلال كنوال دہل ، حضرت مولانا حافظ هارون دہنسید صاحب صدیقی استاددارالعلوم

ندوة العلمارلكمونو ، حصرت ولاناسيد محقد وأضح روشيد صاحب ندوى استاذالتفير ندوة العلمارلكمونو - اورحضرت مولانا أبوا لمستعود صاحب امير شريت كرنائك وبهتم دارالعلوم سبيل الرشاد بنظور كسائة سائة اس ب مايه كوجمى يظيم ترين ذمه دارى مبرد فرمائى - سبيل الرشاد بنظور كسائة سائة اس ب مايه كوجمى ينظيم ترين ذمه دارى مبرد فرمائى -

٣- عالم رتبان حصرت مولانامفتى ظفيرالرين صاحب مفتاى مفتى دارالعلوم ديوبيند

اینے مبارک پیش نامی مندرج ذیل ارشادات تحریر فراتے ہیں کہ:

اختری مولانا عبدالکریم پاریکی صاحب ناگیور نے ترجم قرآن کیا۔ جن کوقرآن پاک سے خاص مناسبت ہے اور جن کامشن ہی قرآن پاک تنجیم و تدریس اوراس کی اشاعت ہے۔ اور مسلمانوں کوقرآن پاک اوراس کے منی ومطلب سے قریب کرنا ہے جس کی وصیت صنون شاہ ولی اللہ محدث دہوی نے اپنے مقدم " نستے الرجمٰن " یس فرائی تھی کہ" ہماقل بی کوقرآن پاک کا ترجم مزور پرطما یا جائے " مولانا عبدالکریم پاریکی صاحب نے اس اخرزمانہ یں عام فہم ترجم با ترجم ان کی صرورت شدت سے موس کی تاکہ ہم عمولی پڑھا لکھا اور جدید تعلیم یا فتر آسانی کے ساتھ قرآن کے مفہوم کواس کے ترجم سے جوسکے۔ اور اللہ کے کلام سے اسے بی مناسبت بیرا ہوجائے الحول نے ان کواس کے ترجم سے اور اور آیا سامنے رکھ کرا پنا ترجم ہو گور و فرکے ساتھ لکھنا شروع کیا۔ اور کی سال میں قرآن کا ترجم مکم تی ہوگیا۔

کوئی شبہ نہیں کہ ولانا یار کھے صاحب کا ترجمۂ قرآن چونکہ سات آٹھ مستند ترجموں کو سامنے رکھ کرکیا گیاہے۔اس لئے ترجمانی میں کوئی جھول نہیں ہے۔ زبان صاف تھری سلیس اور ہا محاورہ ہے۔ قرآن کا مفہوم بھی پورے طور پر ترجمہ سے عیاں ہے

ادر کوئی شبرنہیں کموصوف کے ترجم میں قرآن پاک کے فہوم کی ترجمانی بہت کیس اور گفته انداز میں آگئی ہے۔ راقتباس ادعنایت نامہ سرجادی الآخر طاع ایم

میری دعاہے کر قرآن مع ترجمہ جلد شائع ہو کرسا منے آجائے۔ یہ رب العالمین کی عنایت بے نہائے میے کرآپ سے اس نے عظیم فدمت لی۔ ماشاء اللہ قرآن پاک برآپ کی بہت گہری اور وسیع نگاہ ہے۔ اس فدمتِ گرامی کاجس قدر شکریر اواکیا جائے کم ہے۔ دافتیاس ازگرامی نامہ میر شعبان طاہم ا

التارتعال كانام كراس ترجم كوچيوادين - انشارالتار هبول خاص عام بوگا - اورآب كے لئے اجرِ عظيم كاباعث بوگا - اورآب كے لئے اجرِ عظيم كاباعث بوگا - التارتعال آب كى يگرال قدر فرمت قبول فرمائے اورآب كے حق ميں صدر قرم جاريہ بنادے - دافتياس ازاعز از نامہ ارشعبان مصلاح)

۵- حزت مولاناما فظ بارون رئيدما حب صريقى ايم-ك حديث وتفسير رياض يونيورسٹى - ناظرالمعهد المتوسط دارا لعلوم نادة العلماء لكهنو اين مفيداراء گرامى ميں ارشا وفر ماتے ہيں كم

اس بین شک نہیں کہ محرم پادیکھ صاحب اپنے مقصد میں بہت مدتک کامیاب ہیں۔ موصوف نے عوام کوزیا دہ سے زیادہ فائدہ پہنچانے کی غرض سے سہل سے ہل الفاظ لانے کا بڑا اہتمام کیا۔ مجھے اُمید ہے کہ ولانا کا بہ ترجمہ جس طرح دینداروں ہیں قبول ہے عن اللہ بھی قبول ہوگا۔ دہ رجب سالام

۱۹- عالم رتبانی وصاحب قلم حضرت مولانا محمدرالیع حسنی صاحب ندوی
استاذالتفسیر و مهتمه دارالعلوم ندون العلماء لکهنو
ایخ گرانقد تحسینی کلات بین ارشاد فرماتے بین که
محرم مولانا عبد الکویم پاریک صاحب علمی خدمت سے زیادہ دعوے اصلات
کی کررکھتے ہیں۔ اوراس ببہلوکو انفول نے ترجم ترآن مجید کی خدمت بین زیادہ لمحوظ رکھا ہے۔ یقیمتی بات
ہے۔ اوراس کے لئے محرم مولانا عبد الکویم پاریکھ صاحب مبارک باداور قدر دانی کے پورے
پورمستی ہیں۔ بین اپنی نوشی اور جذب قدر دانی بیش کرتا ہوں۔ اور قرآن مجید کی خدمت اوراس کے
مطالب کی اشاعت کو ان کی ظیم دین خدمت ہجتا ہوں۔ محرم پاریکھ صاحب نے کوشش کی ہے کہ
مستند علمار دین نے جو ترجم کئے ہیں وہ ان کے دائرے ہیں دہتے ہوتے ترجم کریں۔ اور ایراز دہ افتیا

المالام صاحب فقیم عرص حضرت مولانا قاصی مجاب الاسلام صاحب چیف قاضی مرکزی امارت شرعیه بهادواُر سه بهدواری شریف پشنه ایخ دُرِّ نایاب و بیش بها ارشا دات میں تخریر فرماتے ہیں کہ مولانا عبدا لکریم پاریکھ صاحب نے قرآن کریم کی کیانہ تشریح کے ذریع لوگوں کے دول سے شکوک وشبہات کے کانٹے نکالے ہیں۔

کے دلوں سے شکوک و شبہات کے کانٹے نکالے ہیں۔
مولاناموصوف کا ترجم قرآن مفاہیم کی الیسی تشریح ہے جوہرعام آدمی کی ہجو ہیں آجاتے۔
مولاناموصوف کا ترجم قرآن مفاہیم کی الیسی تشریح ہے جوہرعام آدمی کی ہجو ہیں آجاتے۔

عالم حقّاني حضرت مولا الحضل الرحمس قاسمي استاذحديث دارا لعلوم سبيل التكلام حيدراباد مرانقررانتاحيكات محيندمفيرجمك رمولانا ياريكه صاحب عرجمة قرآن بين) انداز تشريح برادلنشين روح افزا ہے۔اس كى دا ہيں مائل ہونے والے ہرخس وفاشاك كوفداوندكريم دور فرماكراس مقدس وعظم ترجمه کے قیصن ویر کات کوعام وتام کردے۔

(مارمی مومواع)

٩- حضرت علاممولانا الوالسعود احمصاحب بانى وناظم اعلى سبيل الرّشاد بنگلور- اميرشريعت كرنائك کے عنایت نامہ کی چنداہم تحریرات: حصرت ولانا عبد الكويم بالديه صاحب صدر مباستعليم القرآك تأبوركا ترجز قرآك میں نے جستہ جستہ دیکھا۔ یہ آیاتِ قرآنیہ کی سلیس ترجمانی اورآسان خلاصہ ہے۔ قرآنی مطالب کو سمجھنے کے لتے عامة المسلمين اس سے استفادہ كرسكتے ہيں۔

١٢ ردمضان المبادك و المرهمطابق ٢٠ إيريل ١٩٨٩ء)

١٠- جيدعالم رياني حصرت مولانا عبدالا حداز برى صاحب قاضى شريعت ماليكاؤن الين بيش بهااورميني على الحقائق ديباج مين ارشاد فرمات بي كه اب تك جننے بھى تراجم قرآن ياك بوتے ہيں وه سب عوام ك طح سے بہت ہى بلند ہيں ظاہر بات ہے کہ بازار کے رہنے والے تا جر کارفانے کے مزدور عام مال اور فل مجام اور دھوبی مستری اور سالاً كلى كوچوں میں رہتے والى كم برهمى كھى بردہ فين فوائين اور كالحول يونيوسٹيوں ميں زرتعليم عربي زبان الدلرك اورلوكيان انتراجم سے كماحة متفير تبي بوسكتے وعلم كاعلى بلنديوں بربي فرورت اس بات کی شدّت سے صوس کی جارہی تھی کر قرآن کا کوئی ایسا ترجمہ سائے آئے یا لایا جائے جس میں عوامی سطح کو مدنظر كصة بوت قرآن كى ترجانى كاحق اس طرح اداكرديا جائے كركبير كسى معى طرح اكا برعلمار حق كى شابراه سے ذر ہ برا بریمی انخواف نہو ہم مجھتے ہیں کراس کوشش میں مولاتا یا دیکھ صاحب صدفی كاميابين -

(اردمر الم 199 مطابق عرجب المرجب هاي امر

11- باوقارعا لم دین مولاناسیر مصطفے رفاعی جیلائی ندوی سجّادہ نشین خانوادہ قادریہ رفاعیہ بنگلور کے ارشادات عالیہ کے چندا قتباسات

رحضرت مولانا عبد الكريم باربيكه صاحب كترجم بي لفظاً ومعناً كون مِدّت بسندى كاشاتر نهي موكولانا عبد الكريم بيار ميكه صاحب كتراجم مي سنفاد بي ملك كم عناطاور بالميرت على ركام اورابل نظر مشائخ ني اس كا تصويب فرما ق بي -

اسلوب اورانداز تحریرالیا شائسته اور آسان تراور بهل بے کتعلیم یافته و کم تعلیم یافته دونوں اطبقات ترجمه سے ستفید بوسکتے ہیں۔ توضیحی تفییری نوٹس اتن معلومات افزاییں کہ وہ خود ایک معلومات خزار نہیں ۔

(يم ستم رسم 199 مي)

۱۲- مشہورعالم ربّانی مفتی احمر علی سعید صاحب دیوبنرکے قیمتی واہم مقدعی تلخیص کے چندا لفاظ ملاحظ ہوں میں نے آپ کے بھی ہوئے فرمہ کا بغور مطالعہ کیا آپ نے نیسی ہوئے فرمہ کا بغور مطالعہ کیا آپ نے نیسی ہوئے اس فرمہ کا بڑھ کر ہیں نے قابی کے زبان کو کھار دیا اور ترجمہ کو عام فہم بنا دیا۔

۱۳- زاہد فتق حضرت مولانا قاری محسر قاریم صاحب
خطیب وامام جامع مسجد پر مامیٹ مدواس کا دلنشیں وبُروقار تعادفی خلاصه
برسوں ک عرق ریزی کے بعد آپ نے فہم قرآن کو آسان اورعام کردیا۔ یہ دنیا تے انسانیت پر
آ نجناب کاگراں قدراحسان ہے۔ آپ کے آسان ترجم قرآن کا نسخ ہرگھریں ہونا صروری ہے۔ اس عظیم کا رنامہ
پر میں آپ کی خدمت میں مبارک با دبیش کرتا ہوں۔

نوط: اس کےعلاوہ اور بھی متعدد علمار کرام اور اعلی سطے کے مفتیان شرع متین کی آرار ، مقدمات متبعد کی اور قبادی المحدلی روس کے ہیں۔ لیکن قرآن مجید کی اس جل کے ساتھ اگران سب کوشائع کیا گیا تومزید کی صفحات کا اصافہ کرنا ہوگا۔ اس سے برزرگان دین فیمشورہ دیا کرایک تا بچی کشکل میں ہما علمار رتبانی کے جمرے ، آرار وفتا وی کیجا طور برالگ سے بھے کرکے شائع کے جائیں۔ اللے کے مقبول بندل کے حکم پرعل کرتے ہوئے " تشدریہ الفران پر علماء رتبانی کی تحقیقی نظر "نامی ایک بک لیٹ الگ سے شائع کردی گئی ہے۔

جنفين مزيرتفصيلات مطلوب بول وه تشريح القرآن برعلمار رباني كالحقيقى نظر "نامى كتاب كوملاحظ فرماليس -

ایک مخلصاند ایبل مرف ایت انقران کاس تصبیح برالحمد لشیطار کوام نے ایجا فاصروت مرف کیا ہے۔ اور فقل مقدموں کے ساتھ این آزار وشوروں سے بی فوازا مرف کیا ہے۔ اور فقل مقدموں کے ساتھ این آزار وشوروں سے بی فوازا ہے جن کی گئی سے جن کی گئی سے جن کی گئی سے مرف سے گذرتے ہی تقریباً ۱۲۰۱۸ افراد نے نہایت تحور وانہاک سے حرف بحرف برف کو سے بیرسی ہم بند سے برنی ہم ہی تقریباً ۱۲۰۱۸ افراد نے نہایت تحور وانہاک سے جوف برنی ایس کو بیا ہے۔ اہلا ایک موضلا کا امکان رہ تا ہے۔ اہلا قاری سے عاجزا نگر کا رسی سے موسل کی ایس میں ہوئے کا موسل کی بوضلا کا اسی کے وقت کی میں کے وقت کی میں کے وقت کی میں کے حرف النظر اللہ کا سے کو جزائے خروطا فرائے۔

مادم العلاء : تاصرخال فی میں میں کو جزائے خروطا فرائے۔

مادم العلاء : تاصرخال

مينيجنگ ڏائريکٹر

فرین المحمد اله دمانکیت جامع مسجل دهای المندالا ۱۹۰۰ منیامحل اله دمانکیت جامع مسجل دهای الا۱۹۰۰ فون افس ، ۱۳۲۵ ۹۳۸ ۲۳۲۵۳۸ بهاش: ۲۳۲۵۳۸



Fire Brigade Road, Lakadganj NAGPUR - 440 008

Phones : Office : 48035, 42788

FAX NO-0712-45529 Resi. : 42307. 42836

المرام ال

بِهُ سِيمِ الله الرَّحِ عَنِ الوَّ حَدِيدِةِ معزت الكرم عنى ما حب وثاغى شرميت وارا لقعناء ما سيكا و ل مهاراسترُ

استلامعيكم ودحمة التدويزكان



مور امر دوش را معظم اله هد دور ما دو

Date 28/12/94 كيائرمات برعلا ، دن ومعتيان شرع تشين ا چيل والانام داكري، كامام منظام علوا مد معلويان مغر - دونا ميدالاكن على مدى دامت بالتم الخ مدة العلى الليوك ما زوظفيها ادر لا ويران برا بدر الله المراس المراس المراس و بدر المراس معرس و برود المراس المر وكوره فواتين اور بال اسكل طليرهاب شكل مهوات اوراض وَزَن بيدك مال عدري كرشكك نهايت بي مسل اوراسان زيان بير .. وَزَن بيده ك م على قرورول به بعران مورة ومن اخل والمرافع والمراح و المراح والمرافع والمر مل کورے قرآن میرک اس ترحال ما صور فرام کو فیے جوز لای ہار، اب یک ب ک آوں وطرب ، طار کار ک تجمع مار، ان ک آوار برات اے م المعمل وروي ورايد ما ورود من ورود من ورود من ورود من ورود و المعدد ورود من المعدد ورود و المعدد ورود من المعدد كاوري في التكليما فاحد ك الاز خارات . برد العدارة خادروال مرادت - بر زان الحصل ا في الى مار ويع بعالى اط في الني تل على الم وين على الم ويد عدد عد で、大きのはは、いいははできるないと、かいい、さいがはは、こいいいできるいはいはいはいはい 5-17-1 وفق دارالعاد داست Car manie (ماكسه نوى ك توشفط فريم) بس الله الدعن الدعي حولدونى: يتران يك جى كاتب في موال برنذكره كرا بي بيل بى اس ك كالمون نكل يك بي يوسر على له وحددلا في انبون ف باصابط اس ترع برصود على دست تعرف في كران خود استخار في بي مجم الاست صورت تعاوي ادر يتع البند صورت مولان محدد الحن ندس مره كرة عول كوسا عن وكر كونظر فا في كادر بست عَبُول يم كاتْ بِيثْ ك بولانا اطلاق مين قامى د بوى زيد مرور يى نظرتان كى من كومفرد شاه عبدالقا ود بول ك ترجه صفاص مناسبت ب يوهز -ولانا محدرا يع صاحب مذهر بتم وادالعلوم ندوة العلماد كصنون أصوكها اودد سرع علاد في على -ا فيري عفرت مولاناميدابوا عن ملى عروى واحت برياتم في بنور مطالع كيا اورام فراي كومرا بالدروي كالقباد فراياب مسك بعد إس وجدى اشلعت بس بقام كل مند بكرش كاشا ترسي ا فى بني د باريون ان لام مبول بوك سے حالى بنيں موتا الدنسان موکّب من الخطأ والنسيان آب اس ترجر كو نواداس كانام ترعا ف ركس باتفرى الوآل بعد خوز شائع كرسكتي الشاد المديرة جمقيل مواله مويم دى ميد يديد ميد والله والمع المواداس كانام ترعا فركس بالنفر الما المعربية الم منى داد اسدم داديد البوابك الجواب يح بشاناطومهم الجواب يجح صي الرفل الدمن كفيلمارطن تحدطا سرحفا الشرعن

Mr. Abdul Ghafoor Parekh

Is available on Website & YouTube
With Discourses, Dars e Qur'an,
Lectures, Seminars, Classes

Alongwith other speakers like

Abdul Majid Parekh, Dr. Shaheena Khatib,

Hamid Quraishi, Salahuddin Shaikh & others

Also world renown Scholar

Padmabhushan Maulana Abdul Karim Parekh

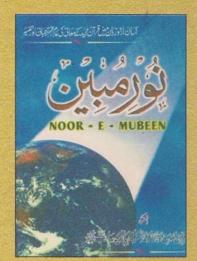
On

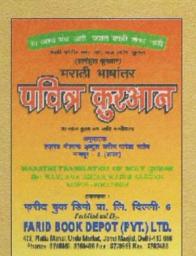
Website: www.iqramedia.net
www.functional-arabic.com

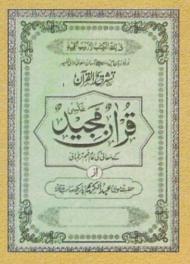
YouTube.com: Explore-Quran

Arabic Classes on: www.understandguran.com

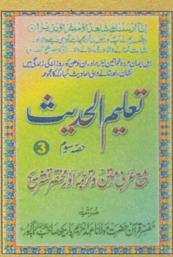
مُفِيِّرُولَانَ مُولِانَا عِبُالِكُرِيُّمُ كِلِيرِ كِيصَاحِبُ حجع دوسرى تصنيفات وتاليفات

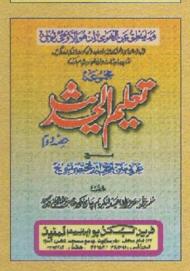


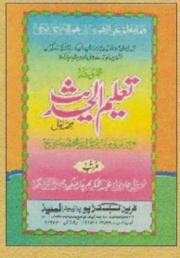


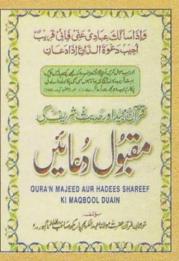


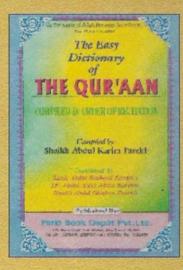


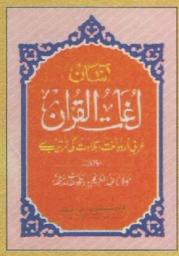


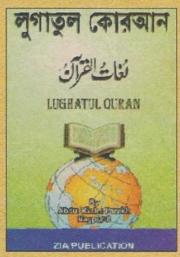














فرين بكرپو (پرائيويك) لمئيد

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
e_mail: farid@ndf.vsnl.net.in@farid_export@hotmail.com
Website: www.faridexport.com@www.faridbook.com